 ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ 

गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

गुरमति ज्ञान

(धर्म प्रचार कमेटी का मासिक पत्र)

सावन-भादों, संवत् नानकशाही ५४१
अगस्त 2009 वर्ष २ अंक १२

संपादक — सिमरजीत सिंह, *एम. ए, एम. एम. सी.*
सहायक संपादक — सुरिंदर सिंह निमाणा, *एम. ए (हिंदी, पंजाबी), बी. एड.*

चंदा

सालाना (देश)	१० रुपये
आजीवन (देश)	१०० रुपये
सालाना (विदेश)	२५० रुपये
प्रति कापी	३ रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव
धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर-१४३००६

फोन : 0183-2553956-57-58-59



एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग 303
संपादन विभाग 304

फैक्स : 0183-2553919

e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

पत्रिका प्राप्त न होने पर तथा चंदे आदि सम्बंधी जानकारी प्राप्त करने के लिए मोबाइल नं. 98886-38618 पर भी सम्पर्क किया जा सकता है।

विषय-सूची

गुरबाणी विचार

भादुइ भरमि भुलाणीआ दूजै लगा हेतु ॥
लख सीगार बणाइआ कारजि नाही केतु ॥
जितु दिनि देह बिनससी तितु वेलै कहसनि प्रेतु ॥
पकड़ि चलाइनि दूत जम किसै न देनी भेतु ॥
छडि खड़ोते खिनै माहि जिन सिउ लगा हेतु ॥
हथ मरोड़ै तनु कपे सिआहहु होआ सेतु ॥
जेहा बीजै सो लुणै करमा संदड़ा खेतु ॥
नानक प्रभ सरणागती चरण बोहिथ प्रभ देतु ॥
से भादुइ नरकि न पाईअहि गुरु रखण वाला हेतु ॥७॥ *(पन्ना १३४)*

पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी बारह माहा माझ की इस पावन पउड़ी में भादों महीने के प्राकृतिक अथवा भूमंडलीय वातावरण के प्रसंग में प्रभु-नाम से बिछुड़े मनुष्य-मात्र की विवशता की स्थिति एवं अमूल्य मानवी जीवन को व्यर्थ गंवाने के रुझान को बताते हुए इस जीवन रूपी अवसर में प्रभु-नाम का सहारा लेने के लिए मार्गदर्शन करते हैं।

सतिगुरु जी फरमान करते हैं कि जैसे भादों के महीने में मनुष्य बहुत घबरा जाता है (क्योंकि गर्मी एवं नमी भारी हो जाने से हुंमस हो जाती है), वैसे ही प्रभु मालिक के अतिरिक्त दूसरा भाव सांसारिक मोह/लगाव होने से घबरा जाना स्वाभाविक है। भादों के महीने में जैसे कोई स्त्री लाख श्रृंगार भी करे तो वह व्यर्थ ही जाता है, इसी तरह मनुष्य-मात्र द्वारा धारण की जाने वाली बाहरी सजावट किसी काम नहीं आती भाव जीवन की सफलता अर्थपूर्ण कार्य करने में है।

मृत्यु का दृष्टांत देते हुए सतिगुरु जी कथन करते हैं कि जिस दिन यह शरीर खत्म हो गया तो तुझे प्रेत कहा/समझा जाएगा। यम के संदेशी तुझे लेकर चल पड़ेंगे और अन्य किसी को इसका पता नहीं लगने देंगे। जब शरीर में से भंवरा निकल गया तो क्षण में ही जीव, तेरे परिवार वाले तुझे छोड़ खड़े होंगे जिनसे तूने अत्यंत लगाव बनाये रखा। तब तू हाथ मलेगा, तेरा शरीर कठिन स्थिति में होगा, घबराहट से तेरा रंग काले से सफेद हो जाएगा। लेकिन इसका कोई लाभ नहीं होगा, क्योंकि जैसा कोई बोता है वैसा काटता है। यह मातलोक, यह धरती कर्म किये जाने योग्य खेत ही तो है।

गुरु जी अंत में मार्ग बख्शिश करते हुए फरमान करते हैं कि जो मनुष्य प्रभु की शरण में आ जाते हैं गुरु उनको प्रभु-नाम रूपी जहाज में बिठा लेते हैं। वे भादों महीने की नर्क तुल्य स्थिति से गुरु से संबंध बनने के कारण बच जाते हैं।





मोर्चा गुरु का बाग

अट्ठारहवीं सदी में सिंघों को अपने घर-घाट छोड़ कर जंगलों एवं रेगिस्तानों में रैण-बसेरा करना पड़ा और दो घल्लूघारे, जो मुगल और अफगान अत्याचारियों द्वारा बरताये, झेलने पड़े। बर्तानवी अथवा अंग्रेज शासन-काल में सिक्ख पंथ को सरकारी अत्याचार और इसकी अत्यंत शातिर नीतियों-हथकंडों का मुंह मोड़ने के लिए मोर्चे लगाने पड़े। सिक्ख पंथ द्वारा इस शासन-काल में लगाये गए कई मोर्चों में गुरु के बाग का मोर्चा एक है जिसका वृत्तांत सिक्ख पंथ के अडिग सिदक, ऊंचे साहस, दृढ़ता, सहनशीलता एवं सहन्शक्ति का एक विस्मयजनक उदाहरण है। यह भी स्मरण रहे कि सिक्ख पंथ को अधिकतर मोर्चे अपने जान से प्रिय गुरुद्वारों में अवैध बाहरी हस्तक्षेप हटाने हेतु लगाने पड़े। सिक्ख पंथ अपनी धार्मिक स्वतंत्रता में किसी बाहरी हस्तक्षेप को कैसे स्वीकार कर सकता है? ऐसा हस्तक्षेप होने पर उस द्वारा विरोध करना स्वाभाविक तथा अति आवश्यक भी है।

वक्त की बर्तानवी सरकार कुछ समय से सिक्ख पंथ की विजयों से आंतरिक रूप से हताश थी। गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब के बहुत बड़े मोर्चे के अतिरिक्त चाबियों के मोर्चे और कृपाण के मोर्चे में भी पंथ की जीत हुई थी। अंग्रेजी सरकार अंदर से अभी भी महंतशाही का पक्ष ले रही थी।

गुरु का बाग जिला अमृतसर की तहसील अजनाला में स्थित है। यह श्री अमृतसर नगर से लगभग २४ किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यहां श्री गुरु अरजन देव जी तथा श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी की पावन स्मृति में दो यादगारी ऐतिहासिक गुरुद्वारे हैं।

सिक्ख शासन-काल से उपक्षेत्र की संगत ने एक उदासी को इस गुरुद्वारा साहिब का महंत नियुक्त किया हुआ था। गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर अथवा अकाली लहर महंतशाही से गुरुद्वारा साहिबान को इसलिए स्वतंत्र कराने के लिए प्रतिबद्ध एवं दृढ़ संकल्प थी चूंकि समय के चक्र में मूल रूप में महंतों में अनेकों प्रकार के बिगाड़ आ चुके थे। *"सचहु ओरै सभु को उपरि सचु आचारु"* के अनुगामी सिक्ख पंथ का उनके नापाक कब्जे से गुरुद्वारा साहिब को मुक्त कराना परम आवश्यक था।

गुरु के बाग के पवित्र गुरुद्वारा साहिब का तत्कालीन महंत था सुंदर दास। संगत को इसके आचरण के विरुद्ध कई शिकायतें थीं, जो उन्होंने प्रतिनिधि सिक्ख संस्था शिरोमणि कमेटी को भेजीं। शिरोमणि कमेटी ने जिला कमेटी के प्रधान की महंत सुंदर दास को समझाने तथा सही रास्ते पर लाने के लिए ड्यूटी लगाई। इसके अनुरूप ३१ जनवरी, १९२१ को एक विशाल पंथक एकत्रता में महंत सुंदर दास को कहा गया कि वह किसी स्त्री के साथ अवैध संबंध न रखे, एक स्त्री के साथ शादी करके गृहस्थी-जीवन बसर करे, अमृत छक कर सिंघ सज जाए और शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अधीन होकर सेवा निभाये। इसने बाहरी तौर पर अथवा अस्थायी रूप से तो इन शर्तों को स्वीकार किया परंतु ननकाणा साहिब के साके के बाद पंथ की जीत से घबराई अंग्रेजी सरकार द्वारा अकालियों पर सख्ती का दौर चलाये जाने पर यह पुन: बिगड़ बैठा और गुरुद्वारा साहिब के पावन परिसर में आचरण से गिरी क्रियाएं करने लगा। २३ अगस्त, १९२१ को शिरोमणि कमेटी ने जत्था भेज कर गुरुद्वारा साहिब का प्रबंध पंथक अधिकार अधीन ले लिया। महंत ने व्यक्तिगत कब्जा पुन: कायम करने के लिये सरकार से सहायता मांगी जो समय की नजाकत समझते बेशक सरकार ने न दी, परंतु पंथ के विरुद्ध अंदरूनी

मंदभावना न मिटाई।

८ अगस्त, १९२२ को लंगर के लिए एक सूखी कीकर (पेड़) छांट कर लाने के संबंध में ९ अगस्त, १९२२ को पांच अकालियों को गिरफ्तार किया गया और महंत सुंदर दास से विनय-पत्र लिखवा लिया कि इन अकालियों ने मेरी लकड़ी चोरी की है। उसी दिन इन पांचों अकालियों को ६-६ महीने के कारावास और ५०-५० रुपये जुर्माने का दण्ड लगाया गया। आगे के लिए लकड़ी को काटने से रोकने के लिए पुलिस गार्ड बिठा दी गई। अकाली अपने घर के लिए तो लकड़ी काट नहीं रहे थे, यह तो लोकाई की सेवा हेतु कार्य था, इसलिए अकालियों द्वारा यह जारी रखा गया। सरकार ने और अधिक कठोरता बतति हुए बल-प्रयोग के लिए पुलिस के साथ-साथ सेना का भी प्रयोग किया। यहां तक कि संगत द्वारा घर से गुरु-घर के लिए लायी जा रही रसद को भी रोका गया, जो धार्मिक मामलों में सीध हस्तक्षेप था। भूख से बेहाल ३६ अकालियों को डंडों के साथ पीट कर बेसुध किया तो सारे पंथ में रोष की लहर का फैलना स्वाभाविक था।

२६ अगस्त, १९२२ को श्री अकाल तख्त साहिब के हजूर जुड़ी हजारों सिक्ख संगत की उपस्थिति में ९ अकाली अगुओं ने अपनी गिरफ्तारियां दीं और एकत्रता ने सरकार को स्पष्ट कहा कि यदि वह अपने दमन-चक्र से न रुकी तो सत्याग्रह आरंभ किया जाएगा। श्री अमृतसर जिले के ६० सिंघों के जत्थे ने श्री अकाल तख्त साहिब पर भारी संगत की उपस्थिति में पूर्णत: शांतमयी रहने का प्रण लेते हुए गुरु के बाग की तरफ प्रस्थान किया। इन को पुलिस ने अत्यंत निर्ममता से पीट-पीट कर बेहाल कर लिया।

इससे सत्यागृह का जोश सारे पंथ में फैलना स्वाभाविक था। उस समय संयुक्त पंजाब के कई भागों से सिक्खों के जत्थे १००-१०० की संख्या में इस सत्यागृह में शामिल होने आये और अथाह पुलिस जब्र पूर्णत: शांतमयी रह कर सहा। हरेक सिक्ख मात्र 'वाहिगुरु-वाहिगुरु' का उच्चारण करता था। इन घायलों को शिरोमणि कमेटी बसों में डालकर श्री अमृतसर लाती जहां संगत विभिन्न मजहबों के सभी भेदभाव भुला कर इनकी मरहम-पट्टी तथा सेवा करती। १३ दिन के पश्चात सरकार अथवा पुलिस बल ने हाथ खड़े कर दिये, परंतु सरकार को कोई रास्ता नहीं मिल रहा था। गुरु के बाग के साथ लगती जमीन पर पुलिस बल बिठाये हुए थे।

अच्छी प्रतिष्ठा रखने वाले रईस सर गंगाराम ने सरकार की मुश्किल का समाधान किया। उन्होंने जमीन महंत से ठेके पर ले ली और सरकार को लिख दिया कि मुझे पुलिस की जरूरत नहीं और न ही मैं सिंघों को गुरु के लंगर के लिए लकड़ियां काटने से रोकूंगा। यह मेरी ओर से गुरु-घर के लिए तुच्छ सेवा होगी। इस प्रकार पंथ द्वारा दी गई अद्वितीय कुर्बानियों द्वारा गुरु के बाग का यह मोर्चा सर किया गया। सरकार को सभी कैदी बिना शर्त रिहा करके अपनी पराजय स्वीकार करनी पड़ी।

मोर्चे की संपूर्णता अथवा इसका निपटारा बेशक नवंबर महीने में हुआ परंतु चूंकि यह अगस्त महीने में अपने शिखर पर था, इसलिए पंथ इसी को मोर्चे की ऐतिहासिक स्मृति के तौर पर अपने मन-मस्तक में लिये हुए है। इस मोर्चे में सरकारी जब्र को अत्यंत सब्र से सहन् करते हुए सिक्खों को कई कौमी नेताओं तथा ईसाई धर्म के माननीय व्यक्ति सी. एफ. ऐडरीऊज ने अपनी आंखों से देखा और सिक्ख पंथ की सहनशक्ति से विशेष रूप से प्रभावित हुए। कौमी अगुओं ने इसकी एक विस्तृत रिपोर्ट भी तैयार की। इस मोर्चे में ५६०५ सिंघ गिरफ्तार हुए जिनमें ३५ शिरोमणि कमेटी सदस्य और २०० सैनिक पेंशनर भी शामिल थे।

ऐसा लासानी सिक्ख इतिहास सिक्खों को वर्तमान में भी हक-सच के लिए डट जाने और अन्याय की स्थिति में उनको सत्यवादी सत्यागृह की प्रेरणा देता है।



श्री गुरु ग्रंथ साहिब की संपादना

*-डॉ. जगजीत कौर**

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी हरेक मनुष्य-मात्र के ऐसे सर्वसांझे गुरु हैं। हर व्यक्ति अपने आप को इस पावन ग्रंथ के सन्मुख अर्पण करके इसे अपने रहनुमा के रूप में स्वीकार करता है। तभी तो ये समग्र मानवता की रहनुमाई करने वाले, सुख, सुकून और मानसिक संतोष व तृप्ति का अनंत स्रोत हैं। दसवें पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने सन् १६९९ में खालसा पंथ की साजना की और सन् १७०८ ई में नांदेड़ (महाराष्ट्र) में परम ज्योति में विलीन होने से पूर्व सभी सिक्खों को हुक्म दिया :

आगिआ भई अकाल की तबै चलायो पंथ।
सभ सिक्खन को हुकम है गुरू मानीओ ग्रंथ।
गुरू ग्रंथ को मानीओ प्रगट गुरां की देह।
जो प्रभ को मिलबो चहै खोज सबद मै लेह।
(पंथ प्रकाश)

भाई प्रहलाद सिंघ जी का 'हुकमनामा', ज्ञानी ज्ञान सिंघ जी का 'पंथ प्रकाश' और भाई कुइर सिंघ जी का 'गुर बिलास पातशाही दसवीं' ग्रंथ इस आदेश की साख भरते हैं। गुरु यह इसलिए है कि यह अनन्त, अपार, असीम पारब्रह्म अकाल पुरख वाहिगुरु जी की सिफ्तो-सलाह-पूर्ण सच्ची बाणी है। यह शब्द रूप पारब्रहम का स्वरूप है, साक्षात निरंकार है— *"वाहु वाहु बाणी निरंकार है . . . ॥"* तथा *"बाणी गुरू गुरू है बाणी . . . ॥"* निरंकार सदैव स्थिर, सत्य, शाश्वत, सत्य-सनातन सत्ता है। शब्द-ब्रह्म के तमाम दिव्य गुण बाणी में समाहित हैं जो दिव्य गुण सनातन काल तक रंग, वर्ण, सम्प्रदाय, देश, काल, लिंग, नस्ल-भेद से मुक्त समग्र मानवता को चिरकाल तक कल्याण का मार्ग प्रशस्त करते रहेंगे और उसे स्थायी सुख-सुकून और शान्ति प्रदान करते रहेंगे। आध्यात्म की परम उच्च अवस्था को प्राप्त 'प्रत्यक्ष हरि' स्वरूप गुरु साहिबान के ये पावन उपदेश गुरु-रूप ही हैं, इसलिए वर्तमान में यही सिक्खों के गुरु हैं। सिक्ख देहधारी गुरु को नहीं मानता। वह शीश झुकाता है तो केवल एक मात्र पारब्रहम स्वरूप शब्द-गुरु श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी को ही।

इस पुनीत ग्रंथ का संपादन सिक्ख धर्म-गुरु परम्परा के पांचवें गुरु श्री गुरु अरजन देव जी ने किया। श्री अमृतसर में रामसर सरोवर के किनारे एकांत एवं शांत स्थल पर बैठ कर इसका लेखन-कार्य विद्वान लिखारी एवं कवि भाई गुरदास जी द्वारा करवाया गया। वर्षों के कठिन श्रम, लगन और अति उच्च कोटि की संपादन-कला व सक्षमता के फलस्वरूप इसका संपादन-कार्य सन् १६०४ ई में सम्पूर्ण हुआ। इसका सम्पूर्ण होने का काल इसकी मूल प्रति पर लिखा हैं—'सूची पत्र पोथी का ततकरा रागां दा संवत् १६६१ मिति भादों वदी एकम् पोथी लिखि पहुंचे।' भाई बन्नो जी को लाहौर भेजा गया। वे पोथी साहिब की जिल्द बंधवा कर लाए। १७ भादों संवत् १६६१ को अति श्रद्धा, उत्साह और शब्द-गायन के साथ नगर कीर्तन के रूप में श्री रामसर से श्री हरिमंदर साहिब में लाकर इसका प्रकाश किया गया। गुरु साहिब पूरे रास्ते नंगे

**१८०१-सी, मिशन कम्पाऊंड, निकट सेंट मेरीज़ अकादमी, सहारनपुर-२४७००१, मो: ९२१९८-७५४३९*

पैर चंवर झुलाते हुए आए। बाबा बुड्ढा जी ने इसे अपने शीश पर विराजमान रखा। बाबा बुड्ढा जी को ग्रंथी थापा गया। उन्होंने प्रकाश किया, हुकमनामा लिया : *"संता के कारजि आपि खलोइआ हरि कंमु करावणि आइआ राम ॥"* शुरू में इसे 'पोथी साहिब' कहा गया, बाद में 'बीड़ साहिब' और जब दसवें पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अपने पिता-गुरु श्री गुरु तेग बहादर जी की बाणी (५९ शबद और ५७ श्लोक) को इसमें सम्मिलित किया और भाई मनी सिंघ जी द्वारा इसका पुन: लेखन करवाते हुए इसका संपादन किया तो इस बाणी-संग्रह को "श्री ग्रंथ साहिब" कहा जाने लगा और जब दसवें पिता का आदेश हुआ *"गुरू मानीओ ग्रंथ"* तो गुरु-पद पर प्रतिष्ठित यह "श्री गुरु ग्रंथ साहिब" के रूप में पूज्य हुआ।

श्री गुरु अरजन देव जी ने जब संपादन किया तो उन्होंने अपने से पूर्व चार गुरु साहिबान की रची बाणी और अपनी बाणी को इसमें स्थान दिया। श्री गुरु नानक देव जी के ९७३ शबद और श्लोक हैं। आरंभ में दिया गया मूल-मंत्र और प्रात: कालीन पठनीय बाणी 'जपु जी' साहिब श्री गुरु नानक देव जी द्वारा रचित है। श्री गुरु अंगद देव जी द्वारा रचित केवल ६३ श्लोक हैं। तृतीय गुरु श्री गुरु अमरदास जी के ८९१ शबद और श्लोक हैं। चौथी पातशाही श्री गुरु रामदास जी के ६४४ शबद और श्लोक हैं। श्री गुरु अरजन देव जी के २३१३ शबद और श्लोक हैं। श्री गुरु अरजन देव जी ने १२वीं सदी से १७वीं सदी के बीच के १५ प्रमुख भक्तों—भक्त कबीर जी, भक्त नामदेव जी, भक्त रविदास जी, भक्त त्रिलोचन जी, भक्त बेणी जी, भक्त सधना जी, भक्त सैण जी, भक्त भीखन जी, भक्त धंना जी, भक्त पीपा जी, भक्त जैदेव जी, भक्त परमानंद जी, शेख फरीद जी, भक्त रामानंद जी, भक्त सूरदास जी (केवल एक तुक *"छाडि मन हरि बिमुखन को संगु"*) की बाणी इसमें दर्ज की है। ११ भट्ट बाणीकार—भट्ट कल सहार जी, भट्ट जालप जी, भट्ट कीरत जी, भट्ट सल जी, भट्ट भल जी, भट्ट नल जी, भट्ट मथरा जी, भट्ट गयंद जी, भट्ट भिखा जी, भट्ट बल जी, भट्ट हरिबंस जी की बाणी इसमें दर्ज है। इसके अलावा गुरु-प्रेमियों की बाणी भी दर्ज है।

पंचम गुरदेव जी ने अत्यन्त कठोर परिश्रम, प्यार और लगन से इस संकलन को तैयार किया जो मूल रूप में ९७४ पन्ना का बना था, जो आदि रूप में आज भी करतारपुर में सुरक्षित है। मूल पाण्डुलिपि को लेकर जब कई प्रकार के विवाद खड़े किये गए तो शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की धर्म प्रचार कमेटी की सलाहकार समिति ने तीन विद्वानों की एक सब-कमेटी बनाई और इसके तीन सदस्य—भाई जोध सिंघ, प्रो. तेजा सिंघ और प्रो. गंगा सिंघ, ८ अक्तूबर सन् १९४५ को करतारपुर गए और इन्होंने जांच करने के बाद अपनी रिपोर्ट पेश की। डॉ. भाई जोध सिंघ ने 'करतारपुरी बीड़ दे दर्शन' और 'प्राचीन बीड़ां बारे' अपनी पुस्तक में बताया कि करतारपुर में सुरक्षित रखी बीड़ ही श्री गुरु अरजन देव जी द्वारा संपादित मूल प्रति है। इसमें बीच-बीच में गुरु जी के अपने हस्तलिखित 'सुधु कीचै' और 'सुधु' जैसे शब्द लिखे हैं। इसमें रागमाला भी है जिसका अंक ९७४वां है और इसका अंक ततकरा 'विषय-सूची' में भी दिया हुआ है। संपूर्ण बाणी एक ही हाथ की लिखाई है। अत: निर्णय लिया गया कि यह ९७४ पन्नों की आदि बीड़ ही मूल, आदि अथवा प्रारंभिक पाण्डुलिपि है।

संपादन की पृष्ठभूमि

प्रश्न उठता है कि श्री गुरु अरजन देव

जी ने बाणी का संपादन क्यों किया? इस सम्बंध में कुछ इतिहासकार जिनमें 'तवारीख गुरू खालसा' के लेखक ज्ञानी ज्ञान सिंघ प्रमुख हैं, गुरबाणी-संकलन का कारण गुरु-दरबार में सिक्खों द्वारा की गई प्रार्थना मानते हैं। 'बंसावलीनामा' के लेखक पुरातन इतिहासकार स. केसर सिंघ छिब्बर, गुरु जी के बड़े भाई प्रिथीचंद द्वारा कच्ची बाणी की रचना और श्री गुरु नानक देव जी के साथ मिलाकर गायन-कीर्तन करना मानते हैं। उनका कहना है कि प्रिथीचंद जो गुरु जी का बड़ा भाई था और गुरगद्दी न मिलने के कारण नाराज था, उसका बेटा मेहरबान कविता करने लगा था। अंत में 'नानक' नाम जोड़ देता था। जब यह बात गुरु जी के पास पहुंची तो उन्होंने श्री गुरु नानक देव जी की बाणी अलग चुन कर उसका संग्रह तैयार करने की बात सोची। "मेहरबान पुत्र प्रिथिए दा कवीसरी करे पारसी हिंदवी सहसक्रित नाले गुरमुखी पढ़े। तिन भी बाणी बहुत बनाई। भोग गुरु नानक जी दा ही पाई ॥९०॥"

तब गुरु जी ने सारी बाणी एक जगह एकत्र करके 'पोथी' रूप में भाई गुरदास जी से लिखवाई। इससे पहले वे अपनी रची बाणी विद्वान लिखारी संतराम, हरीआ, सुखा और मंसाराम से लिखवाया करते थे। उसे भी इसी संग्रह में लिखवाया :

साहिब लगे उचारन रसना ते शबदबाणी।
चार लिखारी तीर आपने ठहराए।
लिखदे जाण साहिब जो कुझ रसनी अलाए।
भाई संतराम ते हरीआ, सुखा, मनसाराम।
लिखदे जाण साहिब जो करन बखाण ॥३१॥

लेकिन यह विचार कुछ जचता नहीं है। पंचम पातशाह जैसे जागरूक, उत्साही, गुरु नानक पातशाह के सिक्ख पंथ के सिद्धांतों पर कठोरता से पहरा देने वाले, जिन सिद्धांतों की रक्षा के लिए उन्होंने अपने जीवन तक का घोर अमानुषिक कष्ट सहन करते हुए बलिदान कर दिया, शहादत का जाम कबूल किया, क्या केवल सिक्खों के कहने पर ही उन्हें सिद्धांतमूलक बाणी संभालने की प्रेरणा आई होगी? यह प्रेरणा तो उनमें जन्मजात थी--*"तै जनमत ब्रहम पछाणिओ ॥"* उनमें यह प्रेरणा ज्योति रूप से ही थी और वे जानते थे कि मौखिक रूप से इस महत विरासत के गुम हो जाने की आशंका है। अत: जहां उन्होंने निर्मल पंथ के हित अनेक परोपकार किए वहीं उन्होंने अपने परम श्रद्धालु सिक्खों, आने वाली पीढ़ियों और कुल मानवता के लिए कल्याणकारी पूर्व गुरु साहिबान और भक्त साहिबान की बाणी मूल रूप में बिना किसी मिलावट के सुरक्षित रखने की आवश्यकता समझी। बाणी-संकलन की आवश्यकता गुरु साहिब जी की अपनी ही अन्त:प्रेरणा का प्रतिरूप है।

सिक्ख धर्म चिंतन का मूल गुरु-शबद है। गुरु ही शबद है और शबद ही गुरु है। शबद में प्रभु का नाम निहित है और परमात्मा का नाम-सुमिरन, प्रभु की कीर्ति, यश-गायन, सिक्ख धर्म का मूल चिंतन है। गायन सच्ची बाणी का करना है जो गुरु के मुख से निकली है, क्योंकि यही धुर की बाणी है जिसका सीधा सम्बंध अकाल पुरख वाहिगुरु जी पारब्रह्म परमात्मा के चिंतन से जुड़ा है। आदि श्री गुरु नानक देव जी की सुरति जब अकाल पुरख वाहिगुरु जी के चरणों से जुड़ जाती थी तो उस एकरसता की अवस्था में उनके नेत्र मुंद जाते थे, बाणी का स्फुरण होता था और तब भाई मरदाना जी को आदेश होता—"मरदानिआ! रबाब बजा, बाणी आई आ।" बाणी धुर से उतर कर आती थी, प्रभु के दर से बख्शिश होती थी। श्री गुरु नानक देव जी ने अकाल पुरख के दर से स्फुरण-शक्ति की बख्शिश प्राप्त की और समूची

मानवता में बांट दी। गहन तल्लीनता की अवस्था में गुरु साहिब के मधुर कंठ से जो बोल निसृत होते, जो शबद गुंजायमान होते वे मानव-मन तो क्या उड़ते पंखेरुओं के भी पर बांध लेते। उड़ते पक्षी पंख समेट कर घोंसलों में टिक जाते। चलायमान जीव-जन्तु, पशु भी स्थिर हो जाते, चल-अचल तत्व गतिरुद्ध हो जाते, बहते सागर, नदियों-नालों के प्रवाह, शांत स्थिर हो जाते। संपूर्ण वातावरण मधुमय हो उठता; असीम शान्ति, शीतलता, स्थिरता, सुकून का माहौल बन जाता। जीव-मात्र को ऐसा आत्मसुख, सुकून और शान्ति प्रदान करने वाला मधुर अमृत रस क्या यूं ही बिखेर दिया जाने वाला था? इसीलिए श्री गुरु अरजन देव जी जो स्वयं उच्च कोटि के कोमल हृदय बाणीकार थे, गायन, रचनाकार, राग-नाद संगीत के पारखू बाणीकार, सुलभ कोमलता से सम्पन्न, भावुक हृदय प्रभु-भक्त थे, वे श्री गुरु नानक देव जी और पूर्व गुरु साहिबान की रची बाणी की महानता को पहचानते थे। पारखू रचनाकार गुरदेव ने इस महत खजाने को बांध कर एवं संभाल कर रखने का निश्चय किया।

स्वयं श्री गुरु नानक देव जी की भी ऐसी इच्छा थी। अपनी २२ वर्ष की कठिन यात्राओं के दौरान गुरु जी ने देखा था—*"अंधी रयति गिआन विहूणी . . . ॥"* धर्म के सत्य-स्वरूप को न समझ पाने के कारण कलह-क्लेश, दुख-संताप से जल रही है। काजी, मुल्लां, योगी, ब्राह्मण, पंडित, पुरोहित, जनसाधारण को ठग रहे हैं, उन्हें व्यर्थ की बाहरी कर्मकाण्डी क्रियाओं, पाखण्ड, वहम् और अन्धविश्वास में उलझा कर धन ऐंठ रहे हैं। झूठ और पाखण्ड का बोलबाला है। श्री गुरु नानक देव जी ने ऐसे धर्म का स्वरूप लोगों के सामने रखा जो सत्य और अन्त:शुद्धि पर आधारित था और व्यर्थ के पुरोहितवाद, ब्राह्मणी कर्मकाण्ड, योगियों की हठयोग की कठिन क्रियाओं और मुल्ला-मौलवियों के तंत्र-मंत्र, जादू-टोने, धागे-ताबीज, मढ़ी-मठ-मजार की पूजा, शमशान-जागरण, भूत-प्रेत आदि की पूजा जैसे पाखण्डों से दूर कुल मानवता को शान्ति, प्यार, एक ईश्वरवाद और भाव सत्य आचरण का संदेश देने वाला था। उच्चतम मानव मूल्यों पर आधारित इस निर्मल पंथ के सिद्धांत बाणी में ही निहित थे। इसलिए इस बाणी को बांध कर, संभाल कर रखने की जरूरत थी। इसी आशय से श्री गुरु नानक देव जी ने अपने जीवन काल में ही श्री गुरु अंगद देव जी को गुरु-पद पर प्रतिष्ठित कर गुरु-परम्परा चलाई *"सहि टिका दितोसु जीवदै ॥"* वे चाहते थे *"लंगरु चलै गुर सबदि"* और *"मति गुर आतम देव दी खड़गि जोरि पराकुइ जीअ दै ॥"* श्री गुरु अंगद देव जी के हाथ में ज्ञान की खड़ग पकड़ाई थी, निर्मल विवेक बुद्धि सम्पन्न आत्मज्ञान दिया था, जिसके सहारे शबद-सुरति के मेल से प्रभु की सिफ्तो-सलाह करते हुए अमृत-रस का पान करें। लोक-परलोक का जीवन सुखमय बनाने का आधार बाणी ही तो थी। गुरु साहिब जी ने जनसाधारण के लिए सरल, सहज पंजाबी भाषा में अन्य बोलियों व भाषाओं के मिश्रित रूप से बाणी-रचना की और गुरु-पद देते हुए श्री गुरु नानक देव जी ने पोथी भी दी, जिसमें उनकी अपनी रची बाणी के साथ भक्तों की बाणी का भी संकलन था।

श्री गुरु अंगद देव जी ने भी इस महत पोथी को संभाल कर रखने के उद्देश्य से ही गुरमुखी लिपि को सुनियोजित रूप दिया, पंजाबी भाषा की लिखित को प्रोत्साहित किया। श्री गुरु नानक देव जी की जन्मसाखी लिखवाई जिसे पुरातन जन्मसाखी कहा जाता है, जिससे गुरु

नानक-पंथ की बाणी, जीवन और मौलिक सिद्धांत जीवित रहे। स्वयं तृतीय गुरदेव श्री गुरु अमरदास जी ने अमृत बाणी की रचना भी की और सिक्खों को आदेश दिया :

आवहु सिक्ख सतिगुरू के पिआरिहो गावहु सची बाणी ॥

बाणी त गावहु गुरू केरी बाणीआ सिरि बाणी ॥

(पन्ना ९२०)

गुरु द्वारा बख्शी गई बाणी ही सच्ची बाणी है, सिरमौर बाणी है, इसी का गायन करो। संकेत स्पष्ट है कि गुरु के सिक्खों ने सच्ची बाणी का ही गायन करना है, इसलिए इस सच्ची बाणी को संभाल कर रखना लाज़मी था।

कच्ची बाणी का जो सवाल है, उस समय बहुत से कच्चे कवियों, डेरेदारों ने भी कविता रचना आरंभ कर दी थी। श्री गुरु नानक देव जी के नाम के साथ जोड़ कर कच्ची बाणी रची जा रही थी इसलिए श्री गुरु अरजन देव जी ने जरूरी समझा कि गुरु नानक-पंथ द्वारा रची शुद्ध निर्मल बाणी का संकलन तैयार किया जाये।

इस समय तक नानक-नाम-लेवा सिक्ख श्रद्धालुओं की संख्या भी दिन-प्रतिदिन बढ़ रही थी। संपूर्ण भारत के पूर्व-पश्चिम-उत्तर-दक्षिण भागों के अलावा काबुल, कंधार, ईरान, अफगानिस्तान; उधर लंका, चीन, तिब्बत आदि सुदूर देशों व क्षेत्रों में भी श्रद्धालुओं की संख्या बढ़ रही थी। उन तक नानक-पंथ के मूल सिद्धांतों को मौलिक रूप में पहुंचाना केवल बाणी के संकलन द्वारा ही संभव था। गुरु साहिबान द्वारा रची बाणी को बहुत समय तक मौखिक रूप से याद रख पाना भी तो कठिन था। ऐसे में मनघड़त शबदों के मिलगोभा होने की संभावना थी, इसलिए आने वाली पीढ़ियों तक बाणी अपने मूल रूप में पहुंच सके, बाणी का संकलन जरूरी था।

श्री गुरु अरजन देव जी के समय तक सिक्ख मत, हिंदू, जैन, बौद्ध, मुस्लिम धर्म और नाथों अथवा सिद्धों के सिद्धांत-चिंतन से अलग अपना एक न्यारा विलक्षण स्वरूप कायम कर चुका था। संगत-पंगत लंगर के साथ-साथ इसके पास अपना एक न्यारा और विलक्षण धर्म-साहित्य, पुरोहितवाद से अलग धर्म-सिद्धांतों की व्याख्या करने वाला धर्म-साहित्य होना भी तो जरूरी था। हिन्दुओं के वेद, पुराण, स्मृति आदि ग्रंथ थे। मुस्लिम धर्म के पास कुरान था। सिक्खों के लिये भी अपने धर्म-ग्रंथ की आवश्यकता थी। इसी आवश्यकता को दृष्टि में रखते हुए जागरूक उत्साही प्रचारक गुरदेव जी ने बाणी का संकलन तैयार किया।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की बाणी इकट्ठी कैसे की गई ? बाणी-प्राप्ति के स्रोतों के विषय को लेकर भी विभिन्न मत प्रस्तुत किए गए। सबसे पहले अंग्रेज विद्वान अरनेस्ट ट्रम्प ने कहा कि श्रद्धालुओं की प्रार्थना पर गुरु जी ने सेवकों, शिष्यों और भक्तों के पास रखी बाणी को इकट्ठा किया।

दूसरा मत एम. ए. मैकालिफ और ज्ञानी ज्ञान सिंघ का है कि जब सिक्खों के कहने पर गुरु जी ने बाणी-संकलन का मन बनाया तो दूर-दूर तक आज्ञा-पत्र भेजे कि जिसके पास जो बाणी है, लेकर आये। इस पर जलालपुर परगना हसन अब्दाल का एक सतसंगी भाई बख्ता एक भारी ग्रंथ उठा कर लाया जिसमें प्रथम चार गुरु साहिबान और कई संतों-महात्माओं की बाणी थी। गुरु जी ने उसमें से उचित बाणी छांट ली और बाकी उसे वापिस दे दी। यह ग्रंथ अब भी भाई बख्ता की संतान के पास है और बहुत भारी है। एक आदमी उसे उठा नहीं सकता। इसी सन्दर्भ में ये दोनों श्री गुरु अमरदास जी के सपुत्र भाई मोहन जी के

पास रखी पोथियों की भी बात करते हैं। श्री गुरु अरजन देव जी द्वारा भेजे गए भाई गुरदास जी ने जब बाबा मोहन जी से पोथियां मांगीं तो उन्होंने देने से इंकार कर दिया परन्तु जब श्री गुरु अरजन देव जी खुद चल कर उनके पास गए, उन्होंने पोथियां गुरु जी को दे दीं। इसी प्रकार आज्ञा-पत्र की बात सुनकर भक्त भी गुरु जी के पास आए। गुरु जी को जो बाणी उचित लगी, उसे उन्होंने लिख लिया।

तीसरा मत प्रो. जी. बी. सिंघ का है। वे अपनी पुस्तक **'प्राचीन बीड़ां बारे'** में बाबा मोहन जी वाली पोथियों की बात ठीक मानते हैं और कहते हैं कि बाबा प्रेम सिंघ जी होती मरदान वाले, जो गोइंदवाल के भल्ले बाबाओं के परिवार से हैं और श्री गुरु अमरदास जी की १४वीं पीढ़ी के हैं, ने बाबा मोहन जी वाली पोथियों को देखा है। उन्होंने डॉ. मोहन सिंघ जी से अपने पत्र-व्यवहार का भी जिक्र किया है। डॉ. मोहन सिंघ जी ने दिसंबर १९३३ में गोइंदवाल जाकर पोथियों के दर्शन किए हैं। इनमें लगभग वही सारी श्री गुरु नानक देव जी की बाणी है जो श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में है। इनका कहना है कि गुरु जी ने लंका द्वीप से **'प्राण संगली'** भी भाई पैड़ा जी को भेजकर मंगवाई थी, पर वह बाणी श्री गुरु ग्रंथ साहिब में संकलित नहीं की। भक्त साहिबान की बाणी भी कुछ तो बाबा मोहन जी वाली पोथी में थी और कुछ उनके शिष्यों और सम्बंधियों से प्राप्त की।

विद्वानों के ये तीनों मत श्रद्धालुओं के मन में सन्देह उत्पन्न करते हैं कि क्या प्रमाण है कि गुरु साहिबान द्वारा उच्चरित सारी पावन बाणी का संकलन श्री गुरु ग्रंथ साहिब में है? जो बाणी शामिल नहीं हुई वह धुर की बाणी, पावन बाणी कहां है? बाहर क्यों रह गई? क्या इसमें कच्ची बाणी तो नहीं मिल गई? ऐसी ही आशंका भक्तों की बाणी के सम्बंध में भी उठ सकती है। इस ख्याल से हृदय कांप उठता है, श्रद्धालु के विश्वास और श्रद्धा पर हल्का-सा प्रहार भी सहनीय नहीं है।

परन्तु उच्च कोटि के खोजी विद्वान एवं शोधकर्ता प्रो. साहिब सिंघ ने इन तीनों मतों को काट कर अत्यन्त तर्कपूर्ण वैज्ञानिक और व्याकरण के नियमों के आधार पर परख कर अपना विचार स्पष्ट किया। प्रो. साहिब सिंघ ने सिद्ध किया कि अनमोल बाणी का भंडार पोथी के रूप में श्री गुरु नानक देव जी के पास सुरिक्षत था। अपनी रची बाणी वे पोथी में लिखते थे और जब उन्होंने भाई लहणा जी को श्री गुरु अंगद देव जी नाम देवकर गुरु थापा तो बाणी की पोथी श्री गुरु अंगद देव जी को दी। श्री गुरु अंगद देव जी ने ६३ श्लोक और लिख कर पोथी श्री गुरु अमरदास जी को सौंपी। श्री गुरु अमरदास जी ने अपनी रची बाणी सहित श्री गुरु रामदास जी को सौंप दी और श्री गुरु रामदास जी की पावन बाणी सहित बाणी की पोथियां श्री गुरु अरजन देव जी को मिलीं, जिन्हें देख कर ही उन्होंने गद्‌गद् कंठ कहा है :

हम धनवंत भागठ सच नाइ ॥
हरि गुण गावह सहजि सुभाइ ॥
पीऊ दादे का खोलि डिठा खजाना ॥
ता मेरै मनि भइआ निधाना ॥
रतन लाल जा का कछू न मोलु ॥
भरे भंडार अखूट अतोल ॥ (पन्ना १८५-१८६)

गुरु नानक साहिब २२ साल उदासियों के दौरान कुमार्ग पड़े लोगों को उपदेश बाणी द्वारा देकर सुधारते रहे, समय-असमय एकांत में बैठे प्रभु-ध्यान में लीन बाणी-गायन करते रहे। उस समय उनके पास कौन था जिसे बाणी कंठ हो जाती? एक भाई मरदाना जी, जो लिखना-पढ़ना नहीं जानते थे। फिर लम्बी बाणियां और

भावभीने गहन लम्बे शबद किसने लिखे? गुरु साहिब ने आप लिख कर पोथी में संजोए? भाई गुरदास जी कहते हैं कि जब हुजूर मक्के गए तो उनके पास बस्ता था, किताब थी, जिसे खोल कर बताने को हाजियों ने कहा था हिंदू बड़ा है या मुसलमान—*"पुछनि फोलि किताब नो हिंदू वडा कि मुसलमानोई ? बाबा आखे हाजीआ सुभि अमला बाझहु दोनो रोई। (वार १:३३)*

प्रो. साहिब सिंघ जी अत्यन्त तर्कपूर्ण ढंग से उदाहरण देते हुए बताते हैं कि बाणी रचना के समय गुरु साहिब के पास पूर्व गुरु साहिबान द्वारा रची बाणी मौजूद थी, तभी तो अनेक पदों का शबद-चयन, लिखने का ढंग, शैली, विचार एक जैसे हैं। कई महावाक्य तो एक जैसे ही लगते हैं, जैसे :

आसा की वार में : महला २ ॥
चाकरु लगै चाकरी जे चलै खसमै भाइ ॥ . . .
नानक हुकमु न चलई नालि खसम चलै अरदासि ॥२२॥

सलोकु महला २ ॥
चाकरु लगै चाकरी नाले गारबु वादु ॥ . . .
साहिब सेती हुकमु न चलै कही बणै अरदासि ॥३॥२२॥

माझ की वार महला १ ॥
सबाही सालाह जिनी धिआइआ इक मनि ॥
सेई पूरे साह वखतै उपरि लड़ि मुए ॥
(पन्ना १४५)

महला २ ॥
सेई पूरे साह जिनी पूरा पाइआ ॥ (पन्ना १४६)

इसी तरह की साम्यता अन्य गुरु साहिबान की बाणी में है। यदि महला १, २, ३ आदि संकेत न हों तो कई एक जैसे शब्दों को पहचान पाना कठिन है कि यह किन गुरु साहिबान की बाणी है। फिर जैसे आसा राग में श्री गुरु नानक देव जी की पटी है तो श्री गुरु अमरदास जी की भी 'पटी' बाणी है। श्री गुरु नानक देव जी की रामकली राग में 'सिध गोसटि' और 'दखणी ओअंकार' लम्बी बाणी है तो श्री गुरु अमरदास जी की 'अनंदु' लम्बी बाणी इसी राग में है। मारू राग में सोलहे और बीस-बीस, बाईस-बाईस पदों की गुरु साहिबान की लम्बी अष्टपदियां विचार, भाव और शैली में काफी मिलती-जुलती हैं। यह समता आकस्मिक नहीं है, तभी संभव है जब पहले गुरु साहिब की बाणी दूसरे गुरु साहिब के पास मौजूद हो। गुरु साहिबान लंबी बाणियां शान्त, एकान्त स्थान पर बैठ कर लिखते रहे और सहज संभाल कर पोथी रूप में रखते रहे।

इसी प्रकार का तर्क प्रो. साहिब सिंघ जी भक्त साहिबान की बाणी के बारे में भी देते हैं। श्री गुरु नानक देव जी अपनी यात्राओं के दौरान जहां-जहां गए उस क्षेत्र के भक्तों की बाणी भी अपने विचारानुसार एकत्रित की। क्षेत्रीय भाषा से उसे अपनी सरल सहज पंजाबी लिपि में लिखते रहे और पोथी श्री गुरु अंगद देव जी को सौंप दी। इस संबंध में प्रो. साहिब सिंघ बाबा फरीद जी के श्लोकों के उदाहरण देते हैं जो अनेक श्लोक श्री गुरु नानक देव जी और श्री गुरु अमरदास जी ने प्रश्न-उत्तर के रूप में दिए हैं। प्रो. साहिब सिंघ ने उदाहरण सहित प्रमाणित किया है कि भक्त साहिबान की बाणी भी इसी क्रम से एक गुरु से दूसरे के पास और फिर श्री गुरु अरजन देव जी तक पहुंची।

बाबा मोहन जी की पोथियों के सम्बंध में उनका विचार है—*"मोहन तेरे ऊचे मंदर महल अपारा ॥"* बाबा मोहन जी की प्रशस्ति में रचा गया छंद नहीं है, यह वाहिगुरु अकाल पुरख की सिफत में है। गुरबाणी में अकाल पुरख के लिए 'मोहन' शब्द अनेक स्थलों पर प्रयुक्त हुआ है। इसी राग गउड़ी में पहले छंत श्री गुरु नानक

देव जी के हैं, फिर श्री गुरु अमरदास जी के और उसी क्रम में श्री गुरु अरजन देव जी के छंत हैं, जिनमें परम पिता पारब्रहम परमेश्वर की प्रशस्ति है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की संपूर्ण दिव्य बाणी में किसी व्यक्ति की प्रशंसा गुरु साहिबान ने नहीं की है। यह पुनीत बाणी शुद्ध रूप से आध्यात्मिक साधना का मार्ग दिखाती है, किसी व्यक्ति विशेष की प्रशंसा इसमें नहीं है।

भाई बख्ता जी की कथा भी वे मनघड़त मानते हैं। उनका पहला तर्क है कि भाई बख्ता जी ने बाणी एकत्रित कैसे की? बाणी उन तक पहुंची कैसे? क्या वे गुरदेव जी के पास रह कर बाणी लिखते रहे? यदि वे चारों गुरु साहिबान के पास रह कर बाणी लिखते रहे तो पांचवें गुरु के समय वहां से चले क्यों गए? गुरु-घर की १५२१ से १५८१ तक सेवा करने के एवज में तो उनका सिक्ख इतिहास में नाम होना चाहिए था, मान-सम्मान होना चाहिए था। बाबा बुड्‌ढा जी को भरपूर मान-सम्मान मिला। अन्य श्रद्धालु सिक्ख सेवकों के साथ इनका नाम क्यों नहीं आया? क्योंकि भाई बख्ता जी की कथा मन-घड़त, निर्मूल और तर्कहीन है।

अत: स्पष्ट है कि श्री गुरु नानक देव जी अपने सिक्खों के लिए अपनी रची बाणी स्वयं लिखते रहे और संभालते रहे। यह विचार श्री गुरु नानक देव जी के मन में ही उत्पन्न हुआ था कि बाणी को एक ही संकलन में एकत्रित करके श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के रूप में मानवता को दिया जाये। अत: श्री गुरु अंगद देव जी से तृतीय, चतुर्थ गुरु साहिबान से बाणी श्री गुरु अरजन देव जी तक पहुंची। उन्होंने विरासत रूप में प्राप्त इस महत खजाने को आदि श्री गुरु ग्रंथ साहिब के रूप में मानवता को यह नायाब तोहफा दिया, जिसकी महानता सदीवी है। युगों-युगों तक यह कुल जगत का मार्गदर्शन करती रहेगी। इस पुनीत बाणी में गुरु साहिबान द्वारा दिए गए सत्य, संतोष, सेवा, सुमिरन, नाम-भक्ति के पावन उपदेश चिरकाल तक संतप्त मानवता को शान्ति, स्नेह, भ्रातृभाव, सौहार्द का राह दिखा कर आपसी प्रेम-भाव में बांधते रहेंगे।



कविता

अभी वक्त है . . .

आग के शोले उठे जो ऊंचे, राख जलाकर कर डाला।
जिस्म का ऐसा हश्र जो देखा, हो गया मैं तो मतवाला।
अतर-फुलेल लगाते थे, जो रहम कभी न खाते थे,
मौत का जाबर हाथ उठा, वो छोड़ गए मोती-माला।
सदा जीने का दम भरते थे, सामां जो इकट्‌ठा करते थे,
महल, मकां यहीं धरा रहा, बस रुखसत हो गया घर वाला।
कुछ दोस्त थे रिश्तेदार यहां, अजनबी कुछ साथ चले आए,
वफा का इतना सिला दिया, बस चिता में उनको धर डाला।
अभी वक्त है, वक्त संभाल जरा, कर कर्म का यहां ख्याल जरा,
ज़र धर्म का कर ले इकट्‌ठा 'दुखी', बन जाएगा तेरा रखवाला।



-श्री सुरजीत दुखी, ३३२/९, गली जट्टां, अन्दरून लाहौरी गेट, श्री अमृतसर।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब के बाणीकार : संक्षिप्त परिचय

*-डॉ दीनानाथ शरण**

शहीदों के सिरताज सिक्खों के पांचवें गुरु श्री गुरु अरजन देव जी ने सारी गुरबाणी (अर्थात् सत्यस्वरूप परमत्मा से मिलाने वाली बाणी) को 'ग्रंथ' रूप में संपादित कर इसका श्री हरिमंदर साहिब, श्री अमृतसर में प्रथम प्रकाश किया। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने सन् १७०८ को इसे श्री हजूर साहिब नांदेड़ (महाराष्ट्र) में "गुरगद्दी" सौंपी अर्थात् इस पावन ग्रंथ को "गुरु-पद" पर प्रतिष्ठित किया और इसे ही "गुरु" मानने को कहा। तब से यही पावन ग्रंथ "श्री गुरु ग्रंथ साहिब" के नाम से प्रसिद्ध है। यह सिक्खों का "धर्म-ग्रंथ" ही नहीं, इसे "गुरु" के रूप में मान्यता भी प्राप्त है। यह सिक्ख-गुरुओं की बाणी है जो सिक्खों का पथ-प्रदर्शन सदा करती आयी है और करती रहेगी। किसी भी धर्म में, किसी भी ग्रंथ को "गुरु" का ऐसा महान दर्जा प्राप्त नहीं है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के वचन यूं अंकित किये गए मिलते हैं :

आगिआ भई अकाल की तबै चलायो पंथ।
सब सिक्खन को हुकम है गुरु मानीओ ग्रंथ।
गुरु ग्रंथ को मानीओ प्रगट गुरां की देह।
जो प्रभु को मिलबो चहे खोज सबद मैं लेह।
(पंथ प्रकाश, ज्ञानी ज्ञान सिंघ, पन्ना ३५३)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में १४३० पन्ने हैं और छः गुरु साहिबान के अलावा, १५ भक्त साहिबान, ११ भट्ट साहिबान और गुरु-घर के निकटवर्ती गुरसिक्खों की बाणी संकलित है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की रागयुक्त बाणी ३१ विभिन्न रागों में दर्ज है। इस पावन ग्रंथ में से किसी शबद को बदला या उसमें हेरफेर नहीं किया जा सकता। बाणी की भाषा मुख्य रूप में पंजाबी है परन्तु इसमें संस्कृत, हिंदी, फारसी, ब्रज, रेखता और साधुक्कड़ी आदि भाषाओं का भी काफी प्रयोग हुआ है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब के बाणीकार

(क) गुरु साहिबान

(१) श्री गुरु नानक देव जी (सन् १४६९ से १५३९ ई) : श्री गुरु नानक देव जी सिक्ख धर्म के प्रवर्तक और प्रथम गुरु थे। आप जी का जन्म सन् १४६९ में तलवंडी नामक गांव (अब ननकाणा साहिब, पाकिस्तान) में हुआ था। आप जी के पिता का नाम श्री मेहता कालू जी और माता का नाम माता तृप्ता जी था। श्री गुरु नानक देव जी ने परस्पर प्रेम, उदारता, सहिष्णुता और शांति-सद्भावना का पावन संदेश दिया :

जब लगु दुनीआ रहीऐ नानक किछु सुणीऐ किछु कहीऐ ॥ (पन्ना ६६१)

अपने संदेश को जन-जन तक पहुंचाने के लिये श्री गुरु नानक देव जी ने लंबी-लंबी प्रचार-यात्राएं कीं, जो 'चार उदासियां' के नाम से विख्यात हैं। उस जमाने में आज के समान यातायात के सुगम, वैज्ञानिक साधन-संसाधन नहीं थे। श्री गुरु नानक देव जी की कष्टपूर्ण यात्राओं की जितनी भी सराहना की जाये कम होगी।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में श्री गुरु नानक देव

**दरियापुर गोला, बांकीपुर, पटना-८०००४ (बिहार)*

जी के ९७३ शबद दर्ज हैं और १९ रागों में हैं, जो इस प्रकार हैं--सिरीराग, गूजरी, सोरठि, गउड़ी, धनासरी, बिलावल, सूही, रामकली, मारू, भैरउ, तुखारी, सारंग, बसंत, प्रभाती, मलार, आसा, तिलंग, माझ, वडहंस। उन्होंने धर्म-समाज को वाह्याडम्बरों और अंधविश्वासों के भ्रमजाल से निकालकर सदाचरण का संदेश दिया। वे बड़े ही साधु स्वभाव के सरल हृदय महापुरुष थे।

(२) श्री गुरु अंगद देव जी (सन् १५०४ ई से १५५२ ई) : आप जी का जन्म १५०४ ई में मत्ते की सराय में हुआ था। यह गांव अब 'सराए नागा' के नाम से प्रसिद्ध है जो पंजाब के मुक्तसर जिले में मुक्तसर-कोटकपुरा रोड पर स्थित है। आप जी के पिता का नाम श्री फेरू मल था। आप जी के ६३ श्लोक श्री गुरु ग्रंथ साहिब में संकलित हैं। आप जी का पूर्व नाम भाई लहणा जी था। आप जी ने गुरमुखी लिपि का प्रवर्त्तन किया।

(३) श्री गुरु अमरदास जी (सन् १४७९ ई से १५७४ ई) : सिक्खों के तीसरे गुरु का जन्म श्री अमृतसर के समीप गांव बासरके में सन् १४७९ में हुआ था। आप जी के पिता का नाम भाई तेज भान और माता का नाम बीबी सुलक्खणी जी था। आप श्री गुरु अंगद देव जी के बाद सन् १५५२ ई को गुरगद्दी पद पर प्रतिष्ठित हुए। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में १७ रागों में आपके ८९१ शबद दर्ज हैं। आपकी बहुत बड़ी देन है--धर्म, वर्ण, जात-पात, ऊंच-नीच के भेदभाव को समाप्त करके हर आदमी को 'एक पंगत' में बैठकर 'परशादा छकने' की व्यवस्था को सुदृढ़ करना। महान मुगल सम्राट अकबर ने भी 'लंगर' में जनसामान्य लोगों के साथ 'पंगत' में बैठकर परशादा छका था। सती-प्रथा का विरोध, विधवा-विवाह को प्रोत्साहन, पर्दा-प्रथा का निषेध कर आपने स्त्रियों को संबल प्रदान किया, जिसे आज की भाषा में नारी-शक्तिकरण कहा जा सकता है। सन् १५७४ ई में आप परम-ज्योति में विलीन हुए।

(४) श्री गुरु रामदास जी (सन् १५३४ ई से १५८१ ई) : सिक्खों के चौथे गुरु श्री गुरु रामदास जी सन् १५७४ से १५८१ तक गुरगद्दी पर विराजमान थे। माता-पिता का दिया नाम 'रामदास' था, लेकिन प्रथम संतान होने के कारण लोग इन्हें 'जेठा जी' कहते थे। आप जी के पिता का नाम श्री हरिदास और माता का नाम बीबी दया कौर था। आप जी का जन्म सन् १५३४ ई में लाहौर में हुआ था और विवाह श्री गुरु अमरदास जी की सपुत्री बीबी भानी जी से सन् १५५३ में हुआ था। इनके ६४४ शबद श्री गुरु ग्रंथ साहिब में संकलित हैं, जिनमें तीस रागों का प्रयोग किया गया है। आप जी ने श्री गुरु अमरदास जी के उदार मानवतावाद को आगे बढ़ाते हुए 'रामदासपुर' नगर बसाकर बिना भेदभाव के विभिन्न धर्मों के बावन व्यवसायों के लोगों को अपने धर्म-कर्म करने की पूरी स्वतंत्रता दी। सर्व-धर्म-समभाव के साथ-साथ सर्व-कर्म-समभाव की इससे बढ़कर दूसरी मिसाल और क्या होगी! इनके शील-गुणों से प्रभावित होकर श्री गुरु अमरदास जी ने भाई जेठा जी को अपना उत्तराधिकारी बनाया और भाई जेठा जी सिक्खों के चौथे गुरु श्री गुरु रामदास जी के नाम से प्रसिद्ध हुए। प्रो. पूरन सिंघ ने लिखा है कि **"The poetry (Bani) of Ramdas flows like a stream of love. The Master's divine music thrills the soul of a whole people and his song makes everyone pure." (The Ten Masters p.53)**

(५) श्री गुरु अरजन देव जी (सन् १५६३ ई से १६०६ ई) : आप जी सिक्ख धर्म के पांचवें गुरु थे। आप जी धर्म की रक्षा के लिये शहीद होने वाले सिक्ख धर्म के सर्वप्रथम महापुरुष हुए हैं। सन् १५६३ ई में आप जी का जन्म गोइंदवाल साहिब में हुआ था। श्री गुरु रामदास जी आपके पिता थे और बीबी भानी जी माता थीं। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में आप जी के २३१३ शबद तीस रागों में संकलित हैं।

अपने गुरु-जनों के आदर्श पर चलते हुए आप जी ने श्री हरिमंदर साहिब का निर्माण कराते समय चारों दिशाओं में चार द्वार खुलवाये, जो जात-पात, धर्म-संप्रदाय के भेदभावों से ऊपर उठकर सारी मानवता के लिये उन्मुक्त हैं। आप जी की एक और बहुत बड़ी देन है— श्री गुरु ग्रंथ साहिब का संपादन-कार्य। इसमें आप जी ने अपनी बाणी और अपने से पूर्व चार गुरु साहिबान के साथ-साथ पंद्रह भक्त साहिबान, चार गुरसिक्खों और ११ भट्ट साहिबान की भी बाणी संकलित कर ऐसी धार्मिक उदारता एवं महानता का परिचय दिया जिसकी दुनिया के इतिहास में दूसरी कोई मिसाल नहीं है। इसी पावन ग्रंथ को श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने आगे चलकर "गुरु" का दर्जा देकर प्रतिष्ठित किया। श्री गुरु ग्रंथ साहिब भारत की समग्र आध्यात्मिक साधना का जीवंत प्राण हैं। सन् १६०६ ई में मुगल सम्राट जहांगीर के हुक्म से आप जी को शहीद कर दिया गया। सिक्ख धर्म में सबसे पहले शहीद होने के कारण आप जी शहीदों के सिरताज कहे जाते हैं।

(६) श्री गुरु तेग बहादर जी (सन् १६२१ ई से १६७५ ई) : आप जी का जन्म सन् १६२१ में श्री अमृतसर में हुआ था। १६६४ से १६७५ तक आप जी गुरगद्दी पर विराजमान रहे। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में आप के ५९ शबद और ५७ श्लोक संकलित हैं। आप जी ने १५ रागों में अपनी बाणी उच्चारण की और राग जैजावंती का प्रयोग केवल आप जी ने ही किया। आप जी की माता का नाम बीबी नानकी जी था और पिता श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी थे।

श्री गुरु तेग बहादर जी बचपन से ही शांत, सौम्य, नम्र और गंभीर स्वभाव के थे। आप सिक्खों के नौवें गुरु हुए। जब सन् १६६४ में आप गुरगद्दी पर बैठे तब आप जी ने श्री अनंदपुर साहिब की स्थापना के बाद लंबी-लंबी प्रचार-यात्राएं कीं और सद्धर्म का प्रचार किया। आप जी का विवाह करतारपुर के श्री लालचंद की सपुत्री बीबी गुजरी जी से हुआ। जब आप पटना से आसाम की प्रचार-यात्रा पर थे, आप जी के घर १६६६ ई में पटना साहिब में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने जन्म लिया।

इतिहास-प्रसिद्ध है कि १६७५ ई को जब कशमीर के लोगों की करुण कहानी सुन कर श्री गुरु तेग बहादर जी गहरी सोच में पड़ गये तब बाल गोबिंद राय जी ने सुधीर होकर अपने पिता जी से पूछा--"पिता जी! आज आप इतने उदास क्यों हैं?" गुरु जी ने कहा, "कशमीर के लोगों की समस्या के समाधान के लिये किसी महान पुरुष को बलिदान देना पड़ेगा।" इस पर बाल गोबिंद राय जी, जो मात्र नौ साल की उम्र के थे, बोले, "इस समय पिता जी आप से बढ़कर महान पुरुष दूसरा कौन है?" श्री गुरु तेग बहादर जी बालक के उत्तर से प्रफुल्लित हो उठे और देश-धर्म की बलिवेदी पर आप जी ने सन् १६७५ में अपना जीवन बलिदान कर दिया। दिल्ली के चांदनी चौंक में उसी ऐतिहासिक बलिदान की पुण्य स्मृति में गुरुद्वारा सीसगंज साहिब सुशोभित है। 'बचित्र नाटक' में श्री गुरु

गोबिंद सिंघ जी ने इसका आश्चर्य भरा वर्णन किया है। श्री गुरु तेग बहादर जी के इस बलिदान का बड़ा ही गहरा प्रभाव पड़ा। यहीं से शांत-सहिष्णु और सौम्य सिक्ख अब दुर्घर्ष योद्धा और देश-धर्म के लिये अपनी जान कुर्बान कर देने वाले वीर बन गये। प्रो. पूरन सिंघ के शब्दों में--"**A great dust storm swept that day over Delhi and the sky was blood-red. This storm of dust carried off the Empire of Aurangzeb as if it were a dead leaf lying on the road. The Master yet lived." (The Ten Masters, Page 95, Published by Chief Khalsa Diwan, Amritsar, Fourth Edition, Sept. 1969)**

स. किरपाल सिंघ (रीसर्च स्कालर, सिक्ख इतिहास रीसर्च बोर्ड, शिरोमणि गु: प्र: कमेटी, श्री अमृतसर) ने बिलकुल सही लिखा है कि "गुरु साहिब की यह शहीदी विश्व के इतिहास में पहली ऐसी शहीदी है जो किसी महापुरुष ने दूसरे धर्म की रक्षा के लिये दी। उन्होंने अपनी शहादत देकर सारे भारत की इज्जत रख ली, इसीलिये उनको "हिंद की चादर" भी कहा जाता है। श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी की शहादत के परिणाम बहुत ही दूरगामी निकले। गुरु साहिब की शहीदी को सिक्खों ने ही नहीं बल्कि भारत के सारे हिंदू भाईचारे ने अपने धर्म के लिये दी गयी कुर्बानी समझा और उनके दिलों में अत्याचारी मुगल हकूमत के जुल्मों का डटकर मुकाबला करने की प्रबल इच्छा जाग उठी।

(ख) भक्त साहिबान

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में १४ भक्त साहिबान की भी बाणी संकलित है जिनका विवरण इस प्रकार है :

(१) भक्त कबीर जी (सन् १३९८ ई से १५१८ ई) : श्री गुरु ग्रंथ साहिब में संकलित भक्त साहिबान की बाणी में सबसे अधिक बाणी भक्त कबीर जी की है। सोलह रागों में ५३७ शबद और श्लोक संकलित हैं। इनका जन्म जेठ सुदी पूर्णिमा, सोमवार बि. सं. १४५६, तदनुसार सन् १३९८ ई माना जाता है। इनका देहावसान सन् १५१८ ई में हुआ। हिंदी के सुप्रसिद्ध समालोचक एवं इतिहासकार आचार्य पं. रामचंद्र शुक्ल के अनुसार--"इनकी उत्पत्ति के संबंध में अनेक प्रकार के प्रवाद प्रचलित हैं। अली या नीरू नामक जुलाहे ने भक्त जी का पालन-पोषण किया। भक्त कबीर जी ने अपने आविर्भाव के संबंध में कहा है :

काशी में हम प्रगट भये हैं, रामानंद चेताये।
समरथ का परवाना लाये, हंस उबारन आये।

भक्त कबीर जी की भाषा में राजस्थानी, पंजाबी, खड़ी बोली, ब्रज भाषा आदि का सम्मिश्रण है जिसे आचार्य पं. रामचंद्र शुक्ल ने 'साधुक्कड़ी भाषा' का नाम दिया है।

भक्त कबीर जी का लालन-पालन जुलाहा दम्पत्ति ने किया था। इस नाते वे जाति से जुलाहा थे। ऊंच-नीच, जाति का भेद-भाव उन्होंने नहीं माना। इस तरह उन्होंने नीच जाति के लोगों के मन में आत्म-सम्मान जगाया, उनका मनोबल बढ़ाया तथा आत्मविश्वास जगाया:

कबीर मेरी जाति कउ सभु को हसनेहारु ॥
बलिहारी इस जाति कउ जिह जपिओ सिरजनहारु ॥ *(पन्ना १३६४)*

आशय यह कि जात-पात से क्या! जो भगवान की बंदगी करने वाले हैं सदा सम्मानयोग्य हैं, चाहे वे तथाकथित नीच जाति में ही क्यों न जन्मे हों।

भक्त कबीर जी ने भगवद्-भक्ति,

ईश्वरोपासना का मार्ग सभी जाति के लोगों के लिये खोल दिया। आचार्य पं. रामचंद्र शुक्ल ने भी भक्त कबीर जी की इस बहुत बड़ी विशेषता को लक्ष्य करते हुए लिखा है--"मनुष्यत्व की सामान्य भावना को आगे करके निम्न श्रेणी की जनता में उन्होंने आत्म-गौरव का भाव जगाया और भक्ति के ऊंचे से ऊंचे सोपान की ओर बढ़ने के लिये बढ़ावा दिया। इस प्रकार समाज में व्याप्त ऊंच-नीच के भेदभावों की दीवारों को ध्वस्त करने की दिशा में भक्त कबीर जी ने बड़ा ही महत्त्वपूर्ण कार्य किया। उन्होंने भारतीय समाज में बहुत बड़ी सामाजिक क्रांति उपस्थित की। आज भी सामाजिक समता, सद्भावना और परस्पर प्रेम-भाव को बढ़ावा देने के लिये भक्त कबीर जी की बाणी का बड़ा ही प्रासंगिक महत्त्व है। वे महज बहुत बड़े धर्म-समाज-सुधारक, चिंतक, संत-पुरुष थे।

(२) भक्त नामदेव जी (सन् १२७१ ई से १३५१ ई) : भक्त नामदेव जी का जन्म सन् १२७१ में महाराष्ट्र के जिला सतारा के नरसी बामनी नामक गांव में हुआ था। पिता का नाम श्री दामा सेठ और माता का नाम गोनाबाई था। ये जाति के दर्जी थे।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में इनके ६१ पद संकलित हैं। इन्होंने १८ रागों में बाणी उच्चारण की। इन्हें महाराष्ट्र में बहुत लोकप्रियता मिली। आज भी वहां घर-घर में इनकी बाणी बहुत श्रद्धा के साथ गायी जाती है। इनका विवाह राजा बाई के साथ हुआ था, जिससे एक बेटी और चार पुत्र उत्पन्न हुए।

एक बार कुछ ब्राह्मणों ने शूद्र होने के कारण इन्हें मंदिर से धक्के मारकर बाहर निकाल दिया तो वे मंदिर के पिछवाड़े में बैठकर प्रभु के चिंतन में तल्लीन हो गये। भगवान ने अपने भक्त की निष्ठा देखकर मंदिर का दरवाजा ही पीछे की तरफ कर दिया :

जिउ जिउ नामा हरि गुण उचरै ॥
भगत जनां कउ देहुरा फिरै ॥ (पन्ना ११६४)

जो हो, जात-पात एवं सांप्रदायिक कट्टरता से ऊपर उठे हुए ये एक पहुंचे हुए संत-महात्मा थे और इनकी उद्घोषणा ने भक्ति के द्वार सभी जातियों के लिए खोल दिये।

(३) भक्त रविदास जी (सन् १३२४ ई से १४१४ ई) : श्री गुरु ग्रंथ साहिब में इनके ४० पद हैं। ये तथाकथित चमार जाति के थे। स्वयं इन्होंने अपने पदों में अपने को चमार बताया है :

--कहै रविदास खलास चमारा ॥ (पन्ना ३४५)

ये भक्त रामानंद जी के शिष्य थे। ये निर्गुण भक्त थे। साधुओं का एक संप्रदाय जो फर्रुखाबाद और मिर्जापुर के आस-पास पाया जाता है, भक्त रविदास जी की ही परंपरा में है।

(४) भक्त त्रिलोचन जी (सन् १२६८ ई से १३३५ ई) : भक्त त्रिलोचन जी का जन्म १२६८ ई में महाराष्ट्र के सोलापुर जिले के गांव बारसी में एक सम्पन्न ब्राह्मण परिवार में हुआ था। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में इनके कुल चार पद संकलित हैं, जिनमें एक सिरीराग, एक धनासरी में तथा दो गूजरी राग में हैं। इनकी भाषा पर मराठी प्रभाव स्पष्ट है। ये भक्त नामदेव जी के समकालीन और उनके घनिष्ठ मित्र थे। भक्त त्रिलोचन जी संत ज्ञानदेव की प्रेरणा से आध्यात्मिक पथ पर अग्रसर हुए थे।

(५) भक्त धन्ना जी (पंद्रहवीं शताब्दी) : आचार्य पं. रामचंद्र शुक्ल ने स्वामी रामानंद के बारह शिष्यों में भक्त धन्ना जी का भी नामोल्लेख किया है--"**Dhanna was a farmer born at Dhuan in the state of Tonk near Deoli. This little peasant boy had a very**

innocent soul. Seeing a Brahmin leading a very comfortable life by merely worshipping the idol, he also sought the grace of God by worshipping the stone. For six days and nights he sat in meditation and the God he sought in the stone revealed himself within him. For further guidance in spiritual life he became the disciple of Ramanand." (The Sacred Writings of the Sikhs, p. 244, Published by George Allen & Unwin Ltd.; London 1960)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में भक्त धन्ना जी के ३ पद संकलित हैं जिनमें अधिकांश मूर्ति-पूजा के विरुद्ध हैं। ये जाति के जाट और राजस्थान निवासी थे।

(६) भक्त सैण जी (सन् १३९० ई से १४४० ई) : ये जाति के नाई थे और बांधवगढ़ (रीवा) के राजा राजाराम के दरबारी सेवक थे। कहा जाता है कि एक दिन भक्त सैण जी भजन-कीर्तन में ऐसे तल्लीन हो गये कि राजा की सेवा में न जा सके। दूसरे दिन राजा से जब क्षमा-याचना की तब राजा ने उनसे कहा कि वे तो प्रतिदिन की भांति सारी रात राजा की सेवा में ही थे। भक्त सैण जी की आध्यात्मिक भावना से आत्यंत प्रभावित होकर राजा सपरिवार उनके श्रद्धालु बन गये।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में भक्त सैण जी का एक पद राग धनासरी में संकलित है। आचार्य पं. रामचंद्र शुक्ल के अनुसार भक्त सैण जी स्वामी रामानंद के शिष्य थे।

(७) भक्त जयदेव जी या जैदेव जी (तिरहवीं शताब्दी) : ये जाति के ब्राह्मण और बंगाली थे। इनका जन्म पश्चिम बंगाल के वीरभूमि जिले के कुंदेली नामक गांव में हुआ था। इनके पिता का नाम भोजदेव और माता का नाम राधा देवी या रमा देवी था। भक्त जैदेव जी बंगाल के प्रसिद्ध राजा लक्ष्मण सेन के दरबारी कवि थे। इनका अधिकांश जीवन राजा लक्ष्मण सेन की संगति में ही बीता। संस्कृत और संगीत में अति निपुण भक्त जैदेव जी वैष्णव मतावलंबी थे। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में भक्त जैदेव जी के दो पद संकलित हैं।

(८) भक्त पीपा जी (सन् १४०८ ई से १४६८ ई) : ये स्वामी रामानंद के शिष्य थे। इनका जन्म सन् १४२६ ई में हुआ था। ये राणा कुंभा के समकालीन गगरौनगढ़ के चौहानवंशी राजा थे। पहले तो ये परम दुर्ग-भक्त थे परन्तु बाद में वैष्णव धर्मावलंबी बन गये। राज-पाट का मोह त्याग कर अपनी पत्नी सीता के साथ तीर्थ-यात्रा के लिए निकल गये। आज भी उनकी स्मृति में द्वारिकापुरी में एक स्मारक है जो 'पीपा-वट' के नाम से लोक-प्रसिद्ध है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में इनका एक शबद धनासरी राग में अंकित है।

(९) भक्त सूरदास जी (सन् १४८३ ई से १५६३ ई) : भक्त सूरदास जी हिंदी के अत्यंत प्रसिद्ध कवि हैं। उन पर सैंकड़ों समीक्षा-ग्रंथ एवं शोध-प्रबंध प्रकाशित हो चुके हैं। हिंदी के कृष्ण-भक्त कवियों में उनका स्थान बहुत ऊंचा है। किंवदंती है कि उन्होंने सवा लाख पद लिखे परन्तु आज सभी उपलब्ध नहीं हैं। उनके कुछ ही हजार पदों का संग्रह 'सूर-सागर' है। ये वल्लभाचार्य के शिष्य थे और इनका अधिकांश जीवन श्रीनाथ जी के मंदिर में भजन-कीर्तन करते व्यतीत हुआ। भक्त सूरदास जी मुख्यत: श्रृंगार और वात्सल्य के कवि हैं। आचार्य पं. रामचंद्र शुक्ल के विचारानुसार "श्रृंगार और

वात्सल्य के क्षेत्र में जहां तक इनकी दृष्टि पहुंची वहां तक और किसी कवि की नहीं। इन दोनों क्षेत्रों में तो इस महाकवि ने मानो औरों के लिये कुछ छोड़ा ही नहीं।" *(हिंदी साहित्य का इतिहास, पृ. ११६)* श्री गुरु ग्रंथ साहिब में भक्त सूरदास जी का एक पद संकलित है जो राग सारंग में है।

(१०) शेख फरीद जी (सन् ११७३ ई से १२६६ ई) : शेख फरीद जी का जन्म मुलतान के समीप खोतवाल में हुआ था। इनके पिता का नाम शेख जलालुद्दीन तथा माता का नाम मरियम था। माता की प्रेरणा और प्रभाव से ये आध्यात्मिक साधना की ओर प्रवृत्त हुए। सोलह वर्ष की अवस्था में ये मक्का गये और कुछ समय बाद जब दिल्ली लौटे तब सूफी संत कुतुबद्दीन के शिष्य बन गये। बानवे साल की उम्र में इनका देहांत हुआ। इनका अधिकांश जीवन अजोधन में बीता जो पाकपट्टन के नाम से विख्यात हुआ। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में इनके ११६ पद संकलित हैं। शेख फरीद जी के देहांत के लगभग तीन सौ साल बाद श्री गुरु नानक देव जी उनकी गद्दी के बारहवें उत्तराधिकारी शेख इब्राहिम से मिले और शेख फरीद जी की बाणी ले आये। बाद में पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब का सम्पादन करते समय शेख फरीद जी की बाणी को श्री गुरु ग्रंथ साहिब में शामिल कर लिया।

शेख फरीद जी का व्यक्तित्व इतना प्रभावशाली था कि हजरत निजामुद्दीन औलिया, आसिफुद्दीन, शेख आरिफ, शेख जमाल हांसवी, मौलाना फखरूद्दीन जैसे अनेक संत-फकीर उनके शिष्य हो गये थे।

सीधी-सादी बोलचाल की भाषा में उनके उपदेश सहज ही लोगों को आकर्षित कर लेते थे। आज भी पाकपट्टन में मुहर्रम महीने की पांच और छ: तारीख को उनकी मजार पर उसके आयोजन के अवसर पर हजारों श्रद्धालु आते हैं।

(११) भक्त परमानंद जी (सन् १४८३ ई से १५९३ ई) : ये श्री वल्लभाचार्य के शिष्य थे। ये जाति के कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे। इनका निवास-स्थान कन्नौज था। इनके ८३५ पदों का संग्रह 'परमानंद सागर' के नाम से प्रसिद्ध है। हिंदी के कृष्ण-भक्त कवियों में इनका स्थान बहुत ऊंचा है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में इनका एक पद संकलित है, जो राग सारंग में है।

(१२) भक्त सधना जी (बारहवीं/तेरहवीं शताब्दी) : इनका जन्म सिंध के सेहवान नामक गांव में हुआ था। ये जाति के कसाई थे। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में उनका एक पद संकलित है जो राग बिलावल में है।

(१३) भक्त बेणी जी (पंद्रहवीं शताब्दी) : भक्त बेणी जी का जन्म बिहार में एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में इनके तीन पद संकलित हैं जो सिरीराग, प्रभाती और रामकली राग में हैं। इन पदों में उन्होंने कर्मकांडों का घोर विरोध किया है। भक्त बेणी जी के जीवन-चरित्र के संबंध में प्रमाणिक जानकारी का अभाव है और यह गंभीर शोध का विषय है।

(१४) भक्त रामानंद जी (सन् १३६६ ई से १४६७ ई) : ईसा की पंद्रहवीं शताब्दी में रामानुजाचार्य की शिष्य-परम्परा में भक्त रामानंद जी हुए। भक्त रामानंद जी ने भक्ति का ऐसा उदार मार्ग निकाला जिसमें जात-पात और खान-पान की कट्टरता नहीं थी। इसीलिये भक्त रामानंद जी के शिष्यों में भक्त कबीर जी, भक्त रविदास जी, भक्त सैण जी जैसे लोग हुए हैं।

दिल्ली के बादशाह सिक्खंदर लोधी के

समय भक्त रामानंद जी विद्यमान थे। आचार्य पं. रामचंद्र शुक्ल का मत है कि सिक्खंदर लोधी सं. १५४६ से सं. १५७४ तक गद्दी पर रहा। इन अट्ठाइस वर्षों के काल-विस्तार के भीतर चाहे आरंभ की ओर या अंत की ओर, भक्त रामानंद जी का वर्तमान रहना ठहरता है। भक्त रामानंद जी के केवल दो ग्रंथ मिलते हैं—"वैष्णवमताब्ज भास्कार' और 'श्रीरामार्चन-पद्धति', जो संस्कृत भाषा में हैं। उन्होंने हिन्दी में भी विनय और स्तुति के पद लिखे।

उत्तर भारत में भक्ति का प्रचार करने वाले भक्त रामानंद जी ही थे जो रामानुजाचार्य के शिष्य राघवाचार्या के शिष्य थे। काशी में रहते थे। भक्त रामानंद जी भी गद्दी को संभालते हुए काशी में बस गये। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में भक्त रामानंद जी का केवल एक पद संकलित है जो राग बसंत में है।

भक्त रामानंद जी का जन्म प्रयाग में हुआ था। वे जाति के कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे। उनके पिता का नाम भूरिकर्मा और माता का नाम सुशीला देवी था। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में भक्त रामानंद जी के उद्धृत पद की प्रसिद्ध पंक्तियां हैं:

कत जाईऐ रे घर लागो रंगु ॥
मेरा चितु न चलै मनु भइओ पंगु ॥ . . .
जहा जाईऐ तह जल पखान ॥
पूरि रहिओ है सभ समान ॥
बेद पुरान सभ देखे जोइ ॥
ऊहां तउ जाईऐ जउ ईहां न होइ ॥
सतिगुर मै बलिहारी तोर ॥
जिनि सकल बिकल भ्रम काटे मोर ॥
रामानंद सुआमी रमत ब्रहम ॥
गुर का सबदु काटै कोटि करम ॥ (पन्ना ११९५)

(१५) भक्त भीखन जी (सन् १४८० ई से १५७४ ई) : भक्त भीखन जी एक मुस्लिम संत-फकीर थे। वे भक्त कबीर जी और शेख फरीद जी के शिष्यों से अत्यंत प्रभावित थे। वे लखनऊ (उत्तर प्रदेश) के काकोरी नामक स्थान के रहने वाले थे। उन्होंने गृहस्थ जीवन बिताया था। वे प्रभु के सच्चे भक्त होने के साथ-साथ बहुत ही ज्ञानी पुरुष भी थे।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में उनके दो शबद संकलित हैं जो राग सोरठि में हैं। उनका विश्वास था कि भगवान की सच्ची भक्ति ही जीवन का सच्चा मार्ग है।

गुरु-घर के निकटवर्ती गुरसिक्ख

(१) भाई मरदाना जी (सन् १४६० ई से १५३० ई) : भाई मरदाना जी सिक्खों के आदि-गुरु श्री गुरु नानक देव जी के रबाबी साथी थे। वे मरासी मुसलमान थे। उनका जन्म सन् १४६० में श्री गुरु नानक देव जी के जन्म-स्थान तलवंडी में हुआ था। वे बचपन से ही आजीवन गुरु जी के साथ रहे और उनकी धर्म-प्रचार-यात्राओं में भी सदा उनके साथ रहे। सारंगी बजाने में वे बहुत प्रवीण थे। अपनी आध्यात्मिक उमंग में आने पर श्री गुरु नानक देव जी उन्हीं से सारंगी बजवाकर अपनी बाणी उच्चरित किया करते थे।

भाई मरदाना जी पेशेवर सारंगी-वादक थे। भाई मरदाना जी का देहावसान करतारपुर में सन् १५३० ई में हुआ। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में भाई मरदाना जी के नाम पर श्री गुरु नानक देव जी के तीन पद संकलित हैं।

प्रो. पूरन सिंघ ने भाई मरदाना जी के विषय में लिखा है कि—**"Mardana is the Master's rebec player and companion with all the wit and humour of the Punjabi Mistrel . . . The name of Mardana was so much on the Master's**

lips that we cannot think of Guru Nanak apart from Mardana playing by his side on his rebec. "Mardana play the rebec, the music of Heaven cometh." This is the first line of almost every hymn of Guru Nanak." (The Ten Master's, p. 24, Prof. Puran Singh, Published by Chief Khalsa Diwan, Amritsar, Sept. 1969.)

(२) बाबा सुंदर जी (सन् १५६० ई से १६०३ ई) : बाबा सुंदर जी श्री गुरु अमरदास जी के पड़पौत्र थे। इनका जन्म सन् १५६० में और देहावसान् सन् १६०३ में हुआ। ये जब मात्र चौदह वर्ष के थे तब श्री गुरु अमरदास जी परलोक गमन कर गये। श्री गुरु अमरदास जी के अंतिम शब्दों का बाबा सुंदर जी पर इतना गहरा प्रभाव पड़ा कि इन्होंने एक शोक-अलाप (सदु) उच्चारण किया, जिसमें मृत्यु के प्रति सिक्ख-दर्शन, सिक्ख विचारधारा को व्यक्त किया कि मृत्यु दुख का विषय नहीं बल्कि सुख का विषय है कि प्रबुद्ध आत्मा का अपने प्रियतम परमात्मा से मिलन हो जाता है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में बाबा सुंदर जी के छ: पद रामकली राग में संकलित हैं।

(३) भाई सत्ता जी (सोलहवीं शताब्दी) : ये जाति के डूम थे। इनके जन्म-काल और जीवन के संबंध मे विशेष ज्ञात नहीं है। श्री गुरु अरजन देव जी के समय में होने के कारण इनका समय सोलहवीं शताब्दी माना जाता है। ये पंजाब के रहने वाले थे। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में भाई सत्ता जी की रामकली राग में एक वार संकलित है।

(४) भाई राय बलवंड जी (सोलहवीं शताब्दी): ये जाति के भट्ट थे। इनके जन्म-काल और जीवन के संबंध में विशेष जानकारी नहीं मिलती। श्री गुरु अरजन देव जी के समय में विद्यमान थे, अत: इनका समय सोलहवीं शताब्दी माना जा सकता है। इनकी भी श्री गुरु ग्रंथ साहिब में रामकली राग में एक वार संकलित है।

कहा जाता है कि भाई सत्ता जी और भाई बलवंड जी पिता-पुत्र थे। कुछ लोगों का विचार है कि ये दोनों साथी थे, जो श्री गुरु अंगद देव जी द्वारा धार्मिक-आध्यात्मिक शबदों के गायन के लिये नियुक्त थे। जब श्री गुरु अरजन देव जी गुरगद्दी पर बैठे तो इन दोनों ने काफी अधिक रकम की मांग की, जिसे श्री गुरु अरजन देव जी ने देना स्वीकार नहीं किया। तब से श्री गुरु अरजन देव जी ने अपने शिष्यों को पेशेवर संगीतकारों का भरोसा छोड़कर स्वयं संगीत में निपुण होने की बात कही। **(The Sacred Writings of the Sikhs, p. 250, Published by George Allen & Unwin Ltd., London, First Edition, 1960)**

श्री गुरु ग्रंथ साहिब के अन्य बाणीकार

भट्ट कवि साहिबान : श्री गुरु ग्रंथ साहिब में ग्यारह भट्ट कवियों की बाणी संकलित है जिनका विवरण इस प्रकार है :

नाम	प्रांत	संकलित बाणी
१. भट्ट कल सहार जी	पंजाब	५४
२. भट्ट जालप जी	पंजाब	५
३. भट्ट कीरत जी	पंजाब	८
४. भट्ट भिखा जी	पंजाब	२
५. भट्ट सल जी	पंजाब	३
६. भट्ट भल जी	पंजाब	१
७. भट्ट नल जी	पंजाब	१६
८. भट्ट गयंद जी	पंजाब	१३
९. भट्ट मथरा जी	पंजाब	१४
१०. भट्ट बल जी	पंजाब	५

(शेष पृष्ठ ३१ पर)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में भाषायी समन्वय

-डॉ. नवरत्न कपूर*

स्त्री या पुरुष की पहचान उसके चेहरे और उसकी भाव-मुद्राओं से हो जाती है। व्यक्ति किस देश अथवा क्षेत्र का वासी है, इसका मापदंड भाषा या बोली ही होता है। बहुत-सी भारतीय भाषाओं का आदि स्रोत संस्कृत को माना गया है, जबकि इस्लामी भाषाओं का मूल आधार अरबी-फारसी ही है। सच्चे पातशाह श्री गुरु नानक देव जी ने ऐसी भाषागत भिन्नताओं से ऊपर उठकर 'भाषायी समन्वय' का आदर्श 'जपु जी साहिब' की रचना के समय ही स्थापित कर दिया था। श्री गुरु अरजन देव जी ने सिरमौर की भांति सुशोभित इस पुनीत बाणी को 'श्री गुरु ग्रंथ साहिब' के आरंभ में ही संकलित करवाया था। संस्कृत, अरबी और फारसी के तत्सम एवं तद्भव शब्दों से सुसज्जित इस पावन बाणी का एक नमूना उदाहरणार्थ प्रस्तुत है :

जीअ जाति रंगा के नाव ॥
सभना लिखिआ वुड़ी कलाम ॥ . . .
कुदरति कवण कहा वीचारु ॥
वारिआ न जावा एक वार ॥
जो तुधु भावै साई भली कार ॥
तू सदा सलामति निरंकार ॥ (पन्ना ३)

इस उदाहरण में विद्यमान शब्दों को विचारने पर अत्यंत रोचक तथ्य सामने आते हैं, यथा :

संस्कृत-शब्दावलि : 'जीअ' ('जीव' का तद्भव रूप), 'वीचारु' (विचार), 'वारिआ' ('न्योछावर' का तद्भव रूप), 'भावै' ('भावित' का तद्भव रूप), 'सदा निरंकार' (दोनों 'तत्सम रूप')।

अरबी भाषा की शब्दावलि : कलाम (क़लाम), कुदरति (क़दरत); सलामति (सलामत)।

फारसी भाषा के शब्द : रंगा (रंग); वार।

संस्कृत तथा फारसी शब्दावलि का समन्वय: 'जाति' (संस्कृत) = 'ज़ात' (फ़ारसी); वार (संस्कृत और फ़ारसी)।

'सभना', 'लिखिआ', 'वुड़ी' तथा 'तुधु' पर पंजाबी भाषा का रंग लक्षित होता है। भाषायी समन्वय की ऐसी सुंदर झलक अन्य गुरु साहिबान की बाणी में भी दृश्यमान है, यथा :

श्री गुरु अंगद देव जी

नालि इआणे दोसती वडारू सिउ नेहु ॥
पाणी अंदरि लीक जिउ तिस दा थाउ न थेह ॥ (पन्ना ४७४)

'दोसती' और 'अंदरि' शब्द फारसी भाषा के तत्सम रूप हैं। 'लीक' शब्द को कोशकारों ने संस्कृत के 'लिख' शब्द से व्युत्पन्न माना है।[१] 'इआणे'[२] की निरुक्ति संस्कृत शब्द 'अज्ञान' तथा नेह की उसी भाषा के 'स्नेह' से हुई है। 'थाउ न थेह' सदगुरु जी का स्वरचित मुहावरा है, जिससे संस्कृत शब्द 'स्थान' की सुगंधि आती है।

श्री गुरु अमरदास जी

मंमै मति हिरि लई तेरी मूड़े
हउमै वडा रोगु पइआ ॥
अंतर आतमै ब्रहमु न चीन्हिआ
माइआ का मुहताजु भइआ ॥ (पन्ना ४३५)

'रागु आसा' में श्री गुरु नानक देव जी

*Flat No. 901, Tower No. D-3, Sagar Darshan Towers, Palm Beach Rd., Sect. 18Nerul, Navi Mumbai-400706

ने 'पटी' शीर्षक तले पावन बाणी उच्चारण की थी। उन्हीं के अनुकरण पर तीसरे गुरु श्री गुरु अमरदास जी ने इस शैली को अपना कर अपनी बाणी उच्चारण की थी। श्री गुरु अमरदास जी ने 'मति हिरि लई'[३] हिन्दी मुहावरे तथा 'मुहताजु भइआ'[४] द्वारा अरबी भाषा का रंग पेश करते हुए दूसरे गुरु श्री गुरु अंगद देव जी की भांति मुहावरेगोई का आदर्श स्थापित किया। 'रागु आसा' में रचित पहले और तीसरे गुरु साहिब की 'पटी' शीर्षक कृतियों की तुलना करते हुए प्रोफेसर साहिब सिंघ ने लिखा है :

मन ऐसा लेखा तूं की पड़िआ ॥
लेखा देणा तेरै सिरि रहिआ ॥ (पन्ना ४३४)

'रहाउ' की इन तुकों के साथ श्री गुरु नानक देव जी की 'पटी' की 'रहाउ' की तुक जोड़ कर पढ़ो :

मन काहे भूले मूड़ मना ॥
जब लेखा देवहि बीरा तउ पड़िआ ॥ (पन्ना ४३२)

लफ्जों (शब्दों) और विचारों (ख्यालों) की एकरूपता स्पष्ट रूप में दिखाई पड़ती है कि श्री गुरु अमरदास जी के पास श्री गुरु नानक देव जी की बाणी मौजूद (विद्यमान) थी।[५]

भक्त-बाणी के मूल रूप की सुरक्षा

भाषायी समन्वय का यह उपहार श्री गुरु नानक देव जी ने अपने परवर्ती गुरु साहिबान को जहां भेंट किया वहीं अपनी 'उदासियों' (धार्मिक यात्राओं) के दौरान भक्त साहिबान की जो भी बाणी यत्र-तत्र प्राप्त की उसे भी उन्होंने उसके मूल स्वरूप में सौंप दिया। दक्षिण भारत से जुड़ा महाराष्ट्र प्रांत पश्चिमी भारत के अंतर्गत आता है। महाराष्ट्र की मराठी भाषा की लिपि संस्कृत-हिन्दी वाली 'नागरी' ही है। इस भाषा में संस्कृत शब्दावली के ही बहुधा दर्शन होते हैं, जैसा कि भक्त नामदेव जी के 'मराठी अभंग' (Religious Marathi hymn) में दिखाई पड़ते हैं, यथा :

पांचमुखी रुद्र स्वयं करी स्तूति।
चहूं मुखी कीर्ति वर्णी ब्रह्मा।
देवी देव सर्व विस्मयो पावती।
विठोबा चीख्याती कोण वाणी। . . .
नामा म्हणे तुज सकल समान।
माझे दोष गुण मानी काय।[६]

अर्थ : पांच मुंहों वाले रुद्र (शिव जी) स्वयं तुम्हारा स्तुतिगान करते हैं। चार मुखों वाले ब्रह्मा जी तुम्हारे कीर्ति-गान में जुटे रहते हैं। सभी देवी-देवता (इसे देखकर) विस्मित रह जाते हैं। हे विठोबा! ('विट्ठल'; जिसका उल्लेख श्री गुरु ग्रंथ साहिब में बीठल (पन्ना ४८५); बीठला (पन्ना ११६५); बीठलु (पन्ना १३१८); बीठलो (पन्ना ५२५); बीठुला (पन्ना ११९६); बीठलाइ (पन्ना ९८८) तथा बीठुलु (पन्ना १३५१) के रूप में हुआ है। तुम्हारी ख्याति का वर्णन भला किन शब्दों में किया जाए? भक्त नामदेव जी का कथन है कि तुम्हारे लिए सभी (सांसारिक) प्राणी एक समान हैं। इसलिए भले ही मुझ में गुण हों या दोष, आप इनकी ओर ध्यान न देकर (मुझ पर सदा) कृपा ही करते हो।

किन्तु श्री गुरु नानक देव जी के पास भक्त नामदेव जी का एक ऐसा पद भी सुरक्षित था जिसमें फारसी-अरबी शब्दों की भरपूरता थी। श्री गुरु ग्रंथ साहिब का संपादन करते समय श्री गुरु अरजन देव जी ने उसे यथावत अंकित कर दिया था। इसका मूल पाठ प्रस्तुत है:

हले यारां हले यारां खुसिक्खबरी ॥
बलि बलि जाउं हउ बलि बलि जांउ ॥
नीकी तेरी बिगारी आले तेरा नाउ ॥१॥रहाउ॥
कुजा आमद कुजा रफती कुजा मे रवी ॥
द्वारिका नगरी रासि बुगोई ॥१॥

खूबु तेरी पगरी मीठे तेरे बोल ॥
द्वारिका नगरी काहे के मगोल ॥२॥
चंदीं हजार आलम एकल खानां ॥
हम चिनी पातिसाह सांवले बरनां ॥३॥
असपति गजपति नरह नरिंद ॥
नामे के स्वामी मीर मुकंद ॥४॥ (पन्ना ७२७)

इस 'शबद' में प्रयुक्त 'हले यारां' (अरे मित्र), खुसिक्खबरी (खुशखबरी=शुभ सूचना); 'कुजा आमद' (कहां से आया है)' कुजा रफती (कहां गया था); 'हजार आलम' (हजारों संसार); 'मुगोल' (तुर्किस्तान की एक कौम = मुगल खानदान), 'पातिसाह' (बादशाह, सम्राट), 'आले (उत्तम) तथा मीर मुकंद (बड़े-बड़े सरदार) फारसी के शब्द हैं।[७] शेष शब्द हिन्दी की लोक भाषाओं (ब्रजादि) से प्रभावित हैं। असपति (अश्वपति), गजपति, नरह नरिंद (नरः नरेन्द्र) तथा मुकंद 'कोष्ठक' में दिए गए संस्कृत शब्दों के तद्भव रूप हैं।

भक्त नामदेव जी के कई 'शबद' ऐसे भी हैं जिनमें मराठी शब्द बहुल मात्रा में दिखाई पड़ते हैं। उन्हें भी श्री गुरु अरजन देव जी ने उनके मूल रूप में संकलित करवा दिया था। एतदर्थ यह पद प्रस्तुत है :

पहिल पुरीए पुंडरक वना ॥
ता चे हंसा सगले जनां ॥
क्रिस्ना ते जानऊ हरि हरि नाचंती नाचना ॥ . . .
तू कुनु रे ॥ मै जी ॥ नामा ॥ हो जी ॥
आला ते निवारणा जम कारणा ॥३॥४॥
(पन्ना ६९३)

इसमें प्रयुक्त 'चे' शब्द हिन्दी के 'के' (संबंध कारक) का चिन्ह है। चौथे चरण में विद्यमान 'आला' शब्द का अर्थ है 'आया'।

भक्त पीपा जी राजस्थान के निवासी थे। उनका एक ही पद श्री गुरु ग्रंथ साहिब में संकलित है। उसमें राजस्थानी रंग साफ झलकता है, यथा :

कायउ देवा काइअउ देवल काइअउ जंगम जाती ॥
काइअउ धूप दीप नईबेदा काइअउ पूजउ पाती ॥ . . .
जो ब्रहमंडे सोई पिंडे जो खोजै सो पावै ॥
पीपा प्रणवै परम ततु है सतिगुरु होइ लखावै ॥
(पन्ना ६९५)

'कायउ' तथा 'काइअउ' का अर्थ है 'काया में'। इन पर राजस्थानी भाषा की छाप नजर आती है। 'नईबेदा' संस्कृत के 'नैवेद्य' तथा 'परम ततु' संस्कृत के 'परम तत्व' का तद्भव रूप हैं। 'पावै' तथा 'लखावै' में 'ब्रज भाषा' की सुगंधि आती है।

हिन्दी की स्थानीय बोलियों (उप-भाषाओं) में जिस प्रकार 'अवधी' (अयोध्या के आसपास की बोली), ब्रजभाषा (मथुरा-वृंदावन क्षेत्र की बोली) तथा भोजपुरी (पूर्वी उत्तर प्रदेश तथा बिहार की बोली) का परिगणन होता है इसी प्रकार पंजाबी की भी अनेक उपभाषाएं हैं। 'लहिंदी' पंजाबी की एक उपभाषा है, जिसका प्रयोग सन् १९४७ में भारत-विभाजन से पूर्व पंजाब के दक्षिण-पश्चिम भाग में होता था। अब यह क्षेत्र पाकिस्तान के अंतर्गत आता है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में संकलित शेख फरीद जी के एक शबद से 'लहिंदी' की खुशबू आती है, यथा:

फरीदा जे तू अकलि लतीफु काले लिखु न लेख ॥
आपनड़े गिरीवान महि सिरु नींवां करि देखु ॥
फरीदा जो तै मारनि मुकीआं तिन्हा न मारे घुंमि ॥
आपनड़ै घरि जाईऐ पैर तिन्हा दे चुंमि ॥
(पन्ना १३७८)

अर्थ : यदि तुम समझदार (= अकलि लतीफ) हो तो दूसरे लोगों के बुरे कर्मों की

समीक्षा न करो, बल्कि अपने गरेबान में झांककर (अर्थात् मन के भीतर) देखो (कि तुम्हारे अपने कर्म कैसे हैं?) यदि कोई तुम्हें घूंसे मारता (अर्थात् दुख देता) है तो तुम लौट कर उसी तरह का व्यवहार न करो। तुम्हें चाहिए कि उनके पैर चूम कर (अर्थात् उन्हें भरपूर सम्मान देकर) अपने घर (शांतिपूर्वक) लौट आओ।[८]

पंजाब की 'पुआधी बोली' में हिन्दी के सर्वनाम 'अपने' को 'अपने' ही बोला जाता है, किन्तु 'माझी बोली' में इसका उच्चारण 'आपणे' तथा 'लहिंदी' में 'आपनड़े' बन जाता है। शेख फरीद जी जन्मत: मुसलमान थे। अत: उनकी भाषा में 'अकलि लतीफ' और अपने 'गरेबान में झांकना' जैसे अरबी-फारसी के मुहावरों पर पंजाबी लोकभाषा 'लहिंदी' का रंग चढ़ना एक स्वाभाविक बात है। इसी कारण फारसी का 'गिरेबान' (संस्कृत में 'ग्रीवा'=गला; गर्दन) शब्द उपर्युक्त पद में 'गिरीवान' के रूप में प्रयुक्त हुआ है।[९]

यद्यपि भक्त कबीर जी का लालन-पालन एक मुस्लिम परिवार में हुआ था, फिर भी 'वाराणसी' में जन्म होने के कारण उनकी भाषा तथा मुहावरों में हिन्दी की झलक मिलना एक स्वाभाविक बात है। एतदर्थ उनके दो 'श्लोक' प्रस्तुत हैं :

कबीर है गइ बाहन सघन धन लाख धजा फहराहि ॥
इआ सुख ते भिख्या भली जउ हरि सिमरत दिन जाहि ॥
कबीर सभु जगु हउ फिरिओ मांदलु कंध चढाइ ॥
कोई काहू को नही सभ देखी ठोकि बजाइ ॥
(पन्ना १३७०)

'झंडा फहराना' (प्रभावशाली होना) हिन्दी का मुहावरा है, जिसका मूल भक्त कबीर जी के *'धजा फहराहि'* (ध्वजा फहराना) में विद्यमान है। इसी प्रकार हिन्दी मुहावरे 'ढोल पीटना' (घूम-फिर कर जोर-जोर से पूछना या घूमना) का मूल स्वरूप भक्त जी के *'मांदलु कंध चढाइ'* में निहित है। 'ठोक बजाना' (खूब परखना) तो स्वत: ही *'ठोकि बजाइ'* में पद के अनुप्रासांत में दृश्यमान है।

अंतत: हम कह सकते हैं कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब में जहां विभिन्न भाषाओं का सुमेल दृष्टिगोचर होता है वहीं पर भक्त-बाणी के मूल स्वरूप को सुरक्षित रखने में श्री गुरु अरजन देव जी की सूझ-बूझ अत्यंत प्रशंसनीय है।

पाद-टिप्पणियां

१. बाबूराम चन्द्र वर्मा : मानक हिन्दी कोश, पृष्ठ ११३४; वाराणसी, संवत् २००८
२. भाई काहन सिंघ (संपा.) : महान कोश; पृष्ठ ८८; पटियाला, सन् १९६०
३. उपर्युक्त, पृष्ठ ७०७
४. उपर्युक्त, पृष्ठ ७३३
५. प्रो. साहिब सिंघ : श्री गुरु ग्रंथ साहिब दरपण, सतवीं पोथी, पृष्ठ ४६७; जालंधर,सन् १९७०
६. डॉ. र. रा. गोसावी (संपा.) सकल संत गाथा, भाग पहला, पृष्ठ ५११; पुणे, सन् २०००
७. डॉ. गुरचरण सिंघ (संपा.) श्री गुरु ग्रंथ साहिब विचले फारसी-अरबी मूलक शबदां दा कोश; पृष्ठ १०८; मोहाली, सन् २००३
८. प्रो. साहिब सिंघ : श्री गुरु ग्रंथ साहिब दरपण, दसवीं पोथी, पृष्ठ ३०६-३०७
९. डॉ. गुरचरण सिंघ (संपा.) : श्री गुरु ग्रंथ साहिब विचले फारसी-अरबी मूलक शबदां दा कोश, पृष्ठ ९१.



श्री गुरु ग्रंथ साहिब में लोक-काव्य रूप : वार सत, थिती, सलोक

*-डॉ. रछपाल सिंघ**

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में बहुत-से लोक-काव्य रूपों का सम्बंध किसी दिन अथवा थिति से हो, उसको तिथि-वाचक लोक-काव्य रूप की संज्ञा दी जाती है।

वार सत : वार सत को सतवारा भी कहा जाता है। सप्ताह के सात दिनों को आधार बना कर रचित काव्य को वार सत कहा जाता है। अगर इसमें रविवार अथवा सप्ताह का कोई दिन दोबारा गिन लिया जाए तो उसको अठवारा कहा जाता है। बारह माह जैसे वार सत/सतवारा में भी बिरहा की सुर प्रधान होती है। इसमें मिलन की तड़प, प्रेम-वेग में अपने प्यारे की प्रतीक्षा के लिए बेसबरी है असंतोष पैदा करती है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दो सतवारे उपलब्ध हैं। गउड़ी राग में "वार कबीर जीउ के" (पन्ना ३४४) शीर्षक पर सतवारा अंकित है। श्री गुरु अमरदास जी ने बिलावल राग में (पन्ना ८४१) "वार सत" की रचना की है। बाणीकारों ने सतवारे का नाम "वार सत" करके अंकित किया है। भक्त कबीर जी ने इसकी रचना आठ बंदों में की है और श्री गुरु अमरदास जी ने दस-दस बंदों के दो छंदों की रचना की है। भक्त कबीर जी की बाणी में से वार सत का उदाहरण इस प्रकार है :

आदित करै भगति आरंभ ॥
काइआ मंदर मनसा थंभ ॥
अहिनिसि अखंड सुरही जाइ ॥
तउ अनहद बेणु सहज महि बाइ ॥ (पन्ना ३४४)

श्री गुरु अमरदास जी की बाणी में सतवारे की रचना की मुख्य विशेषता, सतवारे का आरंभ "ऐतवार", जिसको गुरु साहिब ने "आदित वारि" कहा है, से आरंभ किया है :

आदित वारि आदि पुरखु है सोई ॥
आपे वरतै अवरु न कोई ॥ (पन्ना ८४१)

सप्ताह के सारे दिनों के साथ आदि काल से शुभ-अशुभ की भावना की रुचि प्रबल रही है, परन्तु श्री गुरु अमरदास जी की बाणी में ऐसी प्रचलित लोक-भावना के प्रति खंडनात्मक सुर विद्यमान है, जैसे :

छनिछरवारि सउण सासत बीचारु ॥
हउमै मेरा भरमै संसारु ॥
मनमुखु अंधा दूजै भाइ ॥
जम दरि बाधा चोटा खाइ ॥
गुर परसादी सदा सुखु पाए ॥
सचु करणी साचि लिव लाए ॥ (पन्ना ८४१)

गुरबाणी में वार (दिनों) और थितियों की संख्या क्रमशः सात और पंद्रह दर्शायी गई है :

पंद्रह थितीं तै सत वार ॥
माहा रुती आवहि वार वार ॥
दिनसु रैणि तिवै संसारु ॥
आवा गउणु कीआ करतारि ॥ (पन्ना ८४२)

थिती : संस्कृत का शब्द "तिथि", पंजाबी में वर्ण-परिवर्तन के कारण "थिती" हो गया है। इसका अर्थ है—चंद्रमा की चाल के हिसाब से गिनी जाने वाली दोनों पक्षों की तारीखें। चंद्रमा के घटने-बढ़ने से 'सुदी', 'वदी' की थितें अथवा

**पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, क्षेत्रीय खोज केंद्र, गुरदासपुर (पंजाब)-१४३५१८*

तिथियों को लेकर जो काव्य रूप उचारा जाता था उस काव्य रूप को "थिती" कहा जाने लगा। यह "तिथि" का ही बदला हुआ रूप है।

चंद्रमा की तारीखों के हिसाब से एकम से लेकर अमावस तक १५ रातों के आधार पर इसको १५ पदों में ही लिखा जाता है। चंद्रमा के दो मुख्य पक्षों—अंधेरा और चानण (प्रकाश), जो क्रमश: अमावस्या और पूर्णमाशी के हैं, को गुरबाणी में रूपांतरण रूप में प्रस्तुत किया गया है। इस लोक-काव्य रूप में अंधेरे पक्ष को विछोड़े की व्याकुलता और चानणे पक्ष में मिलाप का सुख-चित्रण किया गया है। ये पंद्रह थितें इस प्रकार हैं—एकम, दूज, तीज, चौथ, पंचमी, छठी, सप्तमी, अष्टमी, नउमी, दसमी, एकादसी, दुआदसी, त्रैदसी, चौदस, अमावस। अगर इसमें पूर्णमाशी को भी गिन लिया जाये तो थितों की गिनती १६ हो जाती है।

आदि काल से लोक-मन ने इन थितों को भी वहमों-भ्रमों से संबंधित कर दिया है और कई प्रकार की पूजा-विधियां, रहु-रीतें आदि प्रचलित हो गई हैं। अमावस्या और पूर्णमाशी के अनुष्ठानों का आधार भी इस प्रकार के लोक-विश्वास ही हैं।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में "थिती" शीर्षक के अंतर्गत निम्नलिखित बाणियां अंकित हैं :

(क) श्री गुरु नानक देव जी : राग बिलावल (पन्ना ८३८)

(ख) श्री गुरु अरजन देव जी : राग गउड़ी (पन्ना २९६)

(ग) भक्त कबीर जी : राग गउड़ी (पन्ना ३४३)

बाणीकारों ने समय के विभिन्न पक्षों से रचना के बंद भी विभिन्न प्रकारी रचे हैं। हर पक्ष चानणे पक्ष अर्थात् एकम थिती से आरंभ होता है, जैसे :

—एकम एकंकारु निराला ॥
अमरु अजोनी जाति न जाला ॥
अगम अगोचरु रूपु न रेखिआ ॥
खोजत खोजत घटि घटि देखिआ ॥
(पन्ना ८३८)

—एकम एकंकारु प्रभु करउ बंदना धिआइ ॥
गुण गोबिंद गुपाल प्रभ सरनि परउ हरि राइ ॥
(पन्ना २९६)

श्री गुरु अमरदास जी की बाणी में पंद्रह थितों में से केवल चार थितों का ही उल्लेख मिलता है:

नउमी नेमु सचु जे करै ॥
काम क्रोधु त्रिसना उचरै ॥
दसमी दसे दुआर जे ठाकै एकादसी एकु करि जाणै ॥
दुआदसी पंच वसगति करि राखै तउ नानक मनु मानै ॥
ऐसा वरतु रहीजै पाडे होर बहुतु सिख्‍ख किआ दीजै ॥ (पन्ना १२४५)

गुरबाणी में थितों, वारों के साथ शुभ-अशुभ की भावना और इस प्रवृत्ति के अंतर्गत प्रचलित रहु-रीतों की पालना करने की मनाही की गई है :

थिती वार सभि सबदि सुहाए ॥
सतिगुरु सेवे ता फलु पाए ॥ . . .
थिती वार ता जा सचि राते ॥
बिनु नावै सभि भरमहि काचे ॥ . . .
आपे पूरा करे सु होइ ॥
एहि थिती वार दूजा दोइ ॥
सतिगुर बाझहु अंधु गुबारु ॥
थिती वार सेवहि मुगध गवार ॥ (पन्ना ८४२)

अत: थिती वार के नाम पर भ्रम करने वाले को गुरबाणी में "मुगध गवार" कहा गया है।

सलोक : सलोक (श्लोक) के शाब्दिक अर्थ यश,

महिमा, स्तुति, प्रशंसा आदि किए जाते हैं। सलोक ऐसा काव्य-रूप है, जिसमें किसी महापुरुष का यश-गायन किया जाता है। सलोक एक प्रसिद्ध लोक-काव्य-रूप है, जो प्रशंसा, स्तुति आदि अर्थों का धारणी है। यह पंजाबी का सबसे प्राचीन लोक-काव्य-रूप है। इसकी परंपरा प्राचीन काल से जुड़ी हुई है। सलोक छोटे आकार की रचना होने के कारण मानवी स्मृति में आसानी से टिक जाती थी। इसी कारण यह आदि काल से ही लोक मन की अभिव्यक्ति के लिए बढ़िया रूप था। पंजाबी साहित्य में इसका प्रयोग प्रथम रूप में शेख फरीद जी ने किया।

सरलता, स्पष्टता, स्वतंत्रता, लघु-आकारता, सलोक के मुख्य लक्षण हैं। आम तौर पर यह दो तुकों का ही होता है। इसका छंद "दोहिरा" है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में सलोक में दो तुकों से लेकर छब्बीस तुकें तक भी प्रयोग हुई हैं। कई और लोक-काव्य-रूप, जैसे माहीआ, डखणे, फुनहे आदि सलोकों का ही विस्तृत रूप हैं। इसलिए सलोक को इन लोक-काव्य-रूपों का जन्म-दाता भी कहा जा सकता है।

गुरबाणी में सलोक किसी निश्चित आकार में बंधे हुए नहीं हैं। इसमें छोटे और बड़े दो प्रकार के सलोकों की रचना हुई है। इन सलोकों का विषय-पक्ष भी गुरबाणी में बहु-भांति है। सलोकों में प्रभु की स्तुति की गई है, गुरमुख अर्थात् प्रभु-सेवक की सराहना की गई है, मनमुख व्यक्ति की निंदा भी की गई है, जैसे:

ध्रिगु एह आसा दूजे भाव की जो मोहि माइआ चितु लाए ॥
हरि सुखु पल्हरि तिआगिआ नामु विसारि दुखु पाए ॥
मनमुख अगिआनी अंधुले जनमि मरहि फिरि आवै जाए ॥ . . .
नामि रते जन सदा सुखु पाइन्हि जन नानक तिन बलि जाए ॥ *(पन्ना ८५०-५१)*



गीत

बीज थां-थां 'ते महिकां, वंड छावां शहिर सारे।
फुल्ल रूहां दा खेड़ा, रुक्ख मनां दे हुलारे।
किते फुल्लां कोल बहि के दिल फोल के तां वेख,
रस जिंदगी 'च रब्बी, कदे घोल के तां वेख,
फिर छड्ड देवेंगा तूं, बाहरों लब्भणे सहारे।
बीज थां-थां 'ते . . .
रुक्ख धरती दे पुत्त, छावां रुक्खां दा ने माण,
साफ सुथरीआं हवावां, हुंदीआं रुक्खां दी पछाण,
हरा-भरा तेरा शहिर, देऊ सुरगी नज़ारे।
बीज थां-थां 'ते . . .
धरम आपणा बणा तूं मनुक्खता दी सेवा,
जाऊ लिखिदा नसीबीं, रब्बी रहिमतां दा मेवा,
सारे लग्गणे मनुक्ख, तैनूं अक्खीआं दे तारे।
बीज थां-थां 'ते . . .
बोल मोह भरे शहिर दी हवा उत्ते लिख,
पिआर करना सिक्खा, पिआर करना वी सिक्ख,
रुक्खे बोल हुंदे सोहणिआ, दिलां लई अंगिआरे।
बीज थां-थां 'ते . . .
कुझ पैसा, कुझ समां, इस शहिर लेखे ला,
मिट्टी शहिर दी दे नाल, कर 'कोमला' वफा,
है सफाई 'च खुदाई, लिख थां-थां 'ते नाहरे।
बीज थां-थां 'ते . . .



-स. सतनाम सिंघ कोमल, २४८, अर्बन अस्टेट, लुधियाना-१४१०१०

श्री गुरु ग्रंथ साहिब की महाकल्याणकारी बाणी

*-स. स्वर्ण सिंघ भौर**

धन्न-धन्न श्री गुरु ग्रंथ साहिब चारों वर्णों के सांझे गुरु हैं। मानव समानता का उपदेश बख्शिश करते हैं, परमेश्वर की भक्ति का मार्ग दर्शाकर आत्मिक अगुआई देते हैं। इसमें छः गुरु साहिबान--श्री गुरु नानक देव जी, श्री गुरु अंगद देव जी, श्री गुरु अमरदास जी, श्री गुरु रामदास जी, श्री गुरु अरजन देव जी और श्री गुरु तेग बहादर जी की पावन बाणी अंकित है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में भारत खंड के प्रत्येक भाग में से १५ भक्त साहिबान की पावन बाणी अंकित की गयी है। इसके अतिरिक्त ११ भट्टों और गुरसिक्खों की बाणी को अंकित करके सम्मान बख्शिश किया गया है। भक्त साहिबान अलग-अलग धर्मों, क्षेत्रों से संबंधित हैं जिनकी बाणी अंकित की गई है। भाषाओं की शब्दावली को दृष्टि से ओझल नहीं किया गया। फारसी में भी धुर की बाणी अंकित है :

यक अरज गुफतम पेसि तो दर गोस कुन करतार ॥
हका कबीर करीम तू बेऐब परवदगार ॥
(पन्ना ७२१)

बागड़ी उपभाषा जो बीकानेर, जयपुर, जोधपुर में प्रचलित है, राजस्थान में बोली जाती है, उसके भी शब्द उपयोग में लाए गए हैं। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में संस्कृत के शब्द भी विद्यमान हैं, जैसे कि :

परमादि पुरखमनोपिमं सति आदि भाव रतं ॥
परमदभुतं परक्रिति परं जदिचिंति सरब गतं ॥ *(पन्ना ५२६)*

गुजराती भाषा में रची बाणी भी हमारे दृष्टिगोचर होती है:

ईभै बीठलु ऊभै बीठलु बीठल बिनु संसारु नही ॥ *(पन्ना ४८५)*

जहां हरेक भाषा में बाणी अंकित की गई है वहीं श्री गुरु ग्रंथ साहिब में बड़ी विशेषता यह है कि गुरबाणी में छुआ-छूत, जात-पात जैसी सामाजिक बुराइयों और लोभ, यज्ञ, व्रत आदि कर्म-कांडों, देवी-देवताओं की उपासना और अवतारवाद को खंडित किया गया है। गुरबाणी ने अत्याचार करने वाले राजाओं को शींह और उनके अहलकारों अथवा अहला अधिकारियों को कुत्ते कहकर उनके कुकृत्यों की आलोचना की है। समाज में फोकट पाखंड जाल को अच्छी तरह बेनकाब किया गया है। जो किरत, सेवा और संतोष का मार्ग भूले हुए थे उन्हें निर्मल किरत की प्रेरणा इस प्रकार दी गयी है :

घालि खाइ किछु हथहु देइ ॥
नानक राहु पछाणहि सेइ ॥ *(पन्ना १२४५)*

गुरबाणी सिक्ख के जीवन का केन्द्र है। गुरबाणी के साथ जुड़े रहना सिक्ख का जीवन-उद्देश्य है, टूट जाना सिक्ख के लिए आत्मिक मृत्यु है :

बाणी गुरू गुरू है बाणी विचि बाणी अंम्रितु सारे ॥
गुरु बाणी कहै सेवकु जनु मानै परतखि गुरू निसतारे ॥ *(पन्ना ९८२)*

शहीदों के सिरताज श्री गुरु अरजन देव जी ने श्री हरिमंदर साहिब का नींव-पत्थर

**गांव व डाक: सरली कलां, तहसील खडूर साहिब, जिला तरनतारन (पंजाब)*

हजरत साईं मीआं मीर जी से १ माघ संवत् १६४५ को रखवाया। यह हमारा शिरोमणि धाम है। चारों वर्णों में से कोई भी आये यहां सबको समान सत्कार मिलता है।

श्री गुरु रामदास जी द्वारा बनवाया सरोवर भी सभी धर्मों के लिए सांझा है। इसीलिए ही श्री गुरु अरजन देव जी ने फरमान किया है :

संतहु रामदास सरोवरु नीका ॥
जो नावै सो कुलु तरावै उधारु होआ है जी का ॥ (पन्ना ६२३)

सिक्ख धर्म में बाउलियां एवं सरोवर सभी धर्मों के लोगों के लिए सांझे हैं। इसी तरह गुरु का लंगर भी सभी के लिए सांझा है। संगत व पंगत में से सांझीवालता का आदेश मिलता है। गुरु-घर चंदन के समान है। तभी तो भक्त कबीर जी फरमान करते हैं :

कबीर चंदन का बिरवा भला बेढ़िओ ढाक पलास ॥
ओइ भी चंदनु होइ रहे बसे जु चंदन पासि ॥
(पन्ना १३६५)

चंदन को लकड़हारा कुल्हाड़े के साथ काटता है और आरी के साथ टुकड़े करके बेचता है। चंदन ने कभी गुस्सा नहीं किया कि इसने मुझे काटा है, मैं इसको सुगंधि न दूं। कुल्हाड़े और आरी के दांतों में से भी सुगंधि आने लगती है। गुरु की बाणी सभी धर्मों के लोगों के लिए सांझी है, सभी धर्मों के लोगों को निर्मल उपदेश देती है और सेवा-भाव के साथ जोड़ती है। श्री गुरु अरजन देव जी गोइंदवाल से जब पावन बाणी की पोथियां लेकर आये तब सिक्खों ने विनती की, "महाराज! आप गोइंदवाल से नंगे चरणों के साथ अमृतसर आये हैं। आप इन पोथियों पर चंवर करते आये हो। क्या इन पोथियों का दर्जा आपसे बड़ा है?" तब आप जी ने फरमान किया :*"पोथी परमेसर का थानु ॥"* यह पोथी रब का घर है। बाणी का जहाज पावन स्वरूप में तैयार हो गया तो बाबा बुड्ढा साहिब जी को प्रथम ग्रंथी नियुक्त किया गया। सतिगुरु जी स्वयं उस दिन से संगत में विराजमान होने लग पड़े। जो चंवर गुरु साहिब पर होता था वह श्री गुरु ग्रंथ साहिब पर होने लग पड़ा। सतिगुरु जी स्वयं गुरबाणी को माथा टेकते थे। श्री गुरु नानक साहिब जी का फरमान है :

सबदु गुरू सुरति धुनि चेला ॥ (पन्ना ९४३)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब का पूर्ण सत्कार तभी हो सकता है यदि कोई बाणी रूप हुक्म को पूर्णरूपेण माने :

--सेवक सिक्ख पूजण सभि आवहि सभि गावहि हरि हरि ऊतम बानी ॥
गाविआ सुणिआ तिन का हरि थाइ पावै जिन सतिगुर की आगिआ सति सति करि मानी ॥
(पन्ना ६६९)

--सतिगुर नो सभु को वेखदा जेता जगतु संसारु ॥
डिठै मुकति न होवई जिचरु सबदि न करे वीचारु ॥ (पन्ना ५९४)

श्री गुरु अरजन देव जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी रूपमान किया जो बहुत बड़ा उपकार है। यह धुर की बाणी है। इस बाणी रूप अमृत की एक बूंद को पीकर चिड़ियों (सिक्खों) ने बाजों (मुगलों) में भगदड़ मचा दी। मुट्ठी भर सिंघ हंसते-हंसते अपने देश के लिए शहीद हो गए, धर्म की खातिर चरखड़ियों पर चढ़े, खोपरियां उतरवाकर, बच्चे शहीद करवाकर, हुक्म को मीठा करके, प्रिय करके माना, मन को अडोल रखकर, दुख तथा सुख को बराबर करके जाना और शबद तथा सुरति का मिलाप करके कहा:

--अंम्रित बाणी हरि हरि तेरी ॥
सुणि सुणि होवै परम गति मेरी ॥

जलनि बुझी सीतलु होइ मनूआ
सतिगुर का दरसनु पाए जीउ ॥ (पन्ना १०३)
--गुरबाणी इसु जग महि चानणु करमि वसै मनि आए ॥ (पन्ना ६७)

गुरसिक्खों की संगत करने से पाप दूर हो जाते हैं। भाई गुरदास जी ने गुरसिक्खों के लिए १२वीं वार की दूसरी पउड़ी में फरमान किया है:

कुरबाणी तिन्हां गुरसिक्खां पिछल राती उठि बहंदे।
कुरबाणी तिन्हां गुरसिक्खां अंम्रितु वेलै सरि नावंदे। . . .
कुरबाणी तिन्हां गुरसिक्खां गुरबाणी निति गाइ सुणंदे।

अंतिम पंक्तियों में कथन किया है :

कुरबाणी तिन्हां गुरसिक्खां भाइ भगति गुरपुरब करंदे।
गुर सेवा फलु सुफल फलंदे ॥

आज बहुत-से अंधविश्वासी लोग देहधारक नकली गुरुओं की शरण में घूमते देखे जाते हैं, तथाकथित बाबाओं के समक्ष घुटने टेक कर अपनी कमाई को बर्बाद करते हैं। यह अज्ञानता का अंधकार कब दूर होगा?



श्री गुरु ग्रंथ साहिब के बाणीकार : संक्षिप्त परिचय

(पृष्ठ २१ का शेष)

११. भट्ट हरिबंस जी पंजाब २

भट्ट कल सहार जी ने पांच गुरु साहिबान में हरेक की स्तुति गायन की। भट्ट कल सहार उन दस भट्टों के मुखिया थे जो उत्तर प्रदेश के रहने वाले थे। इन भट्टों ने श्री गुरु अंगद देव जी एवं अन्य गुरु साहिबान की स्तुति में सवैये रचे। ये सभी भट्ट संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश के अच्छे जानकार और सुकवि भी थे। ये सभी सच्चे भगवद्-भक्त थे जिन्होंने सारे भारत का भ्रमण किया था और अंततोगत्वा गुरु के चरणों में इन्हें शांति प्राप्त हुई।

सामान्य निष्कर्ष :

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में सिक्ख गुरु साहिबान के अलावा पंद्रह भक्त साहिबान की बाणी संकलित है, जिनके विषय में ऊपर की पंक्तियों में अलग-अलग संक्षिप्त परन्तु आवश्यक विवरण प्रस्तुत करने का विनम्र प्रयास किया है। पंद्रह भक्त साहिबान की जो बाणी श्री गुरु ग्रंथ साहिब में संकलित है इससे स्पष्ट ज्ञात होता है कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब को संकलित एवं संपादित करने में शहीदों के सिरताज श्री गुरु अरजन देव जी कितने उदारमना थे, उनकी दृष्टि कितनी उदार थी और वे समन्वय की कितनी विशाल बुद्धि लेकर उत्पन्न हुए थे। इस कारण श्री गुरु ग्रंथ साहिब में अपने समय के अत्यंत प्रतिष्ठित, अत्यंत लोकप्रिय और पहुंचे हुए संतों-महात्माओं एवं भक्त साहिबान की बाणी का उन्होंने सुंदर एवं पावन संकलन तैयार किया।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में गुरु-घर के निकटवर्ती गुरसिक्खों और फिर भट्ट कवियों की भी बाणी का संकलन अभूतपूर्व भाईचारे का द्योतक है। इस ग्रंथ में सबको यथोचित समादर दिया गया है। यहां जात-पात और धर्म-संप्रदाय की संकीर्णताओं से ऊपर उठकर हृदय की विशालता और उदारता का अचूक परिचय दिया गया है। ऐसा महान आध्यात्मिक ग्रंथ समस्त भारतीय वाङ्मय में कोई दूसरा नहीं है। आज भी जब हमारा देश विभिन्न धर्म-संप्रदायों, जातियों-गुटों में ग्रस्त, पीड़ित और आहत है, श्री गुरु ग्रंथ साहिब सुख, शांति और सद्भावना का संदेश सुना रहे हैं। पावन ग्रंथ का शत-शत अभिनन्दन!





कविता

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी

*-स. करनैल सिंघ 'सरदार पंछी'**

इस ज़मीन-ओ-अर्श का मेमार[१] है तो लफ़्ज़ है।
इन मनाजर[२] का कोई फनकार[३] है तो लफ़्ज़ है।
बात की शौकत[४] कोई शिंगार है तो लफ़्ज़ है।
अपने माअनी[५] से अगर सरशार[६] है तो लफ़्ज़ है।
आईने[७] का अक्स उसका बाल है तो लफ़्ज़ है।
संगबारी[८] में मुहाफिज[९] ढाल है तो लफ़्ज़ है।
हर दिल-ए-मग़मूम[१०] का इक आस्तां[११] है लफ़्ज़ ही।
ज़िदगी की धूप में इक सायबां[१२] है लफ़्ज़ ही।
दिल की धड़कन है सफ़ीना[१३], बादबां[१४] है लफ़्ज़ ही।
हिज्र भी है लफ़्ज़ इक दर्द-ए-निहां[१५] है लफ़्ज़ ही।
बे-जुबां मोहर-ए-बलब[१६] की भी जुबां है लफ़्ज़ ही।
और फिर शोला[१७] ब्यां आतिशफ़शां[१८] है लफ़्ज़ ही।
हक[१९]-ओ-बातिल[२०] के मुकाबिल[२१] गुफ्तगू[२२] है लफ्ज़ ही।
मानी-ए[२३]-दरपेश के भी रूबरू है लफ़्ज़ ही।
आरजू-ए[२४]-तिश्नगी का आबजू[२५] है लफ़्ज़ ही।
और सदफ[२६] से मोतियों की जुस्तजू[२७] है लफ़्ज़ ही।
जब मुकद्दस[२८] लफ़्ज़ मिल कर काफिला बन जाये है।
यह रूहानी तकद्दस[२९] 'गुरु ग्रंथ साहिब' कहलाये है।
सतिगुरु अरजन जी हैं इस 'ग्रंथ' के तरतीबकार[३०]।
जिसका होता है मुकद्दसतर[३१] ग्रंथों में शुमार[३२]।
जिसमें शेख फरीद, भीखन शाह के हैं सूफी विचार।
बहुत ही अमूल्य है सरमाया[३३]-ए-वहदत[३४]-निगार।
भक्त त्रिलोचन, भक्त जयदेव का आला कलाम[३५]।
सारी दुनिया में जिसे सिक्ख पढ़ते हैं हर सुबह-ओ-शाम।
इसमें शामिल है गुरु नानक की बाणी का सरूर।
और अंगद देव के अलफ़ाज[३६] से रब का जहूर[३७]।
तीसरे गुरु अमरदास और रामदास[३८] जी का नूर।
और अरजन देव जी का लाशऊरी[३९] में शऊर[४०]।
नौवें गुरु की तूलिका ने तोड़ा औरंग[४१] का ग़रूर[४२]।
लफ़्ज की वो मार मारी, हो गया सब चूर-चूर।
सतिगुर अरजन देव जी आलातरी[४३] थे मौसीकार[४४]।
'गुरु ग्रंथ साहिब' के हर शबद को राग का बख्शा मेआर[४५]।
रागिनी का अपना रस है राग भी है बख्तयार[४६]
जिसको सुन कर आदमी का दिल हो जाये ताजदार[४७]।
ताल के मिजराब[४८] से तारें हिला देता है यह।
सो रहे जज्बात[४९] को पल में जगा देता है यह।
सधना कसाई पूर्ण जुलाहा थे कबीर।
भक्त धन्ना जाट थे रूहानियत[५०] के दस्तगीर[५१]।
सैन थे तो नाई लेकिन फितरतन[५२] जोगी फकीर।
और भक्त रविदास जी थे रचनाकारी में बे-नजीर[५३]।
रूढ़िवादी इन पे रखते थे हिकारत[५४] की निगाह।
दी गुरु अरजन ने इनको ग्रंथ अपने में पनाह।
भट्ट थे दरबारी शायर और मुशर्रफ-उल-कलाम[५५]।
भट्ट कीरत, मथरा, गयंद और भिखा जिनके नाम।
बल, भल, हरबंस का दरबार में ऊंचा मकाम।
मयकदा वहदानियत[५६] के वास्ते सच को सलाम।
भट्ट जालप, सल, नल और साथी कल सहार।
थे सभी दरबार-ए-सतिगुरु में कलम के शहसवार[५७]।
ये वही थे जो किसी मंदिर में जा सकते न थे।
देवता के सामने सर को झुका सकते न थे।
कर नहीं सकते थे पूजा, भजन गा सकते न थे।

**नशेमन, पंजाब माता नगर, लुधियाना-१४१०१३, फोन : ०१६१-२५६४१६५, मो: ९४१७०-९१६६८*

शूद्र थे, प्रभु-भक्ति में चित्त लगा सकते न थे।
रूढ़िवादी खुद को इनके साये से रखते थे दूर।
अपनी ऊंची जात का था जिनको रावण सा गरूर।
सतिगुरु ने शायरी इनकी को ऐसा वर दिया।
'आदि ग्रंथ' में इन्हें अपने बराबर कर दिया।
जाविदानी[58] के लिये इन सबको 'अमृत सर' दिया।
इनके दबे सर को पहली बार ऊंचा कर दिया।
शायरी इन शायरों की काबिल-ए-ताज़ीम[59] थी।
गुरु नानक देव जी की भी यही तालीम[60] थी।
'गुरु ग्रंथ साहिब' में शामिल हुआ सब ऊंचे दर्जे का कलाम।
रूह-ए-इंसां[61] के लिये इक सेहतमंदाना[62] प्याम[63]।
लाज़मी है हक की रोटी और नेकी का तुआम[64]।
आदमी के वास्ते माल-ए-गनीमत[65] है हराम।
चोरी, धोखे और दगा से की कमाई ज़हर है।
लूट की दौलत से पाई, पाई-पाई ज़हर है।
इस ज़मीं पर रहने वालों का तो है बस एक खुदा।
कोई हो उनका अकीदा[66] कोई भी हो रास्ता।
यह ज़मीं है सबकी, सबकी चांद-सूरज की ज़िया[67]।
पेड़-पौधे, फूल-पत्ते, ओस, बादल और हवा।
है तो बस इन्सानियत ही रूह-ए-इन्सानी[68] की जात।
हो नहीं सकती हवा की, रौशनी, पानी की जात।
तुम छुपा सकते नहीं हो अल्लाह से कोई भी राज़।
उसकी निगह-ए-मोअतबर[69] में हैं सभी राज़-ओ-नियाज़[70]।
झूठ की पूजा कभी होती नहीं है कारसाज[71]।
रब को है मन्जूर सच्चे बन्दे की सच्ची नमाज़।
दूसरे की बहिन-बेटी पर रखे गन्दी निगाह।
ले के जाता है जहन्नुम[72] में है यह ऐसा गुनाह।
जन्म से या जात से होता नहीं कोई बड़ा।
कर्म ही करते हैं छोटे-बड़े का फैसला।
खून सबका एक है और एक धड़कन की सदा[73]।
सबकी इक मुस्कान, आंसू, आहें और सब्र-ओ-रज़ा[74]।
कर न पाये शूद्र, ब्राह्मण, क्षत्रि मिल कर तुआम।
जातवादी कशमकश[75] में हो गया भारत गुलाम।
इंसानियत के नाम यह एक प्रिय पैगाम है।
तीरगी[76] को रौशनी देना ही इसका काम है।
शबद-बाणी का हरफ अलहाम[77] ही अलहाम है।
रब की हस्ती से मुकरना बस ख्याल-ए-खाम[78] है।
इज्ज़[79] हो तो पारसाई[80] बख्शते 'गुरु ग्रंथ जी'।
गुमरही[81] को रहनुमाई बख्शते 'गुरु ग्रंथ जी'।

---

१. मेमार-निर्माणकारी, २. मनाजर-दृश्य, ३. फनकार-कलाकार, ४. शौकत-शोभा, ५. माअनी-अर्थ, ६. सरशार-मस्त, ७. आईने-दर्पण, ८. संगबारी-पत्थरों की मार, ९. मुहाफिज-रक्षक, १०. मगमूम-दुखी, ११. आस्तां-आश्रय, १२. सायबां-तम्बू, १३. सफीना-नाव, १४. बादबां-नाव का पाल, १५. दर्द-ए-निहां-गुप्त पीड़ा, १६. मोहर-ए-बलब-बंद होंठ, १७. शोला ब्यां-गर्म भाषा वाला, १८. आशिफशां-ज्वालामुखी, १९. हक-सत्य, २०. बातिल-झूठ, २१. मुकाबिल-समक्ष, २२. गुफ्तगू-बातचीत, २३. मानी-ए-दरपेश-समक्ष खड़े हुए अर्थ, २४. आरजू-ए-तिश्नगी-प्यास की इच्छा, २५. आबजू-जल-स्रोत, २६. सदफ-सीपी, २७. जुस्तजू-खोज, २८. मुकद्दस-पवित्र, २९. तकद्दम-पवित्रता, ३०. तरतीबकार-संपादक, ३१. मुकद्दसतर-अत्यन्त पवित्र, ३२. शुमार-गणना, ३३. सरमाया-पूंजी, ३४. वहदत निगार-एक ईश्वरवाद के विचार का पोषक, ३५. आला कलाम-ऊंचे स्तर का काव्य, ३६. अलफाज-शब्द, ३७. जहूर-प्रकट, ३८. रामदास-चौथे गुरु जी, ३९. लाशऊरी-अवचेतना, ४०. शऊर-संचेतना, ४१. औरंग-सिंहासन, ४२. गरूर-अहंकार, ४३. आलातरी-बहुत ही बड़े, ४४. मौसीकार-संगीतज्ञ, ४५. मेआर-स्तर, ४६. बख्तयार-भाग्यशाली, ४७. ताजदार-राजा, ४८. मिजराब-सितार बजाने में काम आने वाला तार का छल्ला, ४९. जज्बात-भावना, ५०. रूहानियत-आत्मबोध, ५१. दस्तगीर-सहायक, ५२. फितरतन-स्वभाव, ५३. बेनजीर-अद्वितीय, ५४. हिकारत-घृणा, ५५. मुशर्रफ-उल-कलाम-काव्य द्वारा सम्मानित, ५६. वहदानियत-एक ईश्वरवाद, ५७. शहसवार-पारंगत, ५८. जाविदानी-अमरता, ५९. काबिल-ए-ताजीम-सम्मानयोग्य, ६०. तालीम-शिक्षा, ६१. रूह-ए-इन्सां-मनुष्य की आत्मा, ६२. सेहतमन्दाना-स्वास्थ्यवर्धक, ६३. प्याम-सन्देश, ६४. तुआम-भोजन, ६५. माल-ए-गनीमत-लूट का माल, ६६. अकीदा-श्रद्धा, ६७. जिया-रौशनी, ६८. रूह-ए-इन्सानी-मानवीय आत्मा, ६९. निगह-ए-मोअतबर-उच्च दृष्टि, ७०. राज-ओ-न्याज-गुप्त बातें, ७१. कारसाज-कार्य सिद्ध-कर्ता, ७२. जहन्नुम-नरक, ७३. सदा-आवाज, ७४. सब्र-ओ-रज़ा-भगवान की इच्छा को मानने का धैर्य, ७५. कशमकश-खींचतान, ७६. तीरगी-अंधेरा, ७७. अलहाम-आकाशवाणी, ७८. ख्याल-ए-खाम-कच्चा विचार, ७९. इज्ज-नम्रता, ८०. पारसाई-बड़ापन, ८१. गुमरही-भटकन।



गुरसिक्खी बारीक है--४

*-डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ**

सिक्ख रहित मर्यादा में जहां एक सिक्ख के लिये नित्तनेम की पांच बाणियों का पाठ आवश्यक माना गया है वहीं श्री गुरु ग्रंथ साहिब के नियमित पाठ की भी अपेक्षा की गयी है। गुरुद्वारे में श्री गुरु ग्रंथ साहिब के प्रकाश के साथ सिक्ख अपने घर में भी यथासम्भव श्री गुरु ग्रंथ साहिब का किसी विशिष्ट स्थान पर प्रकाश करे। गुरुद्वारा गुरु का घर है जहां संगत के बीच बैठ कर गुरबाणी से जुड़ने का अपना महत्व है। घर में गुरबाणी से जुड़ना जीवन को नियमित करता है और आंतरिक शुद्धता को सतत् बनाता है। आज सिक्ख जहां भी हैं अधिक या कम संख्या में, उन्होंने गुरुद्वारा अवश्य बना लिया है। गुरुद्वारा छोटा हो या बड़ा उसकी महत्ता समान है और प्रत्येक गुरु-घर की मर्यादा भी समान रूप से अक्षुण्ण रखी जानी चाहिये। देखने में आया है कि कई गुरुद्वारों में संगत की उपस्थिति ही नहीं होती। शबद-पाठ और कीर्तन की असल उपयोगिता संगत की उपस्थिति में है। इस समस्या का समाधान करता तथा साधसंगत की महिमा का बोध होना आवश्यक है, तभी गुरसिक्ख के मन में नियमित गुरुद्वारे जाने की इच्छा प्रबल होगी:

वरत नेम मजन तिसु पूजा ॥
बेद पुरान तिनि सिंम्रिति सुनीजा ॥
महा पुनीत जा का निरमल थानु ॥
साधसंगति जा कै हरि हरि नामु ॥२॥
(पन्ना ३९३)

साधसंगत करने से सभी के सभी इच्छित फल एक साथ और एक बारगी प्राप्त हो जाते हैं। साधसंगत इसलिये श्रेष्ठ हो जाती है क्योंकि वह गुरु-घर में हो रही है। महिमा गुरु-घर की है इसलिये साधसंगत भी गुरु-महिमा से पूर्ण हो जाती है :

जिथै जाइ बहै मेरा सतिगुरू सो थानु सुहावा राम राजे ॥
गुरसिक्खी सो थानु भालिआ लै धूरि मुखि लावा ॥
गुरसिक्खा की घाल थाइ पई जिन हरि नामु धिआवा ॥
जिन्ह नानकु सतिगुरु पूजिआ तिन हरि पूज करावा ॥ (पन्ना ४५०)

जहां श्री गुरु ग्रंथ साहिब का प्रकाश हो रहा है वह स्थान स्वयं ही पवित्र और सुशोभित हो गया है। इस स्थान की तो धूलि भी मस्तक पर लगाने योग्य है। ऐसे स्थान पर जाकर तो जीवन सफल हो जाता है। गुरु-घर के दर्शन से जहां आनंद की प्राप्ति होती है वहीं गुरु-घर में साधसंगत करने से परमात्मा का नाम मन में स्थान बनाता है और भटकाव से मुक्ति मिलती है :

सतिगुरि सेविऐ मनु निरमला भए पवितु सरीर ॥
मनि आनंदु सदा सुखु पाइआ भेटिआ गहिर गंभीरु ॥
सची संगति बैसणा सचि नामि मनु धीर ॥
(पन्ना ६९)

गुरु-घर की और साधसंगत की महिमा जाने बिना गुरुद्वारे जाने से उनके निरादर की संभावनाएं बनी रहती हैं। गुरु से जुड़ने की कृपा गुरु-घर जाने और आदर-प्रेम सहित साधसंगत में बैठ कर सिमरन करने से ही पूर्ण

****E*-*१७१६, राजाजीपुरम, लखनऊ-२२६०१७ मो. ९४१५९६०५३३**

होती है। संसार में माया ने अपना प्रभाव चारों ओर स्थापित कर रखा है, जिससे भ्रम उत्पन्न होता है और सच का मार्ग नहीं दिखता। इस भ्रम को दूर करने का उपाय गुरु-घर में संगत करना ही है :

होइ इकत्र मिलहु मेरे भाई दुबिधा दूरि करहु लिव लाइ ॥
हरि नामै के होवहु जोड़ी गुरमुखि बैसहु सफा विछाइ ॥ *(पन्ना ११८५)*

गुरुद्वारे जाने से पूर्व मन में आनंद प्राप्त करने की इच्छा हो, जो श्री गुरु ग्रंथ साहिब के दर्शन करने से मिलने वाला है और माया-मोह के भ्रम दूर करके मन में परमात्मा के नाम का आधार धारण करने व धीरज पाने की कामना हो, जो साधसंगत में बैठ कर मिलने वाला है, तो गुरुद्वारे जाना सफल हो जाता है। उसी के अनुरूप मन में श्रद्धा उत्पन्न होती है और इन विचारों का प्रभाव आचरण पर भी परिलक्षित होता है।

सिक्ख रहित मर्यादा के अनुसार दीवान की समाप्ति और भोग की अरदास के बाद हुक्म लेना चाहिये। हुक्म लेने की पूरी विधि का वर्णन किया गया है। हुक्म लेते समय बायीं ओर के पन्ने के ऊपर की ओर पहला शबद जो जारी होता है, उसे पढ़ना चाहिये। यदि शबद पिछले पन्ने से आरंभ हुआ है तो पन्ना पलट कर पढ़ना शुरू करना चाहिये। पूरा शबद पढ़ना चाहिये। शबद के अंत में जहां "नानक" नाम आ जाये वहीं समाप्ति कर देना चाहिये। इससे एक तो गुरबाणी की मर्यादा बनी रहती है, दूसरा गुरबाणी को समूचे संदर्भ में समझने का अवसर मिलता है। पूरे संदर्भ को जाने बिना एक-दो तुकें पढ़ लेने से अर्थ का अनर्थ हो सकता है। यह बात उन लोगों के लिये अधिक महत्व की है जिन्होंने अपने घरों में श्री गुरु ग्रंथ साहिब का प्रकाश कर रखा है। इसके अतिरिक्त जैसे सिक्ख रहित मर्यादा में अपने घरों में श्री गुरु ग्रंथ साहिब का प्रकाश करने की बात कही गयी है तो पूरी मर्यादा का भी ज्ञान होना चाहिये।

श्री हरिमंदर साहिब, श्री अमृतसर में हुकमनामा लेने के बाद इसकी व्याख्या भी जारी की जाती है। अन्य गुरुद्वारों में हुकमनामा तो लिया जाता है किन्तु संगत के ज्ञान के लिये उसकी व्याख्या का आम तौर पर कोई प्रबंध नहीं होता। हुकमनामे की सारी तुकें याद रहती हों तो भी उनके अर्थ स्पष्ट नहीं हो पाते। जितना महत्व गुरबाणी के पाठ-गायन का है उतना ही महत्व प्रतिदिन लिये जाने वाले हुकमनामे का है, जो जीवन की दिशा तय करने वाले आदेश की तरह है, जिसका पूर्णरूपेण पालन करना है। हुकमनामा सुनना और उसका अर्थ जानना दोनों आवश्यक हैं।

प्रत्येक सिक्ख परिवार को चाहिये कि घर में भी श्री गुरु ग्रंथ साहिब का प्रकाश करे। अपने घर में सोने, पढ़ने, बैठने, खाने आदि सभी गतिविधियों के लिये स्थान बनाया जाता है, किन्तु उस परमात्मा को नहीं याद रखा जाता जिसकी कृपा से घर बनता है। सभी आवश्यकताओं से थोड़ी-थोड़ी कटौती करके श्री गुरु ग्रंथ साहिब के प्रकाश का अलग स्थान बनाना कठिन नहीं है।

किसी घर में यदि श्री गुरु ग्रंथ साहिब का प्रकाश है तो गुरु से जुड़ने की भावना प्रखर हो उठती है और पारिवारिक जीवन पर इसका जाने-अनजाने प्रभाव पड़ना आरंभ हो जाता है। घर का एक सदस्य भी यदि श्री गुरु ग्रंथ साहिब का प्रकाश, पाठ और सुखासन नियमित रूप से कर रहा है तो वह परिवार के अन्य सदस्यों के लिए निश्चित रूप से प्रेरणा का स्रोत बन जाता है और धीरे-धीरे वे लोग भी गुरु से जुड़ने लगते हैं।

जिस घर में श्री गुरु ग्रंथ साहिब का प्रकाश होगा, घर के सदस्य स्वयं ही उससे जुड़ने लगेंगे। चंदन की सुगंध से भला कोई कैसे विरत रह सकता है!

गुणा का होवै वासुला कढि वासु लईजै ॥
जे गुण होवन्हि साजना मिलि साझ करीजै ॥
साझ करीजै गुणह केरी छोडि अवगण चलीऐ ॥
पहिरे पटंबर करि अडंबर आपणा पिड़ु मलीऐ ॥
(पन्ना ७६५-७६६)

घर का यदि एक भी सदस्य गुरु से जुड़ा हुआ है तो उसे अन्य परिवारजनों को भी उस राह पर चलने के लिये प्रेरित करना चाहिये। घर में श्री गुरु ग्रंथ साहिब लाकर प्रकाश करना खुशियों के द्वार खोलने जैसा है। इससे जीवन-शैली में अंतर आ जाता है, शुद्धता और पवित्रता का प्रसार होता है :

हम घरे साचा सोहिला साचै सबदि सुहाइआ राम ॥
धन पिर मेलु भइआ प्रभि आपि मिलाइआ राम ॥
प्रभि आपि मिलाइआ सचु मंनि वसाइआ कामणि सहजे माती ॥
गुर सबदि सीगारी सचि सवारी सदा रावे रंगि राती ॥ (पन्ना ४३९)

जीवन में जिस तरह उपलब्धियां अर्जित करने के लक्ष्य निर्धारित किये जाते हैं उसी तरह प्रत्येक गुरसिक्ख परिवार को अपने घर में श्री गुरु ग्रंथ साहिब शोभायमान करने का लक्ष्य निर्धारित करना चाहिये और उसे पूरा करने के प्रयास करने चाहिये। बड़ी संख्या उन गुरसिक्खों की है जो प्रतिदिन अथवा कभी-कभी श्री गुरु ग्रंथ साहिब के समक्ष माथा टेकते हैं किन्तु उन्हें श्री गुरु ग्रंथ साहिब के सम्पूर्ण स्वरूप का ज्ञान नहीं है। यदि उस राह का ज्ञान ही नहीं है जिस पर चलना है तो आध्यात्मिक यात्रा कैसे आरंभ और पूर्ण होगी और कैसे जीवन का लक्ष्य प्राप्त होगा? आज सांसारिक व्यस्तताओं के कारण समय भी कम है और तनाव भी हैं। आत्मिक शांति के बिना सच्चा आनंद भी नहीं प्राप्त हो सकता। इसका उपाय है घर में श्री गुरु ग्रंथ साहिब को शोभायमान करना जिससे गुरबाणी का पठन-चिंतन कर जीवन को सुखैन बनाया जा सके। ऐसा करने से तमाम परेशानियों से मुक्ति मिल जाती है :

अंम्रित का रसु विरली पाइआ सतिगुर मेलि मिलाए ॥
जब लगु सबद भेदु नही आइआ तब लगु कालु संताए ॥ (पन्ना ११२६)

कविता

शहीदों की ललकार

वीर शिरोमणि सिक्खों सरदारों ने,
खून से सींची भारत की धरती,
खाद्य दिया अपने तन का।
तन-मन-धन सब किया समर्पित,
बीज लगाया जीवन का,
बलिदानों के अश्व त्याग की
बल्गायें जोड़ी हमने।
भारत मां के जर्ज हाथों की,
हथकड़ियां तोड़ी हमने।
युगों-युगों से सिक्खों ने, शीश चढ़ाये फूल सरीखे,
खून रंगी होली खेली।
आजादी का घूंट यूं पिया, सीने पर गोली झेली।
आजादी की किरण फंस गई,
सामंतों के उपनगरों में।
सच्चाई सिसक रही है,
स्वार्थ प्रस्तों के खण्डहरों में।
इसी सुहावी धरती पर, फिर नई जवानी चमकेगी।
अंधियारे के खुले पृष्ठ पर, नई कहानी दमकेगी।

-श्री प्रेमचंद विद्यार्थी, भूमिगत स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, पलंदी चौक, दमोह (म. प्र.)

बाणी संगीत

मूल लेखक : प्रिं नरिंदर सिंघ सोच (गुरपुरवासी)

राग एवं बाणी का संयोग 'गुरु-संगीत' है। 'गुरु-संगीत' 'संगत-संगीत' है। संगत-संगीत 'जत्था-संगीत' है। अकेला गायक हो सकता है, कीर्तनिया नहीं हो सकता, परंतु बेसुरे को साथ करने की अनुमति नहीं है। दोनों में सुमेल और संतुलन पूरा-पूरा हो। राग और बाणी ताल के ऊपर सवार हों। ताल बाणी के अर्थों को धुंधला न होने दे। हरेक शबद एक ही ताल में नहीं बांधा जा सकता। ताल को बाणी के अंग भंग करने की अनुमति नहीं है। बाणी के बिसराम ताल की मात्रा जितने आवश्यक हैं, न अधिक, न कम।

बाणी और राग दोनों दोहरी यात्रा करते हैं। पहली यह धुर अंदर 'परा' से बाहर को यात्रा करते हैं। जब कीर्तन होता है तो इसके भाव (अर्थ) अंदर की ओर को यात्रा प्रारंभ कर देते हैं। संगत और कीर्तनियों की आंखें बंद हो जाती हैं अथवा बाणी के दर्शन में गाढ़ी जाती हैं। मन, पत्थर हीरा है। जितनी देर मन में छेद न हो जाए, यह धागे में पिरोया नहीं जा सकता। कीर्तन भी अमूल्य हीरा है। केवल हीरा ही हीरे को बेंध सकता है। हीरे की अणी के साथ ही हीरे में छेंद किया जा सकता है।

गायक हाथों के साथ रोही-अवरोही बता सकता है, 'स्वर' का भी संकेत कर सकता है, आंखों से भी संकेत देता है, परंतु कीर्तन में ये निषेध हैं। सरगम आनी चाहिये परंतु बाणी की पंक्ति का पूरक नहीं बनानी चाहिए। ये सभी बातें टिकाव और अंदरूनी यात्रा की विरोधी हैं।

ताल देने, मात्राओं की गिनती करने और सरगम बोलना, सीखने की इकाइयां हैं। सीखना सरगम द्वारा ही चाहिए। सरगम राग की काया है, परंतु गायक का आदर्श केवल राग और ताल को प्रकट करना है। कीर्तन का धर्म राग और बाणी का सुमेल है।

जैसे काव्य में रस होते हैं, जैसे अक्षरों में रस होते हैं उसी प्रकार से बारह स्वरों में भी रस होते हैं। अक्षर भी तो ध्वनियों का अनुकरण है; सरगम भी ध्वनियों का संकेत करती है। दोनों का स्रोत नाद है। अक्षर और सरगम दोनों नाद के अनुकरण हैं, नाद नहीं हैं। इनके द्वारा ही हम नाद तक पहुंचते हैं।

सभी हुनर परिश्रम और शौक के साथ सीखे जा सकते हैं। राग भी सीखा जा सकता है परंतु श्रद्धा के बिना कीर्तन खिलता नहीं है, कीर्तन में से सुगंधी नहीं आती।

बाणी रस, अर्थ रस, भाव रस, दर्शन रस है। राग ही इन रसों को पूरा-पूरा खोलता है। *मैं परदेसण दूर से आई।* दूरी को प्रकट करने के लिए तार सप्तक के स्वर लगाने आवश्यक हैं। आने के लिए ऊपर से नीचे को आना आवश्यक है। 'दूर गये' के लिए स्वरों को भी नीचे से ऊपर जाना पड़ेगा। 'दूर से आई' तथा 'दूर गई' की यात्रा राग के बिना पूरी नहीं होती। मन की यात्रा ऐसी है कि राग ही कठिन हो जाता है। स्मरण रखना, कीर्तन मन और बुद्धि की मैल को उतारता है, मन और बुद्धि के रोग दूर करता है। मन और बुद्धि के दोनों शीशे टूट-टूट कर अनेकों कंकड़ों के रूप में बिखरे पड़े हैं। कंकड़ों ने एकता को भी खंड-खंड किया हुआ है। एक दर्शन के लिए खंड-खंड हुए मन तथा बुद्धि का जुड़ना और निर्मल

होना आवश्यक है। कीर्तन ही टूटी गांठता है। कीर्तन बंदीछोड़ है।

हमारा शरीर भी एक साज है। यह साज दिन-रात एक लय में बजता है। यह फूंक वाला भी है और तंती भी है। जब यह कीर्तन के साथ एक स्वर हो जाता है तो यह झूमने लग जाता है। इसके एक-एक स्वर में से अमृत की वर्षा होने लग पड़ती है।

सच्चे सिक्खों के लिए कीर्तनिए का दर्जा बहुत ही ऊंचा है। संगत में गुरु के बाद केवल कीर्तनिए या कीर्तन के लिए विशेष बिछौना बिछाया जाता है। संगत की दृष्टि का केंद्र कीर्तनिए या कीर्तन होता है। संगत कीर्तन भी सुनती है और कीर्तनियों के दर्शन भी करती है। जितनी देर तक शबद का भाव रागी के मन में न घुल जाए उतनी देर तक भावभीना स्वर गले में से नहीं निकल सकता। साज का स्वर केवल स्वर होता है, परंतु मानवी स्वर के साथ भाव भी होता है। तार के साज में हाथों की बरकत और आशीश व संतुष्टि होती है।

सिक्ख रागियों की खास उल खास परीक्षा 'आसा की वार' है। सभी सलोकों को अलाप के रस में भिगो-भिगो कर लगाना . . . स्वर विस्तार की किसी में कितनी क्षमता है, का पता इससे चलता है। . . . राग वाली बाणी से राग को बिछोड़ना ज़्यादती है। . . .

गुरबाणी-संगीत समाधि-संगीत है, मस्ती-संगीत है, संयोग-संगीत है, वियोग-संगीत है। यह शरीर, मन तथा बुद्धि को कील कर बिठा देता है। तीनों को शक्ति भी देता है और तीनों को चंचलता की ओर जाने से रोकता भी है।

स्मरणीय मात्र एक ही बात है। गुरबाणी संगीत जमानेसाजी नहीं है। जमानेसाजी में राग नहीं होता। वह हरेक नये सूर्य के चढ़ने के साथ पैदा होती है और सूर्य छिपने के समय अंतिम दम तोड़ देती है। परंतु आज तक कोई राग मृतक नहीं हुआ, कोई राग फीका नहीं पड़ा। 'राग' और 'प्रेम' दो समानार्थक शब्द हैं। राग प्रेम की आवाज है, मनुष्य की मानसिक स्थिति का ध्वनि-चित्र है। कोयलें समय पर आती हैं। कूंजों को कभी रास्ता नहीं भूलता। डूमण (मधुमक्खियां) वर्ष के बाद उसी वृक्ष पर छत्ता बनाता है। राग की भी ऋतुएं हैं। बसंत के स्वरों को बसंत में ही फूल लगते हैं। मलार का जल-तरंग सावन-भादों को ही विलक्षण और टिकाऊ स्वर उजागर करता है।

गुरु-बाणी या गुरु-संगीत दोहरी काट करता है। एक ही समय वह अंदर भी और बाहर भी फूल खिलाता है। एक ही समय वह भीतर भी और बाहर भी अमृत की रिमझिम लाता है।

गुरबाणी-संगीत या गुरु-संगीत की पूरी-पूरी सोझी उस समय पड़ती है जब जलती ऋतु में जंड के वृक्ष पर बैठकर बींडा 'सां' का रियाज करता एक कान में सुने और दूसरे कान में आम की मंजरी में खोई हुई कोयल पंचम स्वर ऊपर बोलते सुनाई दे। बाणी के संगीत में मछलियां और हिरण भी बोलते हैं।

श्री गुरु नानक देव जी ने जिस शबद के साथ सिध-मंडली पर विजय पाई थी और प्रभु-नाम सिक्का चलाया था वे सब कुछ हमें दे गए हैं। हमने सिद्ध करना है कि हम उनके शबदों के सबसे अच्छे उत्तराधिकारी हैं :

सबदि रते वड हंस है सचु नामु उरि धारि ॥
सचु संग्रहहि सद सचि रहहि सचै नामि पिआरि ॥
सदा निरमल मैलु न लगई नदरि कीती करतारि ॥
नानक हउ तिन कै बलिहारणै जो अनदिनु जपहि मुरारि ॥ *(पन्ना ५८५)*

हिंदी अनुवाद : सुरिंदर सिंघ निमाणा,
सहायक संपादक।



आजादी की लड़ाई में पंजाबियों का योगदान

*-डॉ मनमोहन सिंघ**

भारत की आजादी की लड़ाई, जो कि ९० साल चली, में पंजाबियों का हिस्सा महान कुर्बानियों से भरपूर है। पंजाबी हमेशा ही प्रत्येक मैदान में आगे रहे हैं। भारत में अंग्रेजों के विरुद्ध पहली हथियारबंद बगावत 'गदर' के नाम से १९५७ में शुरू हुई। यह अंग्रेजों के लिए 'गदर' था परन्तु भारतीयों के लिए अंग्रेजों के विरुद्ध पहली बगावत। कई इतिहासकारों ने इसे पूर्ण रूप से बगावत नहीं माना क्योंकि यह बगावत भारत की अलग-अलग रियासतों को अंग्रेजी साम्राज्य द्वारा हड़प करने से बचाने के लिए की गई थी। इस सम्बंध में रियासतों ने आपस में समझौता करके मंजूर किया था कि भारत का बादशाह अंतिम मुगल सम्राट बहादुरशाह ज़फर है तथा जीत की स्थिति में उसकी ताबेदारी माननी पड़ेगी। यह भी कहा जाता है कि इस बगावत में रियासतों की फौजें ही शामिल हुईं न कि आम जनता। इक्का-दुक्का छावनियों में पंजाबी रेजिमेंटों ने भी बगावत करने का प्रयत्न किया परन्तु वे कामयाब न हो सकीं। वैसे कामयाब तो समस्त भारत ही नहीं हुआ, हालांकि अलग-अलग सूबों से रियासतों ने इस में सीधा तथा सरगर्म हिस्सा लिया था।

पंजाब ने अंग्रेजों के विरुद्ध खुला विद्रोह शुरू कर दिया जिसका पहला उदाहरण १८७२ में चली कूका लहर है। वास्तव में यह पहली लहर थी जो आम लोगों के नेताओं ने सभी लोगों को साथ लेकर अंग्रेजों के विरुद्ध चलाई। पहली बार कई बागी कूकों को तोपों के सामने खड़ा करके गोलों से उड़ा दिया गया। बीसवीं शताब्दी के आरंभ तक कूका लहर के पीछे पंजाब में कोई सरगर्म विद्रोह नजर नहीं आता था, परन्तु बंगाल विभाजन का पंजाबियों ने बहुत बुरा मनाया। इन्हीं दिनों में सरकार ने गन्ने तथा कपास की फसलों के ऊपर तीन गुना मामला कर दिया। नहरों तथा सड़कों का खर्च पूरा करने के लिए बियाना भी कई गुना बढ़ा दिया तथा साथ ही एक कालोनाईजेशन एक्ट बनाया जिसके अन्तर्गत जिस जमीन का मालिक मर जाता था वह जमीन पिता का बड़ा पुत्र संभालता था। बड़े पुत्र के देहांत के बाद उस जमीन पर हक सरकार का हो जाता था। बड़ा पुत्र जमीन पर मकान भी नहीं बना सकता था, पशुओं के लिए चारा नहीं डाल सकता था तथा जमीन बेच नहीं सकता था। कानून की अवहेलना करने वाले की जमीन २४ घंटे के नोटिस के बाद जब्त की जा सकती थी।

इन उपरोक्त दोनों बातों ने किसानों में गुस्से तथा विद्रोह की लहर पैदा कर दी। नहरी अफसरों की मनमानियों तथा ज्यादतियों ने भी किसानों को दुखी किया। किसान आन्दोलन सरदार अजीत सिंघ, लाला लाजपत राय तथा श्री सूरी प्रसाद के नेतृत्व में शुरू हुआ। सरकार ने कई किसान तथा उनके पढ़े-लिखे अग्रणी कैद कर लिये। उन पर दोष यह लगाया गया कि वे बादशाह के विरुद्ध लोगों को भड़काते

**८८९, फेज-१०, मोहाली-१६००६२*

हैं। यह बात वर्ष १९०७ की है, जमानतें भी नहीं की गईं। खुफिया रिपोर्ट बताती है कि पुलिस में भी काफी गुस्सा तथा नफरत पैदा हो गई थी तथा अनेकों को सरकार ने गद्दार बता कर नौकरी से जवाब दे दिया। फौज में भी इस लहर का असर महसूस किया गया। खुफिया रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि अंग्रेजों को भारत से धक्के मारकर बाहर निकालने की तैयारियां शुरू हो गई थीं। उन्हें आजाद देशों से भारी प्रेरणा मिली तथा उन्होंने दूसरे देशों में भारत की आजादी की लड़ाई के लिए कमेटियां बनाईं। अमेरिका में इंडियन एसोसिएशन ऑफ पेस्टिक कैस्टे तथा जर्मनी में इण्डियन इंडिपेंडेंस लीग आदि कमेटियां स्थापित हुईं। १९०७ में खालसा दीवान सोसायटी कनाडा में तथा १९१३ में गदर पार्टी अमेरिका में बनी। गदर पार्टी के प्रमुख पंजाब के बाबा सोहन सिंघ भकना थे। विदेशों में कुछ गुरुद्वारे भी बनाये गये जो वास्तविकता में आजादी की लहर के केन्द्र होते थे। कामागाटामारू जहाज का साका इस लहर की बहुत दर्दनाक घटना है। इन लहरों में फांसी, कैद आदि दण्ड अधिकतर पंजाबियों को सहन करने पड़े तथा उन्होंने अत्याचारों का सबसे बड़ा हिस्सा अपने पर सहन किया।

देश में गिरफ्तारियों तथा दमन का भारी चक्कर चला तथा भारतीय सुरक्षा कानून के अन्तर्गत बर्मा के हित में अनेक गिरफ्तारियां की गईं, मुकद्दमे चलाये गये, जिनमें अपील की कोई गुजांइश नहीं होती थी। लाहौर साजिश केस, पहला सप्लीमेंटरी साजिश केस, बनारस साजिश केस, सैनफ्रांसिस्को केस, शिकागो केस आदि मुकद्दमे चलाये गये। अनेक फौजियों को गदर में हिस्सा लेने के लिए कोर्टमार्शल कानून के अन्तर्गत सजायें दी गईं। इन मुकद्दमों में ७२ को फांसी लगा दी गई तथा ११४ को उम्र-कैद की सजा देकर कालापानी भेज दिया गया। इनमें पंजाबियों की गिनती सबसे अधिक थी। सन् १९१९ में जलियांवाला बाग के कांड ने समस्त भारत के आजादी आंदोलन को एक नया मोड़ दिया। देश की पूर्ण आजादी की मांग पंजाब (लाहौर) में १९२९ में हुए कांग्रेसी समागम से शुरू हुई। जलियांवाला बाग के काण्ड ने सरदार करतार सिंघ सराभा तथा सरदार भगत सिंघ जैसे हीरों ने एक्ट विरुद्ध एजीटेशन में लाला लाजपत राय ने शहीदी प्राप्त की। सरदार करतार सिंघ सराभा को १७ साल की उम्र में फांसी लगा दी गई। सरदार भगत सिंघ को असेंबली में १९२९ में बंब फेंकने के दोष में फांसी लगा दी गई।

हालांकि अकाली लहर गुरुद्वारा सुधार लहर के रूप में शुरू हुई परन्तु "गुरु के बाग" तथा "जैतो के मोर्चे" ने इसे सम्पूर्ण अंग्रेज-विरोधी लहर बना दिया। बाबा खड़क सिंघ, स. सरदूल सिंघ कवीशर, ज्ञानी गुरमुख सिंघ मुसाफिर, डाक्टर किचलू, मियां उलदीन, डाक्टर गोपीचंद, रायजादा हंसराज, डॉ. सतपाल तथा श्री भीम सेन सच्चर जैसे पंजाबी हुए हैं जिन्होंने देश की आजादी में अपना योगदान दिया। भारत की आजादी की अलग-अलग लहरों में जिन लोगों ने कुर्बानियां दीं उनका ब्योरा नीचे लिखे अनुसार है। इस ब्योरे से स्पष्ट है कि सिक्खों ने आजादी की लड़ाई में सबसे अधिक योगदान दिया :

	सिक्ख	अन्य	कुल
१) फांसी मिली	९३	२८	१२१
२) उम्र-कैद	२१९७	४४९	२६४६
३) जलियांवाला बाग में शहीद हुए	७९९	५०१	१३००

(शेष पृष्ठ ४२ पर)

चमत्कार

*-स. जसवंत सिंघ**

भक्त रविदास जी के एक सेवक ने उन्हें बताया कि कुछ योगी लोग आपसे आशीष चाहते हैं। भक्त जी ने कहा, "आने दो।" भक्त रविदास जी के पास आने वाले योगी गोरखनाथ और उसके कुछ शिष्य थे।

भक्त जी ने कहा, "नाथ जी! मैं आपकी ही प्रतीक्षा कर रहा था।" गोरखनाथ को आश्चर्य हुआ, "आप!" भक्त जी ने कहा, "हां, बैठिये।" गोरखनाथ और उसके शिष्यजन बैठ गए। गोरखनाथ ने अपने एक शिष्य से पत्थर के कुछ टुकड़े मंगवाए और उन्हें दोनों हाथों में रख कर अपनी सिद्धि से हीरे बना दिया। फिर वे हीरे गोरखनाथ ने भक्त रविदास जी के निकट रख कर कहा, "आपकी भेंट!" भक्त जी ने पूछा, "नाथ जी! यह चमत्कार है?" गोरखनाथ ने उत्तर दिया, "यही समझिये!"

भक्त जी ने मुस्कराकर कहा, "नाथ जी! चमत्कार प्रभु का नाम है।"

गोरख ने कहा, "हम सिद्धियों में विश्वास रखते हैं . . . आप भी . . . ?"

भक्त रविदास जी बनारस में रहते थे। वे अपना काम करके गुजारा करते थे। कभी इस तरह नहीं हुआ था कि उन्होंने कभी किसी से कुछ मांगा हो।

अनेक जगहों पर प्रसंग आता है कि राजपूताने की रानी झाली बाई उनकी शिष्य बन गई थी।

एक और कथा कहती है कि कृष्ण-भक्तिनी मीरा बाई भी भक्त जी से मिलने के लिए काशी नगरी में पहुंची थीं। वो कहती थीं—"बुद्धपुरुष जी, आपकी बाणी में भक्ति-भावना की पराकाष्ठा और निष्ठा की गहराई तथा संवेदनशीलता का शिखर है। आप प्रभु-भक्ति के सादात स्वरूप हैं।

अनेक साधु-संत भक्त रविदास जी के पास सतसंग के लिए आते थे।

और अब गोरखनाथ?

किस भावना को लेकर?

दूर-दूर से जो साधु-संत भक्त रविदास जी के पास आते, बहुत प्रसन्न और गद-गद भाव से कहते :

तुम चंदन हम इरंड बापुरे संगि तुमारे बासा ॥
नीच रूख ते ऊच भए है गंध सुगंध निवासा ॥१॥
माधउ सतसंगति सरनि तुम्हारी ॥
हम अउगन तुम्ह उपकारी ॥१॥रहाउ॥
तुम मखतूल सुपेद सपीअल हम बपुरे जस कीरा ॥
सतसंगति मिलि रहीऐ माधउ जैसे मधुर मखीरा ॥२॥
जाती ओछा पाती ओछा ओछा जनमु हमारा ॥
राजा राम की सेव न कीन्ही कहि रविदास चमारा ॥३॥ *(पन्ना ४८६)*

क्या खूब लिखते हैं! संत-पुरुष भक्त जी से कहते, "आपके शबद ब्रह्म-स्वरूप बन जाते हैं। सचमुच ही आप चंदन हैं . . . हम आपको नमस्कार करते हैं।"

गोरखनाथ की बात सुनकर भक्त रविदास जी सोचने लगे, "ये हमारे अतिथि हैं, इसलिए इनके साथ कोई अशिष्ट बात करनी ठीक नहीं है।" फिर भक्त जी के सामने उनका एक शबद

**९६, गोल्डन एवीन्यू-१, जालंधर-१४४०२२, फोन : ०१८१-४६१०२९५*

साक्षात रूप में आ गया :

माटी को पुतरा कैसे नचतु है ॥
देखै देखै सुनै बोलै दउरिओ फिरतु है ॥१॥रहाउ॥
जब कछु पावै तब गरबु करतु है ॥
माइआ गई तब रोवनु लगतु है ॥१॥
मन बच क्रम रस कसहि लुभाना ॥
बिनसि गइआ जाइ कहूं समाना ॥२॥
कहि रविदास बाजी जगु भाई ॥
बाजीगर सउ मुोहि प्रीति बनि आई ॥३॥

(पन्ना ४८७)

गोरखनाथ ने पूछा, "आप कुछ सोचने लगे हैं?"

भक्त जी ने कहा, "हां।"

पूछा- "क्या?"

"कुछ . . ."

"हमारे बारे में?"

"बिलकुल . . ."

"फिर बताइये . . ."

"अच्छा!" कह कर क्षण भर के लिए गंभीर हुये।

फिर भक्त रविदास जी गोरख को देखकर मुस्कराने लगे। उन्हें पता था कि गोरखनाथ, नाथ पंथ का 'गुरु' कहलाता है और अहंकार में रहता है।

भक्त जी ने कहा, "नाथ जी! अहंकार हमारा शत्रु है।"

गोरखनाथ ने कहा, "यह हमारा शत्रु नहीं है।" भक्त रविदास जी ने सेवक को बुलाकर कहा, "करमण्डल में जल भर कर लाओ।" सेवक करमण्डल में जल भर कर ले आया तो भक्त जी ने संकेत किया, "नाथ के पास रख दो।"

सेवक ने करमण्डल गोरखनाथ के पास रख दिया तो नाथ ने पूछा, "कोई चमत्कार?"

भक्त जी ने कहा, "नहीं।"

"फिर?"

"सागर है।"

"करमण्डल में?"

"हां!" भक्त जी ने कहा, "इस सागर में देखो।" गोरखनाथ ने करमण्डल में देखा, उसमें अनेक प्रकार के हीरे, लाल और मोती भरे हुये थे। गोरखनाथ ने नत्मस्तक होकर भक्त रविदास जी से कहा, "कृपानिधान! आप स्वयं महासागर हैं, क्षमा कर दीजिए।"



आजादी की लड़ाई में पंजाबियों का योगदान *(पृष्ठ ४० का शेष)*

४) बज-बज घाट में शहीद हुए	६७	४६	११३
५) कूका लहर	९१	. . .	९१
६) अकाली लहर	५००	. . .	५००

दूसरे विश्व युद्ध के समय दक्षिण-पूर्वी एशिया में बंदी बनाई भारतीय फौज को एकत्र करके जनरल मोहन सिंघ ने आजाद हिंद फौज की नींव रखी, जिसमें पंजाबियों की गिनती बहुत अधिक थी। आजाद हिन्द फौज की कारवाइयों ने देश की आजादी की प्राप्ति की लड़ाई को अपने उद्देश्य के बहुत ही नजदीक लाकर खड़ा कर दिया।

उपरोक्त तथ्यों से स्पष्ट है कि भारत की आजादी प्राप्त करने के लिए पंजाबियों तथा विशेषकर सिक्खों ने अधिक योगदान दिया। अब भी इस आजादी को तथा भारत की एकता व अखण्डता को बनाये रखने के लिए पंजाबी/सिक्ख अपना अधिक से अधिक योगदान दे रहे हैं तथा देते रहेंगे।



मध्य प्रदेश के ऐतिहासिक गुरुद्वारा साहिबान

*-स. सुरजीत सिंघ**

भारतीय धर्म एवं संस्कृति में सिक्ख धर्म-संस्कृति का उसके आदर्श "नाम जपना, किरत करना, वंड छकना" के अनुरूप महत्वपूर्ण एवं सर्वश्रेष्ठ योगदान है। "संगत-पंगत" की प्रथा भिन्नता में एकता का संदेश देती है, जहां *"नानक नाम चढ़दी कला, तेरे भाणे सरबत्त दा भला"* आत्मा है। समयानुसार सिक्ख धर्म के प्रवर्त्तक श्री गुरु नानक देव जी, श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी एवं श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का मध्य प्रदेश की धरती पर आध्यात्मिक विचरण होता रहा है। *"जिथै जाइ बहै मेरा सतिगुरू सो थानु सुहावा राम राजे"* के अनुरूप गुरु साहिबान की स्मृति में यहां पवित्र-स्थान गुरुद्वारे निर्मित हुए हैं।

१. गुरुद्वारा दाता बंदीछोड़ साहिब, ग्वालियर

ग्वालियर का प्राचीन किला जो लगभग ११०० फुट की ऊंचाई वाली पहाड़ी पर स्थित है, में भव्य गुरुद्वारा दाता बंदीछोड़ साहिब ऐतिहासिक दृष्टि में महत्वपूर्ण है। छठे गुरु श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब की बढ़ती कीर्ति एवं शक्ति से घबराकर समकालीन मुगल शासक जहांगीर ने गुरु जी को ग्वालियर के किले में कैद कर दिया था, जहां पर पहले से ही भारत की विभिन्न रियासतों के ५२ राजा आजीवन कारावास की सजा भुगत रहे थे।

गुरु जी के वहां पहुंचने से किले का वातावरण भक्तिमय हो गया और वहां हर समय ईश्वर-स्तुति का गायन गूंजने लगा। दूर-दूर से श्रद्धालु गुरु जी के दर्शन के लिए पहुंचने लगे। कुछ समय पश्चात जहांगीर को चिंता सताने लगी। गुरु जी के २ वर्ष ३ माह कारावास के पश्चात सन् १६११ में घबराकर जहांगीर ने गुरु जी को बंदीगृह से रिहा करने का शाही फरमान जारी कर दिया। गुरु जी ने अकेले रिहा होने से इंकार करते हुए कहा कि समस्त बंदी ५२ राजाओं को भी आजीवन कारावास से मुक्त किया जाये, अन्यथा वे अकेले रिहा नहीं होंगे।

गुरु जी की इच्छा का सम्मान करते हुए जहांगीर ने बात तो मान ली किन्तु शर्त यह रख दी कि जो भी बंदी गुरु जी का दामन पकड़ कर बाहर जाये केवल वही आजीवन कारावास से मुक्त समझा जायेगा। गुरु जी तो मुक्ति-दाता हैं। उन्होंने ५२ कलियों वाला एक विशेष चोला धारण कर लिया, जिसकी एक-एक कली प्रत्येक बंदी राजा ने पकड़ ली और इस प्रकार समस्त बंदी राजा गुरु जी के साथ ही बंदीगृह से बाहर निकल आजीवन कारावास की सजा से मुक्त हो गये।

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब 'बंदीछोड़ दाता' के नाम से प्रसिद्ध हुए। किले में जहां पर गुरु जी प्रभु-भक्ति में जुड़ा करते थे वहां पर एक बड़ा-सा चबूतरा हुआ करता था और पास में ईंटों का एक शेड बना हुआ था, जहां पर श्री गुरु ग्रंथ साहिब का प्रकाश होकर गुरबाणी-कीर्तन हुआ करता था। वर्ष १९६२ में निर्माण-कार्य प्रारंभ तो हुआ, किन्तु सरकारी किला एवं केन्द्रीय पुलिस का प्रशिक्षण संस्थान होने के

**५७-बी, न्यू कॉलोनी, गुमानपुरा, कोटा (राजस्थान)*

कारण अवरोध आता रहा। यहां एक भव्य आलीशान गुरुद्वारा, लंगर हाल एवं रिहायशी कॉम्प्लेक्स के साथ पवित्र सरोवर का निर्माण हो चुका है। यहां विशेषकर जोड़-मेलों पर भारी भीड़ एवं साधारणतः काफी संगत की आवाजाही रहती है।

२. गुरुद्वारा फूलबाग साहिब, ग्वालियर

ग्वालियर किले से कुछ दूरी पर लश्कर-मुरार मुख्य सड़क पर यह ऐतिहासिक गुरुद्वारा फूलबाग साहिब सुशोभित हो रहा है। गुरुद्वारा भवन पर लगे गुरमुखी शिलालेख से प्रमाणित होता है कि इस सुंदर गुरुद्वारे का निर्माण श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब की स्मृति में कराया गया है। ग्वालियर के तत्कालीन महाराजा माधवराज सिंधिया के समय इस गुरुद्वारा साहिब का निर्माण सन् १९१९ में प्रारंभ होकर सन् १९२१ में सम्पूर्ण हुआ था। मुगल शासक जहांगीर ने श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब को ग्वालियर किले में २ वर्ष ३ माह कैद रखा था। ऐसी मान्यता है कि यह स्थान गुरु जी की चरणरज से पवित्र है। गुरुद्वारा साहिब के आसपास हरियाली एवं फूलों के बाग हैं। यहां से गुरुद्वारा दाता बंदीछोड़ साहिब किले पर जाने हेतु साधन उपलब्ध हो जाते हैं।

३. गुरुद्वारा इमली साहिब, इन्दौर

दूसरी उदासी के उस समय श्री गुरु नानक देव जी रास्ते में इन्दौर रुके थे। इस स्थान पर एक प्राचीन वृहद इमली का वृक्ष था, जहां गुरु जी गुरबाणी का गायन और सतिसंग किया करते थे। यह पवित्र स्थान अब इन्दौर शहर के भीड़-भाड़ वाले क्षेत्र में आ गया है।

४. गुरुद्वारा बेटमा साहिब, इन्दौर

यह ऐतिहासिक गुरुद्वारा श्री गुरु नानक देव जी की स्मृति में बना हुआ है, जहां गुरु जी पधारे हैं। धार रोड पर शहर से २२ किलोमीटर की दूरी पर स्थित यह गुरुद्वारा "बेटमा साहिब" अथवा "गुरु नानक चरणपादुका साहिब" के नाम से विख्यात है। गुरु जी ने बाणी-गायन कर इस धरती को पवित्र किया था। बेटमा साहिब से रवाना होते समय गुरु जी ने श्रद्धालुओं के अनुरोध पर अपनी चरणपादुकाएं स्मृति-स्वरूप वहीं छोड़ दी थीं जो आज भी दर्शनार्थ गुरु जी का स्मरण करा रही हैं। गुरुद्वारा परिसर में गुरु जी की छोह प्राप्त एक मीठे जल का कुआं भी मौजूद है। इस पवित्र स्थान पर श्रद्धालु कई-कई मील दूर से चल कर और कुछ तो नंगे पांव ही दर्शनार्थ पहुंच अपने श्रद्धा-सुमन अर्पित करके अपने आप को भाग्यशाली मानते हैं।

५. गुरुद्वारा ओंकारेश्वर साहिब

इन्दौर और खंडवा के मध्य नर्मदा नदी के तट पर इस धरती पर श्री गुरु नानक देव जी ने गुरबाणी-उच्चारण एवं गायन किया। नदी के तट पर शांतप्रिय स्थान होने के कारण अपने प्रवास के दौरान गुरु जी ने "दखणी ओंकार बाणी" की रचना यहां पर की थी, जो पवित्र श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज है। इस कारण स्थान और गुरुद्वारे का नाम प्राचीन काल से ही 'ओंकारेश्वर' पड़ गया। नदियों का संगम भी यहां पर हो रहा है।

६. गुरुद्वारा बड़ी संगत साहिब, बुरहानपुर

बुरहानपुर का भव्य ऐतिहासिक गुरुद्वारा "बड़ी संगत" श्रद्धा का केन्द्र बना हुआ है। सड़क मार्ग से सचखंड श्री हजूर साहिब, नांदेड़ (महाराष्ट्र) जाते समय अक्सर संगत रात्रि विश्राम यहां करके आगे प्रस्थान करती है। आवागमन के साधन, ठहरने एवं गुरु के अटूट लंगर की व्यवस्था सदैव बनी रहती है। दक्षिण

यात्रा पर जाते समय दसम गुरु श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ताप्ती नदी के किनारे इस स्थान पर कुछ माह ठहरे थे और संगत को प्रतिदिन नित्तनेम कर गुरबाणी का उपदेश दिया करते थे। यहां पर गुरु-संगत हेतु अपार श्रद्धालु जुटने लग गये, इसलिए गुरुद्वारे का नाम 'बड़ी संगत' पड़ गया।

७. गुरुद्वारा गवारीघाट साहिब, जबलपुर

श्री गुरु नानक देव जी जबलपुर पहुंच कर नर्मदा नदी के तट पर ध्यानमग्न हुए थे, जहां पर गुरुद्वारा गवारीघाट साहिब सुशोभित हो रहा है। जबलपुर के आसपास के घने जंगलों में राक्षसी प्रवृत्ति वाला कौडा नामक भील और आदिवासी साथी रहते थे जो अनायास ही निर्दोष लोगों को लूट कर मार देते थे। ये मनुष्य मांस के भक्षक थे। लोग इनसे बहुत घबराये एवं आतंकित रहते थे। जनमानस के अनुरोध पर गुरु जी ने कौडा भील एवं उसके साथियों को उपदेश देकर कुमार्ग से वर्जित किया। गुरु जी के दर्शन एवं संगत से कौडे भील एवं उसके आदिवासी साथियों का मानो जीवन ही बदल गया। अब वे राक्षसी प्रवृत्तियां छोड़कर गुरु-भक्ति में ध्यान-मग्न हो समस्त बुरे कर्म त्याग कर साधु प्रवृत्ति वाली मानवता की सेवा में जुट गये। जबलपुर शहर से गुरुद्वारा गवारीघाट साहिब दर्शनार्थ पहुंचने हेतु नर्मदा नदी पार करते ही दूसरी तरफ गुरुद्वारा साहिब स्थित है, जिसकी सुंदर इमारत का निर्माण-कार्य प्रगति पर है। गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की अपनी निजी नाव है, इसलिए नदी पार करने एवं गुरु के लंगर की सेवा हर समय उपलब्ध बनी रहती है।

८. गुरुद्वारा टेकरी साहिब, भोपाल

इतिहास साक्षी है कि इस स्थान पर एक कुष्ठ रोगी बिलकुल अंधेरी कोठरी में रहता था, जिसका समस्त शरीर ही कुष्ठ की बीमारी के कारण गल चुका था। यह कुष्ठ रोगी ईश्वर-भक्ति बहुत करता था। वह सदैव ईश्वर को साक्षी मानकर अरदास करता था कि "हे भगवान! यदि मेरी गुरु-भक्ति सच्ची एवं निश्छल है तो आप स्वयं पधार कर मेरे को प्रत्यक्ष दर्शन देकर मेरा रोग दूर कर दें।" कुष्ठ रोगी भक्त की इच्छा-पूर्ति हेतु एक दिन श्री गुरु नानक देव जी विचरण करते हुए कुष्ठ रोगी की अंधेरी कोठरी में जा बिराजे। उसका कुष्ठ रोग दूर कर बिलकुल स्वस्थ बना दिया। पानी की बहुत कमी होने के कारण श्रद्धालुओं की मांग पर श्री गुरु नानक देव जी ने ठंडे पानी का एक झरना प्रकट किया जो आज भी यथावत श्रद्धा का केन्द्र बना हुआ है।

९. गुरुद्वारा सोहागपुर (होशंगाबाद)

सोहागपुर में नर्मदा नदी के तट पर मठ के रूप में एक गुरुद्वारा बना हुआ है, जहां पर श्री गुरु ग्रंथ साहिब की पवित्र पुरातन बीड़ का प्रकाश हो रहा है। इतिहास के प्रमाणिक तथ्यों के अनुसार श्री गुरु नानक देव जी इस स्थान पर आकर ध्यानमग्न हुए। गांव के बाहर ऊंची टेकरी पर जाकर गुरु जी ने देखा कि पूरा गांव ही शोक में डूबा हुआ है। पता चला कि गांव के धनाढ्य मुखिया के नौजवान पुत्र का निधन हो गया है जिस कारण यहां का वातावरण शोकमय बना हुआ है। गुरु जी ने शबद-कीर्तन कर एवं उपदेश देकर गांव वालों को समझाया कि यह शरीर नाशवान एवं अस्थिर है जो पानी के बुलबुले की भांति नष्ट हो जाता है। क्या भरोसा कि अगला सांस आवे अथवा नहीं! इसलिए प्रभु की आज्ञा को मुक्त मन से स्वीकार करना ही हमारा कर्त्तव्य व धर्म है।

(शेष पृष्ठ ४७ पर)

वृक्ष व मानव का आदि-जुगादि रिश्ता

*-श्री वरगिस सलामत**

चाहे हम वैज्ञानिक तथ्यों को मानें या धार्मिक उत्पत्ति में विश्वास रखें, दोनों के गहन अध्ययन से यह बात साफ है कि पेड़-पौधे और जीव-जन्तु इस प्रकृति में मानव की उत्पत्ति से पहले थे अर्थात् वृक्ष मानव के ज्येष्ठ हैं। "आवश्यकता आविष्कार की जननी है" कहावत को आधार बनायें तो पता चलता है कि मानव धीरे-धीरे विकसित हुआ और वृक्षों ने इसके दादा-दादी, माता-पिता, दायी मां और भ्राता बनकर इसकी उंगली पकड़कर चलना सिखाया। अपने फूल, फलों व पत्तियों से मानव को कई खाद्य-पदार्थ प्रदान किये।

हमारे बुजुर्ग हमें प्राचीन कहानियां सुनाते हैं कि पेड़ भी हम इंसानों की तरह चला करते थे बेशक यह विचार तर्क की कसौटी पर स्वीकृत होना मुश्किल है परंतु ऐसी कहानियां यह संकेत देती हैं कि वृक्ष और मानव जरूर अपने आदि समाज में परस्पर शारीक रहे होंगे तथा एक दूसरे के दुख-सुख के भागीदार, हमदर्द और हमसफर रहे होंगे। अगर हम महसूस करें तो वृक्ष आज भी एक अच्छे शारीक की तरह हमारे साथ दुख-सुख का रिश्ता निभा रहे हैं, हमारे समागमों, जैसे जन्म-मरण, पाठ-पूजा, शादी-विवाह व घरेलू उपकरणों में वृक्ष शुरू से ही अपनी शगुन आहूति दे रहे हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त शायर "शिव कुमार बटालवी" काव्य चिन्तन के मील पत्थर ने भी वृक्षों अर्थात् पेड़ों को अपने काव्य में कुछ इस तरह पहचाना है :

कुझ रुक्ख मैनूं पुत्त लगदे ने,
कुझ रुक्ख लग्गण मांवां।
कुझ रुक्ख नूहां-धीआं लगदे,
कुझ रुक्ख वांग भरावां।
कुझ रुक्ख मेरे बाबे वाकण,
पत्तर टांवां-टांवां।
कुझ रुक्ख मेरी दादी वरगे,
चूरी पावण कांवां।

क्योंकि मानव स्वभाव से निजस्वार्थी है और धीरे-धीरे भूल गया कि यह प्रकृति मेरे लिए है और इसको संवारना और निखारना मेरा पहला फर्ज है। इसके विपरीत उसने सोने की मुर्गी वाली बात की। उसके लालच ने एक झटके में सब कुछ प्राप्त करने और दुनिया में सबसे आगे निकलने की सोच ली। मूर्ख मानव भूल गया कि जिस शाख को वो काट रहा है वो तो स्वयं उसी शाख के सहारे पर है, वह उसी के कारण जीवित है। लेकिन निजस्वार्थ, लालच और भौतिकवाद में अंधा मानव अपने पहरेदार अर्थात् वृक्षों का कत्ल करता गया, करता गया। फलस्वरूप प्रदूषण, बाढ़, बीमारियां और कई अलामतें हमारे जीवन में शैतान के हाथ में नंगी तलवार की तरह मंडरा रही हैं और हम बेबस उसी को जीवन समझ कर प्रदूषित और बीमार जीवन जीए जा रहे हैं।

हमें आज इसी समय सरकारी, सामाजिक और निजी तौर पर वृक्षों के प्रति सुचेत होने की आवश्यकता है। 'नन्ही छां', 'पेड़ लगाओ वातावरण बचाओ' 'हर कोई एक पेड़ लगाए'

**न्यू भारत कालोनी, तेलीयांवाल, नजदीक रैहमां पब्लिक स्कूल, बटाला, जिला गुरदासपुर-१४३५०५*

आदि प्रोग्राम व योजनाएं सराहनीय हैं। हम ऐसे जितने भी अभियान चलायें, कम हैं। वृक्ष लगाकर उनको सींचना व उनकी देखभाल व्यवहारिक रूप में होना चाहिए न केवल कागजों या फाइलों में। ईश्वर की इस सुंदर कायनात में वृक्ष ही है जो आदि समाज से मानव का सच्चा शरीक रहा है, सच्चा बंधु व पहरेदार रहा है। हमें इनकी महत्ता को समझते हुए चिपकू आन्दोलन की तरह इनको बचाना चाहिए। मानव व प्रकृति के बीच वृक्ष ही है जो हमारे रक्षक व पहरेदार की भूमिका निभा रहे हैं। हमें निजस्वार्थ, लालच या भौतिकता में न बह कर इनकी रक्षा का प्रण लेना चाहिए ताकि हम प्रदूषण, बाढ़ और महामारियों से बच सकें। इससे हमारी संस्कृति व सभ्यता को बढ़ावा मिलेगा। अंत में मैं अपनी एक कविता "रुक्ख अते मनुक्ख" (वृक्ष व मानव) के माध्यम से दोनों के परस्पर सम्बंध बताना चाहूंगा :

हुंदा है बड़ा दुक्ख, जद मरदा है मनुक्ख।
कई रोणें, कई धोणें हुंदे,
कई रसमां, कई कसमां पूरदे,
प्रार्थनावां ते अरदासां करदे।
ऐपर मुकदी न जिऊण दी भुक्ख,
हुंदा है बड़ा दुक्ख।
कुझ आपणे कुझ पराइयां वल्लों,
कुझ दूर दे कुझ नेड़लियां वल्लों,
कुझ झूठे, कुझ सच्चे मनों,
बझदे सिफतां दे पुल, हुंदा है बड़ा दुख।
पर रुक्ख, जो है धरती पुत्त,
पर रुक्ख, जो है जीवन सुख,
पर रुक्ख, जो है जीवन अरस,
पर रुक्ख, जो है जीवन अंम्रित,
पर रुक्ख, जो है जीवन भोग,
पर रुक्ख, जो है जीवन योग,
पर रुक्ख, जो है सच्चा हमदर्द,
पर रुक्ख, जो है साह (सांस) सरोत,
घटदा जावे! कटदा जावे!
सुकदा जावे! मुकदा जावे!



मध्य प्रदेश के ऐतिहासिक गुरुद्वारा साहिबान

(पृष्ठ ४५ का शेष)

१०. गुरुद्वारा साहिब अमरकटक

अमरकटक में दूर-दूर तक सुंदर पहाड़ियां दिखलाई पड़ती हैं। यह संयोग ही है कि इस स्थान से नर्मदा नदी एवं सोन नदी का उद्गम हो रहा है, किन्तु दोनों ही नदियां विपरीत दिशा की ओर प्रवाहित हो रही हैं। यह स्थान श्री गुरु नानक देव जी के आगमन से पवित्र हो गया। श्री गुरु नानक देव जी ने अनेक ऋषियों-मुनियों एवं साधु-संतों से ज्ञान-चर्चा कर यह बताने का प्रयास किया कि ईश्वर हमारे हृदय में निवास कर रहा है, उसको खोजने के लिए घर-परिवार छोड़कर जंगलों में भटकने की आवश्यकता नहीं है। केवल अच्छे कर्म और शुद्ध हृदय से ईश्वर-प्राप्ति संभव है, क्योंकि परमेश्वर सर्वव्यापक एवं सर्वशक्तिमान है, जो हर जगह विद्यमान है। यदि मन में द्वेष और कपट हो तो भूखे-प्यासे रहने से, शरीर पर राख मलने से, धूनी जलाने से और शरीर को अनायास ही कष्ट देने से कोई फायदा होने वाला नहीं है और न ही ईश्वर-प्राप्ति हो सकती है। जिन-जिन स्थानों पर गुरु जी ने ज्ञान-चर्चा की थी वहां-वहां पर ऐतिहासिक गुरुद्वारा साहिबान सुशोभित हो रहे हैं, जो गुरु साहिबान के आध्यात्मिक-ज्ञान एवं दर्शन को स्मरण करा रहे हैं।



गुरबाणी राग परिचय : २१

बरसै अंम्रित धार बूंद सुहावणी : राग तुखारी

*-स. कुलदीप सिंघ**

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में राग मारू के बाद राग तुखारी, बाणी क्रमांक २२ पर ग्यारह पन्नों में अंकित है। इस राग की बाणी में केवल ११ छंद हैं। इस राग का उल्लेख राग माला में नहीं है। राग तुखारी काफी ठाठ का संपूर्ण राग है। इसका वादी स्वर 'स' और संवादी स्वर 'प' है।

राग तुखारी में श्री गुरु नानक देव जी के छ: छंद हैं। प्रथम छंद का शीर्षक बारह माह है। इसमें १७ पद (चरण) हैं। बारह माहा में जीवात्मा की प्रभु-मिलन के लिए उत्कण्ठा व्यक्त की गई है। प्रथम चार पदों में प्रकृति की काव्यात्मक पृष्ठभूमि है। प्रकृति में कोकिल और पपीहा प्रभु से निकटता अनुभव करते हैं। पपीहा अनुराग से प्रिय-प्रिय रटता है और कोकिल मधुर राग अलापती है। पूर्ण समर्पण से हरि के चरणों में ध्यान लगाना चाहिए। चौथे पद में गुरु की बाणी की तुलना मेघ के जल से की गई है। मेघ से पृथ्वी हरी-भरी और सुहावनी होती है। गुरु-उपदेश की अमृत बाणी से प्रभु-मिलन का चिरन्तन आनंद मिलता है :

बरसै अंम्रित धार बूंद सुहावणी ॥ . . .
उनवि घन छाए बरसु सुभाए मनि तनि प्रेमु सुखावै ॥
नानक वरसै अंम्रित बाणी करि किरपा घरि आवै ॥ *(पन्ना ११०७)*

मासिक क्रम के प्रथम चार पदों में बसंत और ग्रीष्म ऋतु की पृष्ठभूमि में जीवात्मा का प्रभु से विरह का वर्णन है। चैत्र मास में आम की डाली पर कोयल का बोलना तथा वृक्षों की पुष्पित डाली पर भ्रमरों का गुंजन जीवात्मा को विरह की मरण-दशा में पहुंचा देता है। वैसाख महीने में पेड़ों से नई शाखाएं फूट कर वृक्षों की शोभा बढ़ाती हैं। ज्येष्ठ और आषाढ़ के महीनों में धरती तपती है, सूर्य धरती के रस को सुखा देता है। इस कठिन परिस्थिति में भी जिसका मन सत्कर्म में लीन रहता है प्रभु उसका सहायक होता है।

बसंत और ग्रीष्म ऋतु के बाद सावन महीने में वर्षा से चारों ओर हरियाली का वातावरण होता है। सावन का सुहावना महीना भी विरहणी के लिए कष्टदायक है। सावन के बाद सभी जगह जल ही जल दिखाई देता है। भादों के महीने में रात में गहन अंधेरा होता है। जीव-जन्तु कई प्रकार से अपनी उपस्थिति दर्ज कराते हैं। मोरों का नाचना, पपीहे का चीत्कार तथा मेंढकों का टरटराना एक सजीव अनुभव है। सांपों का डंसना तथा मच्छरों का दंशन (डंक मारना) कष्टकारी अनुभव है। प्रभु की शरण लेना ही सुखद अनुभव है।

वर्षा ऋतु के बाद शरद ऋतु में प्रकृति का उपद्रव शांत होता है और आश्विन तथा कार्तिक के महीने में जीवात्मा प्रभु-मिलन के लिए पुन: प्रयास करती है। कार्तिक की चांदनी रात सहज आलोक प्रभु-चिंतन में सहायक होती है। कपट के अंधेरे दरवाजे को थोड़ी देर खोलने से भी काफी लंबे समय तक प्रकाश मिलता है। दरवाजा खोलने की विधि नाम-भक्ति है :

नामु भगति दे निज घरि बैठे अजहु तिनाड़ी

**सी-१२७, गुरु तेग बहादर नगर, इलाहाबाद-२११०१६ (उ. प्र.)*

आसा ॥
नानक मिलहु कपट दर खोलहु एक घड़ी खटु मासा ॥ *(पन्ना ११०९)*

शरद ऋतु के बाद मार्गशीर्ष और पौष शिशिर ऋतु के महीने हैं। प्रभु-नाम सम्बंधी 'गीत', 'नाद' और 'काव्य' सुन कर हृदय में प्रेम उत्पन्न होता है, जिससे दुख दूर हो जाते हैं। यद्यपि पूस के महीने में सर्दी से घास और वनस्पति झुलस जाती है किन्तु सर्वव्यापी प्रभु की ज्योति सभी को विनाश से बचाए रखती है। हेमंत ऋतु के अन्तर्गत माघ और फाल्गुन महीने हैं। माघ का महीना पवित्र माना जाता है। इसमें लोग तीर्थ-यात्रा या स्नान करते हैं। गुरु नानक साहिब नाम, जपु, हरि-रस को ही सभी तीर्थों का स्नान मानते हैं। फाल्गुन महीने में प्रभु-प्रेम के स्वाभाविक रूप का वर्णन है। श्रृंगार का बाहरी आडम्बर छोड़ने पर प्रभु स्वयं जीवात्मा को ढूंढ कर श्रृंगार करता है और जीवात्मा प्रभु को प्राप्त कर लेती है :

हार डोर रस पाट पटंबर पिरि लोड़ी सीगारी ॥
नानक मेलि लई गुरि अपणै घरि वरु पाइआ नारी ॥ *(पन्ना ११०९)*

प्रथम छंद के अंतिम चरण (१७) में बारह माहा का निष्कर्ष है। समय की छोटी इकाई, जैसे जल, मुहूर्त तथा घड़ी अथवा बड़ी इकाई, जैसे दिन, माह या ऋतु वही भले हैं जिनमें सहज रूप से सत्य-स्वरूप प्रभु का दर्शन होता है। प्रिय की प्यारी जीवात्मा दिन-रात प्रभु में रमण करती है और उसका सुहाग स्थिर होता है। श्री गुरु अरजन देव जी के द्वारा पउड़ी छंद में बारह माहा रचित बाणी राग माझ में अंकित है। माझ राग में अंकित बारह माहा में १४ पउड़ी छंद हैं। आरंभ और अंत के छंदों में राग तुखारी के बारह माहा का अनुसरण किया गया है :

--तू सुणि किरत करंमा पुरबि कमाइआ ॥
सिरि सिरि सुख सहंमा देहि सु तू भला ॥
(राग तुखारी, पन्ना ११०७)

--किरति करम के वीछुड़े करि किरपा मेलहु राम ॥
चारि कुंट दह दिस भ्रमे थकि आए प्रभ की साम ॥ *(राग माझ, पन्ना १३३)*

--बे दस माह रुती थिती वार भले ॥
घड़ी मूरत पल साचे आए सहजि मिले ॥
(राग तुखारी, पन्ना ११०९)

--माह दिवस मूरत भले जिस कउ नदरि करे ॥
नानकु मंगै दरस दानु किरपा करहु हरे ॥
(राग माझ, पन्ना १३६)

राग तुखारी में दूसरा छंद पहरे सम्बंधी है। इसमें पांच पद हैं। यह छंद सुंदर नयन वाली आलसी जीवात्मा को सम्बोधित है। स्वप्न के समान इस संसार में मायामय जीवन अंधेरी रात्रि के समान है। श्वासों की पूंजी को लापरवाही से रख कर जीव बेसुध पड़ा है, विकार इस पूंजी को चुरा रहे हैं। बालपन के बाद यौवन में अंधकार और सघन होता है। हरि के दिये गए नैतिक गुणों को ईर्ष्या और द्वेष नष्ट कर देते हैं। प्रौढ़ता के तीसरे प्रहर में माया के फंदे का विस्तार होता है। विषय-विकारों का रस प्यारा लगता है, सुत-दारा के मोह में भ्रष्ट उपाय से धन कमाने से प्रतिदिन फंदा कसता जाता है, सत, रज और तम तीन गुणों से युक्त माया प्राणी को मोह में लपेटे रहती है। चौथे प्रहर में माया में लिप्त मनुष्य की अंतिम अवस्था का वर्णन है जिस में शरीर जर्जर हो जाता है। बिना हरि के सिमरन से शरीर राख की ढेरी हो जाता है। निष्कर्ष रूप में मृत्यु का फरमान आने पर जीव प्रभु के दरबार में उपस्थित होता है और किये कर्मों का फल भोगता है। पहरे की परम्परा में सिरी राग में भी श्री गुरु नानक देव जी के दो छंद हैं। तुखारी राग में पहरों का वर्णन अधिक भावपूर्ण

और परंपरा से हट कर है।

बारह माहा और पहरे के छंदों के बाद श्री गुरु नानक देव जी के चार छंदों की शैली सरस और मनोहर है। तीसरे छंद में सतिगुरु के शबद से सेवक के हृदय में प्रभु की ज्योति का वर्णन है। गुरु-उपदेश से मानव जीवन की रात्रि भी प्रभु-सिमरन से जागते हुए व्यतीत हुई और प्रातः काल आत्म-ज्ञान से प्रकाशित हुआ। जीवात्मा इस मातृलोक में गुरु के शबद से निष्टा से पूर्ण हुई और प्रभु-पति के लोक (ससुराल) में भी सम्मानित हुई। सतिगुरु के उपदेश से मिलन संभव हुआ और लज्जा तथा संशय की लुकाछिपी दूर हुई :

पेईअड़ै घरि सबदि पतीणी साहुरड़ै पिर भाणी ॥
नानक सतिगुरि मेलि मिलाई चूकी काणि लोकाणी ॥ (पन्ना ११११)

तीसरे छंद के विपरीत चतुर्थ छंद में पिर की सार न जानने वाली भुलावे में पड़ी जीवात्मा का चित्र है। जीवात्मा को मान और गर्व त्याग कर प्रभु के बुलाए जाने पर विलम्ब नहीं करना चाहिए। अहंकार की मटकी फोड़ कर जीवात्मा के स्वरूप में निखार होता है, प्रभु की लीला में अनुरक्त होने पर द्वैत का घूंघट नहीं रहता। गुरमुख के द्वारा आत्म-ज्ञान होने से जीवात्मा अपने वास्तविक स्वरूप को पहचान लेती है :

जब नाची तब घूघटु कैसा मटुकी फोड़ि निरारी ॥
नानक आपै आपु पछाणै गुरमुखि ततु बीचारी ॥
(पन्ना १११२)

दाम्पत्य भाव के रहस्यवाद के बाद छंद पांच में रंगीले प्रभु के साथ दास-भाव की भक्ति दासों के दास (लालन के लाले) के रूप में व्यक्त हुई है। आत्म-ज्ञान होने पर सेवक की अमूल्य आत्मा में प्रभु का स्वरूप प्रकट होता है। ऐसी आत्मा शुभ गुणों का हार बन जाती है :

नानक हीरा हीरै बेधिआ गुण कै हारि परोवै ॥
(पन्ना १११२)

श्री गुरु नानक देव जी अंतिम छंद में अनजान, अचेत मन को सम्बोधित करते हैं। जगत के जंजाल को छोड़कर एकंकार स्वरूप हरि का सिमरन करना चाहिए। अपार प्रतिम का निवास जन्म-मरण के सागर से पार है, जहां बिना नौका के नहीं पहुंच सकते। शबद-चेतना (सुरति) से यह सागर पार किया जा सकता है। प्रभु का पतित पावन नाम सतसंगति से अनुभवगम्य होता है। सतसंग के आनंद से मानव जीवन सार्थक होता है, जिससे पछताना नहीं पड़ता।

प्रिय मिलन की लालसा का क्रम श्री गुरु रामदास जी के छंदों में विकसित होता है। यदि मन में प्रभु-प्रेम है तो प्रीतम के बिना कैसे जी सकते हैं? प्रभु के दर्शन-अमृत के पान से ही प्यास शांत होगी। जब गुरु पारस मिलेगा तभी हमारा शरीर लोहे से कंचन होगा। प्रभु-कृपा से हम सच्चे प्रभु को अहंकार अर्पित करेंगे और अगम-अगोचर प्रभु की गोद में समा जाएंगे :

अंतरि पिरी पिआरु किउ पिर बिनु जीवीऐ राम ॥ . . .
अद्रिसटु अगोचरु पकड़िआ गुर सबदी हउ सतिगुर कै बलिहारीऐ ॥ (पन्ना १११३-१४)

श्री गुरु रामदास जी के छंद दो तथा तीन में अगम, अगाध हरि के स्वरूप का वर्णन है। वह अगम, अगाध जीवन का आधार और सभी का स्वामी है :

--हरि हरि अगम अगाधि अपरंपर अपरपरा ॥
(पन्ना १११४)

--तू जगजीवनु जगदीसु सभ करता स्रिसटि नाथु ॥ (पन्ना १११५)

अंतरयामी प्रभु जैसे सेवक को चलाता है वैसे ही वह चलता है। प्रभु की कृपा से जिसको भक्ति के भंडार की बख्शिश होती है उसके मन में प्रभु

के प्रति प्रेम और निर्मल भय उत्पन्न होता है :
भउ भाउ प्रीति नानक तिसहि लागै जिसु तू आपणी किरपा करहि ॥
तेरी भगति भंडार असंख जिसु तू देवहि मेरे सुआमी तिसु मिलहि ॥ (पन्ना १११६)

श्री गुरु रामदास जी के चतुर्थ छंद में गुरु के पंथ पर चलने पर यमराज द्वारा कर-वसूली से छुटकारा मिलने का वर्णन है। इसका विशेष उदाहरण श्री गुरु अमरदास जी के द्वारा तीर्थ-यात्रा के माध्यम से दिया गया। श्री गुरु अमरदास जी ने १५७२ में कुरुक्षेत्र और हरिद्वार में सिक्खी के प्रचार के लिए यात्रा की। अकबर बादशाह के आदेश अनुसार गुरु जी और अनुसरण करने वाले सिक्खों से नदी-कर नहीं लिया गया।

राग तुखारी का अंतिम छंद श्री गुरु अरजन देव जी द्वारा रचित है। 'हे प्रीतम! गुरु के द्वारा मेरा मन तुम में अनुरक्त है। मैं तुझ पर बलिहार जाता हूं। मुझ में तुम्हारा रंग इस प्रकार लग गया है जैसे जल में रहने वाली मछली का पानी ही सर्वस्व होता है। हे प्रभु! तेरा महल अपार है उसकी कीमत नहीं कही जा सकती। हे सर्वगुण दाता! मुझ दीन की विनय सुनो। मैं अल्प जीव अपनी चेतना से बार-बार बहिलार जाता हूं। मुझे भव्य स्वरूप का दर्शन दीजिए' :

घोलि घुमाई लालना गुरि मनु दीना ॥
सुणि सबदु तुमारा मेरा मनु भीना ॥
इहु मनु भीना जिउ जल मीना लागा रंगु मुरारा ॥
कीमति कही न जाई ठाकुर तेरा महलु अपारा ॥
सगल गुणा के दाते सुआमी बिनउ सुनहु इक दीना ॥
देहु दरसु नानक बलिहारी जीअड़ा बलि बलि कीना ॥ (पन्ना १११७)



कविता

पानी

पानी की कहानी
आदि पुरानी, जुगादि पुरानी।
"पहिला पाणी जीउ है
जितु हरिआ सभु कोइ ॥"
कहती सतिगुरुओं की बाणी,
नदियों के किनारे फूली-फली,
प्रत्येक सभ्यता पुरानी।
अहमियत पानी की,
कभी भूल न जानी।
इसके सहारे पर जिंदा है,
यहां हर एक प्राणी।
मगर अब पानी की कहानी,
नहीं रही उतनी सुहानी।
अगर न संभाला पानी को,
तो यह धरती सूख जाएगी,
हरियाली रह न पाएगी।
फिर न दिखाई देगी, कोई नदी और झील।
फिर न सुनाई देगा, बहते झरनों का संगीत।
अंधाधुंध पानी का दोहन,
हरे-भरे जंगलों का दहन, यहां हो रहा है।
यह क्या हो रहा है?
हमारा लालच खत्म कर देगा, सभ्यता पुरानी।
पानी की कहानी, कभी भूल न जानी।
पानी का महत्त्व यदि न जाना,
पेड़ों का अस्तित्व यदि न पहचाना,
फिर हमें पड़ेगा बहुत पछताना।
है मानवता की होंद बचानी।
पशु-पक्षी तड़पते यहां बिन पानी।



-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर', बी-एक्स, ९२५, मोहल्ला संतोखपुरा, होशियारपुर रोड, जालंधर-१४४००४

गुरबाणी चिंतनधारा-३५

रहरासि साहिब—विचार व्याख्या

*-डॉ. मनजीत कौर**

'रहरासि' बाणी का पाठ सूर्यास्त के समय व्यक्तिगत रूप से या संगत में मिल-बैठ कर करने या सुनने का आदेश है। नित्तनेम की बाणियों में अमृत वेला में जपु जी साहिब, जापु साहिब, त्व प्रसादि सवैये पा. १० तथा सन्ध्या के समय रहरासि साहिब, रात्रि सोने से पूर्व सोहिला बाणी का पाठ करना एक गुरसिक्ख के लिए अनिवार्य है।

'रहरासि' शब्द का अर्थ विविध विद्वानों के चिन्तनानुसार नमस्कार, वेनती, मर्यादा, रीति-रिवाज अथवा मार्ग की पूंजी आदि माना गया है। पहले इस बाणी का नाम "सो दरु" प्रचलित था, लेकिन बाद में इस बाणी का शीर्षक "रहरासि" कैसे पड़ा? सिक्ख मिशनरी कालेज लुधियाना द्वारा प्रकाशित पुस्तक में इस सन्दर्भ में स्पष्ट किया गया है कि इस बाणी में निम्न-लिखित पंक्ति में आये 'रहरासि' पद से यह नाम चयन किया गया है।

गुरमति नामु मेरा प्रान सखाई हरि कीरति हमरी रहरासि ॥ *(पन्ना १०)*

ऐतिहासिक खोज से स्पष्ट होता है कि दशम पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के समय यह नाम प्रचलित था क्योंकि गुरदेव के अनन्य सिंघ भाई नंद लाल जी ने 'रहरासि' पद का प्रयोग रहतनामे में इस प्रकार किया है :

बिन रहिरास समां जो खोवै, कीरतन पड़ै बिना जो सोवै।
प्राता काल सतिसंग न जावै, तनखाहदार वह वडा कहावै।

सन्ध्या समय "सो दरु" बाणी पढ़ने की आज्ञा श्री गुरु नानक देव जी द्वारा हुई है जिसका जिक्र भाई गुरदास जी ने किया है :

संझै सोदरु गावणा मन मेली करि मेलि मिलंदे।
राती कीरति सोहिला करि आरती परसादु वंडंदे ॥ *(वार ६:३)*

चार महान यात्राओं के पश्चात जब श्री गुरु नानक देव जी करतारपुर में निवास करने लगे तब यह नित्तनेम की मर्यादा तथा प्रभु-सिमरन करने का पावन उपदेश इस प्रकार दृढ़ करवाया, जैसा कि भाई गुरदास जी ने अपनी पहली वार में स्पष्ट किया है :

फिरि बाबा आइआ करतारपुरि भेखु उदासी सगल उतारा। . . .
सो दरु आरती गावीऐ अंम्रित वेले जापु उचारा। *(वार १:३८)*

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की बाणी में "रहरासि" शब्द शीर्षक रूप में नहीं आया अपितु बाणी में इस तरह अंकित है :

. . . हरि कीरति हमरी रहरासि ॥ *(पन्ना १०)*

बाबा कान्ह सिंघ सेवा पंथी ने इस तथ्य को इस तरह स्पष्ट किया है कि गुरु पातशाह का फरमान है कि "सो दरु" बाणी द्वारा हरि की कीर्ति करना हमारी (रहरासि) नित्तनेम है। पावन बाणी में रहरासि का पहला शबद "सो दरु" है।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री

**२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर (राजस्थान)-३०२००४ फोन : ०१४१-२६५०३७०*

अमृतसर द्वारा प्रकाशित पंथ-स्वीकृत सिक्ख रहित मर्यादा (आचार संहिता) के अनुसार 'सो-दरु' से लेकर *'सरणि परे की राखहु सरमा'* तक, बेनती चौपई पातशाही १० (*हमरी करो हाथ . . . दुसट दोख ते लेहु बचाई*) तक, सवैया (*पाइं गहे जब ते तुमरे*) और दोहरा (*सगल दुआर कउ छाडि कै*) अनंदु साहिब की पहली पांच पउड़ियां तथा अंतिम एक पउड़ी, मुंदावणी तथा सलोक महला ५ (*तेरा कीता जातो नाही*) वाले शबद तक रहरासि साहिब का पाठ पढ़ा जाना चाहिए। इस बाणी के पाठ का समय सूर्यास्त के समय है जब सूर्यास्त होने लगता है जब परिंदे अपने-अपने घोंसलों की ओर मुड़ने लगते हैं, सभी जीव-जंतु अपने-अपने घरौंदों की ओर मुंह करते हैं और जब इंसान सारा दिन का थका-हारा अपने गृह की ओर प्रस्थान करता है। यह एक ठहराव का समय होता है तथा पुन: ईश्वर से जुड़ाव का। दिन भर के कार-व्यवहार से थका-हारा मन और तन पुन: सहजता से एकाग्रचित होकर प्रभु-सिमरन तथा बंदगी द्वारा आत्म-केन्द्रित होकर एक विलक्षण सुकून एवं शान्ति का अनुभव कर सके।

वैसे चाहे गुरसिक्ख के लिए श्वास-श्वास सिमरन की प्रेरणा गुरबाणी द्वारा दी गई है फिर भी अमृत वेला की सम्भाल, संध्या वेला का ठहराव तथा रात्रि विश्राम से पूर्व सोहिला की बाणी द्वारा उस अकाल पुरख तथा नित्य खर्च होती श्वासों की पूंजी अर्थात् मृत्यु को याद रखना जीव को हर पल सिमरन के लिए प्रेरित करते हैं। अत: सो दरु रहरासि साहिब की बाणी का सन्ध्या का समय कितनी गुणवत्ता एवं सार्थकता को अपने अंदर संजोए हुए है! यह वही जान सकते हैं जो नित्तनेम की इस बाणी को प्रेम एवं श्रद्धापूर्वक पढ़ते या सुनते हैं।

रहरासि साहिब

सो दरु रागु आसा महला १
ੴ सतिगुर प्रसदि ॥
सो दरु तेरा केहा सो घरु केहा जितु बहि सरब समाले ॥
वाजे तेरे नाद अनेक असंखा केते तेरे वावणहारे ॥
केते तेरे राग परी सिउ कहीअहि केते तेरे गावणहारे ॥ (पन्ना ८)

"सो दरु" इस बाणी का शीर्षक है जिसका अर्थ है वह दरवाजा जिसमें अकाल पुरख के दर-घर की महिमा का वर्णन है। आसा राग में उच्चारण किया गया यह पावन शबद श्री गुरु नानक देव जी के मुखारबिंद से उच्चरित हुआ है। एक ओअंकार अर्थात् एक परमेश्वर जिसकी सर्वव्यापकता का बोध गुरु की कृपा से होता है तथा गुरु की रहमत द्वारा ही उस परमेश्वर को जपा जा सकता है।

हे वाहिगुरु! तेरा वह दर (दरवाजा) कैसा अद्‌भुत है और वह घर कैसा विलक्षण होगा जिसमें बैठकर तू सब जीवों की निरन्तर सार-सम्भाल करता है अर्थात् जिस दरवाजे के उस निकेतन में बैठा तू हर पल सबका ध्यान रखता है? तेरी इस अनोखी दुनिया में असंख्य वाद्य-यंत्र तथा राग हैं। असंख्य जीव उन वाद्य-यंत्रों को बजाने वाले हैं। अनेकों ही जीव राग-रागनियों सहित तेरा यशोगान करते हैं अर्थात् तेरी उपमा करने वाले असंख्य ही जीव हैं।

वस्तुत: उस परमेश्वर का गुणगान करने वालों का भी अंत नहीं है। यह वो दर है जहां पहुंच कर "मैं, मेरी" मिट जाती है। सर्वत्र में उसी मालिक के दीदार होते हैं, जैसा कि भक्त कबीर जी का पावन शबद है :

कबीर तूं तूं करता तू हूआ मुझ महि रहा न हूं ॥
जब आपा पर का मिटि गइआ जत देखउ तत

तू ॥ (पन्ना १३७५)
गावनि तुधनो पवणु पाणी बैसंतरु गावै राजा धरमु दुआरे ॥
गावनि तुधनो चितु गुपतु लिखि जाणनि लिखि लिखि धरमु बीचारै ॥

हे प्रभु! हवा, पानी तथा अग्नि तेरा ही गुण-गायन कर रहे हैं। तेरे दर पर विराजमान धर्मराज भी तेरी ही उपमा कर रहा है अर्थात् पांचों तत्व तेरी ही स्तुति कर रहे हैं। चित्रगुप्त (जो दिन-रात जीवों के अच्छे-बुरे कर्मों के लेखे-जोखे निरंतर लिखते रहते हैं, जिनके द्वारा लिखे हुए जीवों के (संकल्पों-विकल्पों) अर्थात् प्रत्येक कर्म पर धर्मराज विचार करता है तथा जीवों के कर्मों के अनुसार उन्हें दुख-सुख देता है।

गुरबाणी में अन्यत्र भी प्रमाण है कि किस तरह सारी प्रकृति, पांचों तत्व तेरे ही बनाए नियमों की पालना कर रहे हैं अर्थात् तेरे ही भय में सारी प्रकृति कार्यरत है, यथा :

भै विचि जोध महाबल सूर ॥
भै विचि आवहि जावहि पूर ॥
सगलिआ भउ लिखिआ सिरि लेखु ॥
नानक निरभउ निरंकारु सचु एकु ॥
(पन्ना ४६४)

गावनि तुधनो ईसरु ब्रहमा देवी सोहनि तेरे सदा सवारे ॥
गावनि तुधनो इंद्र इंद्रासणि बैठे देवतिआ दरि नाले ॥

हे वाहिगुरु! अनेकों देवियां, शिव और ब्रहमा आदि देवता जो तेरे संवारे हुए सदा तेरे दर पर सुशोभित हैं, तेरे ही गुण गा रहे हैं अर्थात् तेरे द्वारा सुशोभित देवत्व को प्राप्त ये देवते तेरी ही स्तुति करते हुए सदैव शोभा पा रहे हैं। अनेकों ही इन्द्र देवता अपने सिंघासन पर बैठे हुए देवताओं सहित, तेरे दर पर तुझे गा रहे हैं, तेरी ही उपमा कर रहे हैं।

गावनि तुधनो सिध समाधी अंदरि गावनि तुधनो साध बीचारे ॥
गावनि तुधनो जती सती संतोखी गावनि तुधनो वीर करारे ॥

हे वाहिगुरु! सिध पुरुष समाधियां लगाकर अर्थात् ध्यान में लीन होकर तुझे ही गा रहे हैं अर्थात् तेरी ही बंदगी कर रहे हैं। साधक ज्ञान-चिंतन में लगे हुए तेरे ही गुणों की विचार कर रहे हैं। अनगिनत ब्रह्मचारी, दानी, संतोषी तेरी ही उपमा कर रहे हैं। बलशाली (शूरवीर) भी तुझसे ही बल प्राप्त कर तेरा ही यशोगायन कर रहे हैं।

सूरमा वह है जो धर्म के मार्ग पर चलता हुआ बिनी किसी डर के लड़ता जाये, जैसा कि गुरबाणी का पावन फरमान है :

सूरा सो पहिचानीऐ जु लरै दीन के हेत ॥
पुरजा पुरजा कटि मरै कबहू न छाडै खेतु ॥
(पन्ना ११०५)

गावनि तुधनो पंडित पड़नि रखीसुर जुगु जुगु वेदा नाले ॥
गावनि तुधनो मोहणीआ मनु मोहनि सुरगु मछु पइआले ॥

हे वाहिगुरु! पंडित (विद्वान) तथा महाऋषि, जो वेदों का पठन करते हैं, वेद पढ़ते हुए वेदों सहित तेरी ही स्तुति कर रहे हैं। सुंदर स्त्रियां जो अपने अनुपम सौन्दर्य से मानव मन को मोह लेती हैं अर्थात् चित्त को आकर्षित कर लेती हैं, वे भी तेरी ही उपमा कर रही हैं।

तीनों लोकों (स्वर्ग लोक, मात लोक तथा पाताल लोक) के सभी जीव तेरी ही शोभा का बखान कर रहे हैं।

गावनि तुधनो रतन उपाए तेरे अठसठि तीरथ नाले ॥

गावनि तुधनो जोध महाबल सूरा गावनि तुधनो खाणी चारे ॥
गावनि तुधनो खंड मंडल ब्रहमंडा करि करि रखे तेरे धारे ॥

हे वाहिगुरु! तेरे पैदा किये हुए अनमोल रत्न अड़सठ तीर्थों सहित तुझे ही गा रहे हैं। दिव्य गुणों से विभूषित संत-जन तेरा ही यशोगान कर रहे हैं। ऐसे संत-जन, अड़सठ तीर्थ जिनके चरणों में निवास करते हैं, वे भी तेरी ही उपमा कर रहे हैं।

महान योद्धा, महाबली सूरमे भी हे प्रभु! तेरी महिमा का बखान कर रहे हैं। ये बलशाली वीर तुझसे प्राप्त शक्ति को प्रकट करके मानो तेरी ही स्तुति कर रहे हैं। चारों ही खाणियों से उत्पन्न जीव (उत्पत्ति के चार स्रोत—अंडज, जेरज, सेतज तथा उतभुज) अर्थात् ब्रह्मण्ड की समूची रचना (समस्त जीव-जंतु) तेरा ही गुणगान कर रहे हैं। हे प्रभु! सम्पूर्ण सृष्टि के समस्त खण्डों-ब्रह्मण्डों की रचना कर उनकी सार-सम्भाल करने वाले सब तेरी ही स्तुति कर रहे हैं। वस्तुतः उस ईश्वर के बनाए हुए तथा उसी के सहारे खड़े सभी (आकाश मंडल, धरती तथा पाताल मंडल) की समूची रचना तेरी ही उपमा कर रही है।

सेई तुधनो गावनि जो तुधु भावनि रते तेरे भगत रसाले ॥
होरि केते तुधनो गावनि से मै चिति न आवनि नानकु किआ बीचारे ॥

हे प्रभु! वास्तव में उन्हीं की की गई उपमा सफल है जो तुझे प्रवान हो जाए। तेरे प्रेम में रंगे हुए जीवों द्वारा की गई तेरी स्तुति ही तेरे दर पर कबूल (प्रवान) होती है। तेरी भक्ति के रंग में रंगे जीव प्रेम का ही पर्याय बन गए तथा भक्त-जनों का प्रत्येक कार्य प्रभु का गुणगान प्रकट करने वाला होता है। और भी कितने ही हैं जिनकी गिनती भी मुमकिन नहीं है, वे सब मेरे चित्त में नहीं आ सकते हैं। उनकी क्या विचार की जाए? श्री गुरु नानक देव जी यहां स्पष्ट करते हैं कि उन सबकी विचार करना किसी के वश की बात नहीं, क्योंकि वे सब स्मृति में आ पायें ऐसा मुमकिन नहीं। यहां गुरदेव की विनम्रता के सहज ही दर्शन होते हैं कि कलयुगी जीवों को गुरु पातशाह किस तरह जीवन में गुणों का सार बता रहे हैं, जैसा कि अन्यत्र भी गुरदेव की बाणी में इसी भाव के दर्शन होते हैं :

मिठतु नीवी नानका गुण चंगिआईआ ततु ॥
(पन्ना ४७०)

सोई सोई सदा सचु साहिबु साचा साची नाई ॥
है भी होसी जाइ न जासी रचना जिनि रचाई ॥

वह परमेश्वर सत्य-स्वरूप है और वही सदा स्थिर (कायम) रहने वाला मालिक है। वह सदा सत्य-स्वरूप है तथा उसकी उपमा भी सदा कायम रहने वाली है।

जिस अकाल पुरख ने यह रचना रची है वह वर्तमान में तो मौजूद है ही, भूत काल में भी था तथा भविष्य काल में भी रहेगा। वह न जन्म लेता है और न ही मृत्यु को प्राप्त होता है अर्थात् वह प्रभु आवागमन से पूर्णतया मुक्त है।

रंगी रंगी भाती करि करि जिनसी माइआ जिनि उपाई ॥
करि करि देखै कीता आपणा जिउ तिस दी वडिआई ॥

उस सृजनहार प्रभु ने अनेक रंगों की अनेक किस्मों की माया पैदा की है। प्रभु रचना रच कर अपने पैदा किये संसार के समस्त जीवों की सार-सम्भाल भी कर रहा है। जिस तरह वह स्वयं आश्चर्यचकित कर देने वाली रचना

करता है वैसे ही निरंतर उनकी सार-सम्भाल भी कर रहा है। उसकी शोभा अकथनीय है। गुरबाणी में अन्यत्र भी यही भाव दृढ़ाया गया है :

अति ऊचा ता का दरबारा ॥
अंतु नाही किछु पारावारा ॥ (पन्ना ५६२)
जो तिसु भावै सोई करसी फिरि हुकमु न करणा जाई ॥
सो पातिसाहु साहा पतिसाहिबु नानक रहणु रजाई ॥१॥

प्रस्तुत शबद की अंतिम पंक्तियों में श्री गुरु नानक देव जी का पावन फरमान है कि जो परमेश्वर को अच्छा लगता है वही कुछ वह करता है। उसके आगे किसी का हुक्म नहीं चल सकता, किसी की पेश नहीं जाती कि वह ईश्वर से कह सके, हे मालिक! तू ऐसे नहीं ऐसे कर। अर्थात् उसके हुक्म की अवहेलना करने की किसी में सामर्थ्य नहीं है।

वह परमेश्वर सारी दुनिया का पातशाह है। वह बादशाहों का भी बादशाह है। गुरु जी कथन करते हैं कि जीवों को उसकी रजा में रहना ही शोभा देता है। वस्तुतः प्रभु बादशाहों की भी इज्जत रखने वाला है। ऐसे कृपालु, महान शक्तिशाली ईश्वर के हुक्म में ही जीवों को सदैव राजी रहना चाहिए। गुरबाणी में अन्यत्र यही भाव दृढ़ करवाया गया है, जैसे कि:

हुकमि मंनिऐ होवै परवाणु ता खसमै का महलु पाइसी ॥ (पन्ना ४७१)

पंचम पातशाह की पावन बाणी हमारा मार्गदर्शन करती है कि जिस प्रभु के आगे तेरी कोई पेश नहीं जाती उसे बार-बार नमस्कार कर :

जिसु ठाकुर सिउ नाही चारा ॥
ता कउ कीजै सद नमसकारा ॥ (पन्ना २६८)

रहरासि साहिब बाणी के पहले शबद में श्री गुरु नानक देव जी उस सर्वकला सम्पूर्ण प्रभु का गुणगान करते हुए सम्पूर्ण रचना के जीवों को, समस्त तत्वों को उसी की आज्ञा के अधीन कार्यरत दर्शा कर कलयुगी जीवों को उसी की रजा में राजी रहने का पावन संदेश दे रहे हैं, क्योंकि उस मालिक की रजा में चलना ही उसकी सच्ची स्तुति करना है।



कविता

मत भूलना

ईश्वर की दी हुई सौगात मत भूलना।
बंदे कभी अपनी औकात मत भूलना।
आये जिन्दगी में चाहे जितने भी झंझावात,
आती है हर रात के बाद, प्रभात मत भूलना।
राव को जो रंक करे रंक को जो राव कर दे,
स्मरण रखना सदा, यह बात मत भूलना।
चौरासी लाख योनियों में, चाहे तेरी सरदारी है,
तू प्रभु की कृत है, यह बात मत भूलना।
हर जीव उसी के हाथ की कठपुतली है,
कठपुतली का कर्म-ओ-कर्मात मत भूलना।
जितना भी चाहे ज्ञान दुनिया में पा ले तू,
"मनि जीतै जगु जीतु" गुरु-सिद्धांत मत भूलना।
ईश्वर की दी हुई सौगात मत भूलना।
बंदे कभी अपनी औकात मत भूलना।



गुरु-गाथा : १३

निशाने के लिए सिर चाहिए

*-डॉ. अमृत कौर**

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी साबो की तलवंडी, जो आजकल श्री दमदमा साहिब के नाम से भी जानी जाती है, में पहुंचे। यहां का शिरोमणि व्यक्ति था भाई डल्ला। भाई डल्ला इस स्थान का एक प्रकार का राजा था। वह राजा न होते हुए भी शक्ति में राजा से कम नहीं था। तलवंडी के सभी निवासी उसका कहना मानते थे। इसके पास अपना एक छोटा-सा किला था, योद्धाओं की टुकड़ी भी, अमीरों जैसा ठाठ-बाठ था। स्वयं ही वह जत्थेदार और सिपाही था। पिता-पितामह से गुरु-घर का सिक्ख था।

जब भाई डल्ला ने गुरु जी के तलवंडी आगमन के बारे में सुना तो चार सौ शूरवीरों की टुकड़ी के साथ अभिनंदन करने के लिए पहुंचा। लंगर की सेवा उसने अपने साथियों के साथ अपने सिर पर ले ली। आदर-सम्मान में उसने कोई कमी नहीं छोड़ी। चरणों पर शीश निवाया, एक घोड़ा और सौ रुपया भेंट किया और गुरु जी के साथ चल पड़ा। थोड़ी दूर जाने के बाद गुरु जी ने कहा, "भाई डल्लिआ! आज डेरा (पड़ाव) यहां करेंगे।" भाई डल्ले ने सिर निवाया। देखते ही देखते तम्बू लग गए। श्री गुरु तेग बहादर जी ने कभी यहां दो दिन के लिए डेरा डाला था। गुरु जी ने प्रसन्न होकर कहा, "यह अनंदपुर साहिब का दमदमा है।" तब से इस स्थान का नाम दमदमा साहिब प्रसिद्ध हुआ। चार-पांच दिन डेरा इस स्थान पर रहा। सम्पूर्ण लंगर का सामान भाई डल्ला के किले से आता। दोनों समय दीवान सजता। एक दिन गुरु जी वचन-विलास कर रहे थे कि भाई डल्ला ने साहिबजादों की शहादत और अनंदपुर साहिब के साके पर सहानुभूति प्रकट करते हुए कहा, "महाराज! मेरे फौजी साथी बड़े शक्तिशाली सैनिक हैं। यदि आप मुझे अनंदपुर साहिब के युद्ध में याद करते तो यह दास भी युद्ध में शामिल हो जाता। आप जी के बहादुरों ने तुर्कों के अच्छे दांत खट्टे किए हैं, परन्तु यदि मेरा दल भी होता तो हम मुगलों को मसल कर रख देते।" गुरु जी मुस्कराए और बोले, "यह अच्छा है कि तुम सिक्ख सजे हो, परन्तु बाणी और नाम-सिमरन में अभी पूरे परिपक्व नहीं। तुम लोग अभी पूर्ण रूप से खालसा नहीं सजे।" भाई डल्ला ने कहा, "पातशाह! हम सब आपके चरणों की धूल हैं, परन्तु बहादुरी तो बाजुओं की शक्ति पर निर्भर है और बाजू हमारे तगड़े हैं। मेरा एक-एक सिपाही अवश्य सौ-सौ पर भारी होता।" गुरु जी ने कहा, "भाई डल्लिआ! जो बीत गई सो बीत गई। जो प्रभु का हुक्म था वह घट गया, देश तो अभी भी गुलामी की जंजीरों में जकड़ा हुआ है। अभी तो वीरों के लिए धार्मिक स्वतंत्रता, देश-सेवा और देश पर शीश न्यौछावर करने की आवश्यकता समाप्त नहीं हुई।"

भाई डल्ला ने लंबी सांस भरते हुए कहा, "सत्य है महाराज! मगर एक अरमान दिल में रह गया है कि हम यहां आराम से बैठे रह गए और प्यारे साहिबजादे एवं अनगिनत सिक्ख, सिंघ-सिंघनियां दुश्मनों से जूझते हुए शहीद हो

*१५४, ट्रिब्यून कालोनी, बलटाना, जीरकपुर-१४०६०३, मो. ९८१५१०९९५७

गए। निष्फल है हमारा जीवन।" सतिगुरु मुस्कराए, "वे सभी वीर-योद्धा थे जो देश-धर्म की खातिर शहीद हो गए मगर मेरा खालसा अभी भी जीवित है।"

यह वार्तालाप चल ही रहा था कि लाहौर से एक सिक्ख कारीगर आया। चरणों में शीश झुकाए एक अत्यन्त सुंदर बंदूक भेंट कर बोला, "पातशाह! एक तुच्छ-सी भेंट है।" गुरु जी ने बंदूक उठाई और अत्यंत प्रसन्न होकर कहने लगे, "यह बहुत बढ़िया नया आविष्कार है। अत्यन्त दूर तक निशाना लगाया जा सकता है।" गुरु जी ने भाई डल्ले को निहारते हुए कहा, "भाई डल्लिआ! एक-दो आदमी अपनी टुकड़ी से ले आओ, थोड़ी दूरी पर खड़ा कर दो। हम यह बंदूक चला कर देखना चाहते हैं कि बंदूक बनाने की कारीगारी कितनी सफल रही है।" यह कह कर गुरु जी तो बंदूक खोलने, परखने और बारूद भरने में लग गए। भाई डल्ला ने अपने सिपाहियों के दल की ओर देखा। आधे सिपाही तो यह बात सुनते ही खिसक गए। बाकी सिर झुकाए देखने लगे। भाई डल्ला भी सोच में पड़ गया कि बंदूक परखने के लिए दो जवान खत्म कर देना कहां की बात है? अकारण जान कौन दे? अभी भाई डल्ला ने अपने दल को ललकारा भी नहीं था कि कुछ और जवान खिसक गए। भाई डल्ला ने साहस कर अपनी इज्जत बचाने के लिए आवाज लगाई, परन्तु क्षण भर में भाई डल्ला अकेला रह गया। इस अन्तराल में गुरु जी जान-बूझ कर बंदूक खोलते, बंद करते रहे। भाई डल्ला सिर झुकाए चिंतातुर बैठा था। कद वही, शरीर वही, पर चेहरा पीला पड़ गया था। अकेला रह गया था, सोच में डूबा हुआ।

गुरु जी उसकी यह मनोदशा देख कर मुस्कराए और एक सिक्ख को कहा, "खालसा जी! डेरे में जो सिक्ख हैं उनको आज्ञा सुना दो कि बंदूक का निशाना परखने के लिए एक सिक्ख की जरूरत है। एक सिक्ख चाहिए जो जान देने के लिए आए। काम केवल एक बंदूक का निशाना परखना है।" यह हुक्म गुरु जी के सिक्खों में पहुंचा, उनमें दो सगे भाई भी थे। दोनों दसतार सजा रहे थे। सुनते ही भागते चले आए। एक ने आधी दसतार सजाई हुई थी, आधी हाथ में थी; दूसरे ने अभी सजानी शुरू की थी। गुरु जी के पास पहुंचते ही दोनों तकरार करने लगे। एक कहने लगा, "जान कुर्बान करना मेरा अधिकार है।" दूसरा कहने लगा, "मेरा अधिकार है।" गुरु जी बोले, "झगड़ते क्यों हो? हमने एक को बुलाया था! दो क्यों आ गए?" एक ने हाथ जोड़ कर कहा, "सच्चे पातशाह! यह मेरा वीर (भाई) मेरे से अधिक उद्यमी, नाम-सिमरन में परिपक्व और बहादुर है। मैं चाहता हूं कि इस समय मैं आपके काम आऊं और यह वीर किसी और कठिन समय आपके काम आए।"

यह सुनते ही भाई डल्ला आश्चर्यचकित हो गया, पलकें झुक गईं, दैव कद योद्धे के नयनों में से अश्रु बहने लगे। गुरु जी के बाकी सिक्ख भी इन दो बहादुर जवानों की *"सिरु धरि तली गली मेरी आउ"* की भावना देखकर गदगद हो गए। भाई डल्ला सोचने लगा, "ये मानव हैं या विदेह आत्माएं? सूरमे हैं या वीतराग योगी? दोनों कैसे निशाना परखने को जान न्यौछावर करने के लिए तैयार हैं!"

गुरु जी ने दोनों खड़े सिक्खों की तरफ निशाना करके बंदूक चलाने से पूर्व एक दम बंदूक का मुंह ऊपर की ओर कर दिया, जिससे गोली किसी को नहीं लगी।

गुरु जी बोले, "भाई डल्लिआ! उदास न हो। वीरता केवल तन से नहीं मन और आत्मा

से पनपती और फूटती है।" भाई डल्ला को अनुभूति हुई कि गुरु जी के संसर्ग में रहते हुए, नाम-सिमरन करते हुए, अमृत-पान कर उनके द्वारा सुसज्जित खालसा सचमुच संत-सिपाही बन गया है। यही देश-कौम की रक्षा के लिए जान न्यौछावर कर सकता है और गुरु जी के संकेत पर बंदूक का निशाना बनना भी अपना अहोभाग्य समझता है। गुरु जी ने कहा, "भाई डल्लिआ! तुम्हारे जवान भले ही शारीरिक रूप से तगड़े हैं परन्तु इनमें अभी मानसिक और आत्मिक बल के संचार की आवश्यकता है, जो कि अमृत-पान और नाम-सिमरन के द्वारा ही संभव हो सकेगा।"





दुखी जी की कविता 'महिला'

इक टीस-सी दिल में उठती है,
इक दर्द जिगर में होता है।
हम चुपके-चुपके उठते हैं,
जब सारा आलम सोता है।

मैं दुखी जी के 'दुखी' शब्द का अनुभव कर सकता हूं। 'गुरमति ज्ञान' जुलाई २००९ में उनके द्वारा लिखित कविता 'महिला' के आधार पर उन्होंने इस प्रभावशाली शिक्षाप्रद कविता में अपने मन की टीस या दुख को उजागर किया है। परमात्मा ऐसे कवियों के विचारों और लेखनी में और ताकत दे। मुझे यह कविता बहुत पसंद आई।

-हरिचंद स्नेही,
२१९०/१२/१, सोनीपत (हरियाणा)

बहुमूल्य पत्रिका

पत्रिका का वर्ष २, अंक ११ प्राप्त हुआ। पाकर अति प्रसन्नता हुई। 'गुरमति ज्ञान' हिन्दी में प्रकाशित होने के कारण सभी हिन्दी-भाषी व्यक्ति इसे पढ़कर, सिक्ख गुरुओं की पवित्र बाणी को अपने जीवन में उतार कर अपना मार्ग-प्रशस्त कर सकेंगे। हिन्दी में प्रकाशित करने के लिए मैं 'गुरमति ज्ञान' के संपादक मंडल व धर्म प्रचार कमेटी का हृदय से आभार व्यक्त करता हूं।

-अमित कुमार शर्मा
मो. लादिया गेट, बिसारती पाड़ा,
अलवर।



आवश्यक सूचना

पाठकों द्वारा अक्सर मांग की जाती है कि 'गुरमति ज्ञान' में दस गुरु साहिबान के रंगीन चित्र प्रकाशित किए जाएं तथा साथ उनकी जीवनी भी प्रकाशित की जाए। प्रिय पाठकों की जानकारी के लिए लिखा जाता है कि 'गुरमति' में शबद-गुरु की मान्यता है न कि मूर्ति, तस्वीर आदि की। 'गुरमति ज्ञान' की नीतियों के अनुसार गुरु साहिबान के चित्र प्रकाशित नहीं किए जा सकते। अलग-अलग अंकों में अलग-अलग गुरु साहिबान से सम्बंधित उनकी जीवनी तथा आलेख प्रकाशित किए जाते हैं। इसके अलावा सिक्ख धर्म के बलिदानी वीर पुरुषों के चित्र तथा आलेख भी समय-समय पर प्रकाशित होते रहते हैं। -संपादक।

दशमेश पिता के ५२ दरबारी कवि—२४

गुणवान कवि गुणीआ

*-डॉ. राजेंद्र सिंघ 'साहिल'**

दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के विद्या-दरबार में एक नाम कवि गुणीआ का भी मिलता है। ग्रंथ 'सौ साखी' के अनुसार गुणीआ दशमेश पिता का दरबारी कवि था। भाई कान्ह सिंघ नाभा कृत 'महान कोश' एवं 'खालसा संदर्भ कोश' में दी गई दशमेश के बावन दरबारी कवियों की सूची में कवि गुणीआ का नाम सम्मिलित है।

कुछ पुस्तकों में कवि गुणीआ को 'गुरदास गुणी' कहा गया है। भाषा विभाग, पंजाब (पटियाला) द्वारा नव-प्रकाशित 'पंजाब कोश' में भी इनका गुरदास गुणी के नाम से इंदराज किया गया है। इस कारण कुछ विद्वानों ने इन्हें कवि गुरदास सिंघ समझ लिया है और अपनी पुस्तकों में इनकी रचनाओं को कवि गुरदास सिंघ की रचनाएं बताया है, परंतु वास्तव में कवि गुरदास सिंघ दशमेश पिता के एक अन्य दरबारी कवि हैं जिनकी रचनाएं हैं--'वार पातशाही दसवीं की', 'बारामाह श्री रामचंद्र जी का' और 'पर्याय श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के'। दूसरी ओर कवि गुणीआ की दो रचनाएं मिलती हैं--'साखी हीरा घाट दक्खन की' और 'कथा हीर-रांझन की'।

कवि गुणीआ की दूसरी रचना 'कथा हीर-रांझन की' में समय का उल्लेख है। यह रचना सन् १७०६ ई में लिखी गई थी। इस काल में गुणीआ लाहौर दरबार में सरकारी मुंशी के ओहदे पर काम कर रहे थे। इससे यही प्रतीत होता है कि सन् १७०४ ई में दशमेश के अनंदपुर साहिब से चले जाने के बाद कवि गुणीआ लाहौर आ गये होंगे और इन्होंने 'कथा हीर-रांझन की' की रचना यहीं की होगी। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि कवि गुणीआ का जीवन-काल संभवत: १६६० से १७१०-२० ई के मध्य रहा होगा। कवि गुणीआ ने दशमेश पिता के दरबार में रहते हुए जिस कृति की रचना की वह है--'साखी हीरा घाट दक्खन की'। यह एक छोटे-से आकार की कृति है जिसमें श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के वैराग्यपूर्ण व्यक्तित्व का महिमा-गान किया गया है।

हीरा-घाट का प्रसंग कुछ इस प्रकार है— औरंगजेब का पुत्र मुगल सम्राट बहादुरशाह गुरु साहिब के व्यक्तित्व से बहुत प्रभावित था। एक बार अहमद नगर से गोलकुंडा जाते हुए बहादुर शाह नांदेड़ पहुंचा तो दशमेश पातशाह के दर्शन करने के लिए आया। गुरु जी उस समय गोदावरी नदी के तट पर विराजमान थे। बादशाह ने दर्शन किये और एक अमूल्य हीरा गुरु साहिब को अर्पित किया। गुरु जी ने हीरा उठाया और गोदावरी में फेंक दिया। यह देखकर बहादुरशाह ने नाराजगी प्रकट की तो गुरु पाताशाह ने फरमाया कि हमारा खजाना दरिया में ही है। जब बहादुरशाह ने दरिया में झांका तो तल में पत्थरों की जगह हीरे, पन्ने, मोती, माणिक, नीलम, पुखराज नजर आये। बादशाह बहादुरशाह ने गुरु जी के चरण पकड़ कर क्षमा-याचना की।

कवि गुणीआ ने इस प्रसंग को बड़े ही भाव एवं भक्तिपूर्ण ढंग से अपनी रचना 'साखी हीरा घाट दक्खन की' में प्रस्तुत किया है। इस प्रकार अपने नाम के ही अनुरूप गुणों से विभूषित कवि गुणीआ दशमेश पातशाह के गुणों का बखान करके सदैव के लिए अमर हो गया।



**१/३३८, 'स्वप्नलोक', दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना)-१४११०१*

कविता

पुत्र-रत्न

-स. कुलदीप सिंघ 'सोनी'*

महाराजा रणजीत सिंघ का सिपहसालार वो,
योद्धा बहुत प्रचण्ड।
कुशल नेतृत्व और रण-कौशल से,
कई जीतीं उसने जंग।
दुश्मनों को पछाड़ कर, खदेड़ा देश से बाहर।
जुझारूपन की अपनी क्षमता से,
शत्रुओं के कतर डाले 'पर'।
अफगानी सीमा पर उसने, लहराया केसरी झंडा।
किया ऐलान--"इधर न देखे,
कोई भी बाहरी बंदा।"
हरी सिंघ की इसी "ललकार" पर,
बानो गयी थी रीझ।
साथ अपनों का छोड़कर, आ पहुंची उसके बीच।
कुछ लज्जा, आग्रह से बोली,
"तुम मुझको लो अपना।
तुम्हें मन से पति मान चुकी हूं,
तुम कर लो मुझसे निकाह।"
ताकता रह गया हरी सिंघ नलवा,
सुन उस युवती की बात।
फिर बोला, "ये सम्भव नहीं,
अपने मन से निकाल दो यह बात।"
युवती आई थी ठान कर, बोली:
"यह तुम्हारी कौम का नहीं दस्तूर।
शरणागत की आरजू तुम लोग,
पूरी करते हो जरूर।"
सुनकर उसके तर्क को, ठिठका सिपहसालार।
"पर मेरा मन और धर्म भी,
इसे नहीं करेगा स्वीकार।
ऐसी ओछी सोच भी, बना देती है गुनहगार।
हाथ जोड़कर विनती करूं,
तुम्हें सुमति दे परवरदिगार।"
हल्के पड़ते अपने पक्ष से,
वो जरा न हुई उदास।
निकाला तरकिश से नया तीर,
दृढ़ कर अपना विश्वास।
"इस घर में हर किसी की, पूरी होती है आस।
इस दर से क्या कोई कभी, होकर जाता निराश?"
आई बात जब 'गुरु पंथ' पर,
सेनापति हो गया गम्भीर।
"क्यों मुझसे विवाह को,
तुम हो रही इतनी अधीर?
सुंदर हो, अच्छे घर की हो,
क्यों इस बुजुर्ग पर करती हो जुल्म।
उम्र में तुम मेरी पुत्री समान हो,
चीज़ है कोई शर्म।
तुम खुशबू हो, मैं खुश्क हवा,
तुम चांद समान, मैं जला तवा।
तुम गुलाब, मैं कांटों की बेल,
तुम्हारा-मेरा, नहीं कोई मेल।"
तब बोली वो करके यत्न,
"चाहिए मुझे एक पुत्र-रत्न।
तुम्हारे ही जैसा बांका शूरवीर,
जो देश की लिखे नई तकदीर।"
"विवाह से क्या, वैसा ही होगा,
जैसा तुम रही हो सोच?
यदि इससे उल्टा कुछ हो गया,
तब किसको तुम दोगी दोष?
हां एक उपाय और भी है
यदि मुझपे हो तुमको विश्वास।"
बानो ने तुरन्त हामी भर दी,

**१०७-बी, सिंगार नगर, लखनऊ-२२६००५, मो: ९९३५५-६३२३३*

हरी सिंघ ने बुलाया, अपना दास।
एक दुशाला हाथ में, लेकर लौटा वो दास।
डाल दुशाला गले में,
प्रभु-चरणों में की अरदास।
फिर छूकर बानो के चरण,
रख दिया उन पर शीश।
"सच तेरे सपने कर सकूं
हे मां! मुझे दो आशीष।
अपने जैसा पुत्र दे पाऊं,
इसका नहीं कर सकता इकरार।
मुझे ही अपना पुत्र बनाकर,
मां करो मुझ पर उपकार।"





पत्राचार कोर्स के प्रथम वर्ष की मेरिट में आने वाले विद्यार्थियों को सम्मानित करने का निर्णय

अमृतसर : ४ जुलाई। डॉ. जसबीर सिंघ साबर, निदेशक, सिख धर्म अध्ययन पत्राचार कोर्स ने बताया कि शिरोमणि गु: प्र: कमेटी की धर्म प्रचार कमेटी द्वारा अध्यक्ष जत्थेदार अवतार सिंघ ने सिख धर्म की प्रारंभिक जानकारी घर-घर तक पहुंचाने के लिए शुरू किया गया द्वि-वर्षीय पत्राचार कोर्स, जो २००७ में शुरू किया गया था, उसमें पंजाब के अलावा समूह भारत तथा विदेश के स्कूलों/कालेजों के विद्यार्थियों के अलावा शिरोमणि कमेटी के सदस्य साहिबान, प्रोफेसर, वकील, बैंक मैनेजर, व्यापारी आदि जो १८ से ९५ वर्ष की आयु के हैं, ने दाखिला प्राप्त किया था। इस कोर्स के प्रथम वर्ष के निकाले गए परिणाम में बाबा आइआ सिंघ रिआड़की कालेज, तुगलवाला (गुरदासपुर) की छात्रा सुखजीत कौर ने ४०० में से ३५१ अंक प्राप्त करके प्रथम स्थान हासिल किया है। दूसरा स्थान गुरु नानक देव यूनीवर्सिटी, अमृतसर की जसविंदर कौर ने ३४४ अंक प्राप्त करके किया। तृतीय स्थान भी गुरु नानक देव यूनीवर्सिटी, अमृतसर के ही रणजीत सिंघ ने ३४३ अंक प्राप्त करके किया। पत्राचार की इस परीक्षा में से ९५ प्रतिशत विद्यार्थी ७० से ८० प्रतिशत अंक प्राप्त करके उत्तीर्ण हुए। डॉ. साबर ने बताया कि प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान हासिल करने वाले विद्यार्थियों को क्रमशः ७१००, ५१०० तथा ३१०० रुपए नकद इनाम तथा मेरिट में आने वाले पहले २० विद्यार्थियों, जिन्होंने कम से कम ३२७ अंक प्राप्त किए हैं, को ११००-११०० रुपए देकर सम्मानित किया जाएगा। डॉ. साबर ने बताया कि यह कोर्स पंजाबी तथा हिंदी में करवाया जा रहा है। दाखिला लेने सम्बंधी तथा अन्य प्रकार की जानकारी के लिए डायरेक्टोरेट, सिख धर्म अध्ययन पत्राचार कोर्स, शिरोमणि गु: प्र: कमेटी, श्री अमृतसर के नाम पत्र लिख कर या दूरभाष नंबर ०१८३-२५५३९६२ पर सम्पर्क किया जा सकता है।



हम धन्यवाद करते हैं गुरमति प्रचार सभा, बरनपुर, जिला बर्धवान (प. बंगाल) का जिन्होंने १५ परिवारों को 'गुरमति ज्ञान' का वार्षिक सदस्य बनाया। हम अकाल पुरख वाहिगुरु से गुरमति प्रचार सभा की चढ़दी कला के लिए अरदास करते हैं।

-संपादक।



सचखंड श्री हरिमंदर साहिब जैसा और कोई गुरुद्वारा नहीं बनेगा : सिंघ साहिब

अमृतसर : २० जून। पंजाब में बरनाला-संगरूर रोड पर नवनिर्मित गुरुद्वारा, जिसे सचखंड श्री हरिमंदर साहिब जैसा आकार, रूप तथा नाम दिए जाने की कोशिश की गई है, के सम्बंध में श्री अकाल तख्त साहिब के जत्थेदार सिंघ साहिब ज्ञानी गुरबचन सिंघ के बुलावे पर विभिन्न धार्मिक सिक्ख जत्थेबंदियों के मुखियों, प्रतिनिधियों, शिरोमणि कमेटी के सदस्यों तथा सिक्ख विद्वानों की स्थानीय तेजा सिंघ समुंद्री हाल में पांच सिंघ साहिबान की सरपरस्ती में एक विशेष एकत्रता हुई। एकत्रता को सम्बोधित करते हुए जत्थेदार ज्ञानी गुरबचन सिंघ ने कहा कि सचखंड श्री हरिमंदर साहिब सिक्ख जगत की आन तथा शान का प्रतीक है और श्री हरिमंदर साहिब सिक्ख के लिए अपनी जान से भी प्यारा है। उन्होंने कहा कि किसी के भी द्वारा सचखंड श्री हरिमंदर साहिब की हू-ब-हू बनावट वाला गुरुद्वारा बनाए जाने को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। इस एकत्रता में सभी जत्थेबंदियों के मुखियों ने इस विवादित गुरुद्वारे की इमारत में परिवर्तन किए जाने के सुझाव दिए। सभी ने सहमति जताई कि इस सम्बंध में श्री अकाल तख्त साहिब से एक हुकमनामा जारी करके वहां निर्मित सरोवर को पाट देने, हरि की पउड़ी बंद किए जाने, चारों तरफ की गुंबदियों को तोड़ कर केवल एक गुंबद तैयार करने, इमारत के चारों ओर वरांडा तैयार करने तथा गुरुद्वारा साहिब का नाम गुरुद्वारा श्री गुरु सिंघ सभा रखे जाने का आदेश देना चाहिए तथा साथ में वहां के प्रबंधक इस सम्बंध में पश्चाताप भी करें। शिरोमणि कमेटी के अध्यक्ष जत्थेदार अवतार सिंघ ने समूह जत्थेबंदियों का धन्यवाद करते हुए कहा कि श्री अकाल तख्त साहिब से जारी हुकमनामे पर पूरा अमल किया तथा करवाया जाएगा।

दर्शनी ड्योढ़ी की सेवा-संभाल का कार्य आरंभ

अमृतसर : १ जुलाई। सिक्ख कौम के अनमोल विरसे को विरासत के रूप में हू-ब-हू संभालने के उद्देश्य से सिक्ख जगत की धार्मिक भावनाओं के साथ जुड़ी हुई तथा गुरु साहिबान द्वारा निर्मित श्री हरिमंदर साहिब की दर्शनी ड्योढ़ी की ऐतिहासिक महत्ता को मुख्य रखते हुए इसकी हू-ब-हू संभाल का कार्य अरदास के पश्चात पांच सिंघ साहिबान द्वारा आरंभ किया गया। इस अवसर पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष जत्थेदार अवतार सिंघ ने बताया कि इस रख-रखाव का मुख्य उद्देश्य कंज़र्वेशन विभाग के विशेषज्ञों के सहयोग से ऐतिहासिक दर्शनी ड्योढ़ी की प्राचीन इमारत की भवन-निर्माण कला की शान को बरकरार रखना है। इस इमारत की पहले की गई मुरम्मत के समय उपयोग की गई सामग्री, जो इस ढांचे से मेल नहीं खाती, को चूने के पलस्तर आदि सामग्री से बदला जाएगा, जिससे इस इमारत के ढांचे की मियाद में बढ़ोत्तरी होगी। दर्शनी ड्योढ़ी की छत को चूने से पुन: पलस्तर किया जाएगा। वर्तमान पाइपों को वर्षा के पानी के लिए विशेष रूप से बनाई गई पाइपों में बदला जाएगा। छज्जों तथा ब्रेकटों का प्राचीन ढंग में नवीनीकरण किया जाएगा। ड्योढ़ी की खिड़कियों को प्राचीन डिज़ाइन के अनुसार दोबारा बनाया जाएगा। चूने/पेंट की परतों को सावधानी से उतार कर असल सतह पर बनी पेंटिंगों तथा संगमरमर को चूने से पलस्तर कर पहली बनावट को पुन: सामने लाया जाएगा। बाहरी तरफ की दीवार पर बनी पेंटिंगों को साफ करके अंतर्राष्ट्रीय मापदंडों के

अनुसार उनकी संभाल की जाएगी। संभाल का यह कार्य 'संरक्षण हेरीटेज़ कंसल्टेंट प्रा. लि. दिल्ली' को दिया गया है। इस पर ५५ लाख रुपए खर्च आने का अनुमान है तथा यह कार्य छः महीनों में मुकम्मल हो जाएगा।

जत्थेदार अवतार सिंघ के कहा कि गुरुद्वारा बाबा अटल राय जी एवं बुंगा रामगढ़िया के रख-रखाव का कार्य विशेषज्ञों की देख-रेख में जारी है। शीघ्र ही फतेहगढ़ साहिब में दीवान टोडर मल की हवेली तथा बाबा बंदा सिंघ बहादर से सम्बंधित ऐतिहासिक थेह को भी संभालने का कार्य आरंभ किया जा रहा है।

अरदास के पश्चात कार्य की आरंभता श्री अकाल तख्त साहिब के जत्थेदार सिंघ साहिब ज्ञानी गुरबचन सिंघ, श्री हरिमंदर साहिब के कार्यकारी मुख्य ग्रंथी सिंघ साहिब ज्ञानी जसविंदर सिंघ, जत्थेदार अवतार सिंघ, ज्ञानी मल्ल सिंघ, ज्ञानी मान सिंघ, ज्ञानी जसवंत सिंघ तथा ज्ञानी सुखजिंदर सिंघ ने की। इस अवसर पर शिरोमणि कमेटी के सचिव स. दलमेघ सिंघ और जिला अमृतसर के उपायुक्त स. काहन सिंघ के अलावा श्री हरिमंदर साहिब के प्रबंधक स. बलबीर सिंघ तथा अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

धार्मिक परीक्षा २००८ का परिणाम वेबसाईट पर

अमृतसर : १८ जून। धर्म प्रचार कमेटी (शिरोमणि गु: प्र: कमेटी) द्वारा स्कूलों/कालेजों में पढ़ रहे विद्यार्थियों को गुरमति के साथ जोड़ने के लिए गुरबाणी, सिक्ख इतिहास तथा सिक्ख रहित मर्यादा सम्बंधी जानकारी दिए जाने के उद्देश्य से धार्मिक परीक्षा नवंबर २००८ का परिणाम शिरोमणि गु: प्र: कमेटी की वेबसाईट www.sgpc.net पर डाल दिया गया है। परीक्षा में भाग ले चुके विद्यार्थी तथा शिक्षण संस्थाओं के संचालक/प्रधानाचार्य वेबसाईट पर परिणाम की विस्तृत जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। यह जानकारी देते हुए शिरोमणि गु: प्र: कमेटी के सचिव स. दलमेघ सिंघ ने बताया कि इस धार्मिक परीक्षा के माध्यम से जहां विद्यार्थियों को गुरबाणी, सिक्ख इतिहास तथा सिक्ख रहित मर्यादा सम्बंधी जानकारी दी जाती है वहां और उत्साहित करने के लिए अच्छे अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को वजीफे के रूप में यकमुश्त नकद राशि भी दी जाती है। उन्होंने बताया कि नवंबर २००८ की परीक्षा के पहले, दूसरे, तीसरे तथा चौथे दर्जे में अव्वल आने वाले क्रमशः २५०, २५०, २०० तथा ५० विद्यार्थियों को क्रमशः प्रति विद्यार्थी १२००, १८००, २४०० तथा ४००० रुपए वार्षिक वजीफे (यकमुश्त) दिए जाएंगे। वर्ष २००९ में होने वाली धार्मिक परीक्षा के दाखिले के सम्बंध में जानकारी देते हुए उन्होंने बताया कि पहले दर्जे के अंतर्गत कक्षा ८ तक, दूसरे दर्जे में कक्षा ९ से कक्षा १२ तक, तीसरे दर्जे में स्नातक स्तर तथा चौथे दर्जे में परा-स्नातक स्तर के विद्यार्थी आते हैं। देश के किसी भी स्कूल में विद्या प्राप्त कर रहे विद्यार्थी इस परीक्षा में भाग ले सकते हैं। परीक्षा के पहले, दूसरे, तीसरे और चौथे दर्जे का दाखिला शुल्क क्रमशः ५, १०, १५ तथा २० रुपए है। दाखिला भरने के लिए स्कूलों/कालेजों के प्रधानाचार्य परीक्षा का सिलेबस तथा दाखिला फार्म धर्म प्रचार कमेटी के 'धार्मिक परीक्षा विभाग' से दस्ती या डाक द्वारा प्राप्त कर सकते हैं। अन्य किसी भी प्रकार की जानकारी दूरभाष नंबर ०१८३-२५५३९५२, ५६, ५७, ५८, ५९, ६०; एक्सटेंशन ३०५ से प्राप्त की जा सकती है।



प्रिंटर व पब्लिशर स. दलमेघ सिंघ ने गोल्डन आफसेट प्रेस, गुरुद्वारा रामसर साहिब, अमृतसर से छपवा कर मालिक शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के लिए कार्यालय, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, अमृतसर से प्रकाशित किया।संपादक स. सिमरजीत सिंघ। प्रकाशित करने की तिथि : ०१-०८-२००९